VIDIT
Publication

2026

उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा चयन आयोग

# TGT & PGT

प्रशिक्षित स्नातक (TGT) एवं प्रवक्ता (PGT)

# सामान्य ज्ञान

नवीनतम पाठ्यक्रम पर आधारित

**पाठ्यक्रम**

इकाई 1 : उत्तर प्रदेश एवं राष्ट्रीय समसामयिकी, चर्चित व्यक्तित्व एवं खेल

इकाई 2 : भारत का इतिहास ,भारत की राजव्यवस्था ,भारत की अर्थव्यवस्था भारत का भूगोल

इकाई 3 : सामान्य ज्ञान ,सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी

विस्तृत विषय-वस्तु | परीक्षोपयोगी तथ्य | विश्लेषणात्मक जानकारी

VIDIT Publication,Prayagraj
8858920081

## पुस्तक की विशेषता

इस पुस्तक की महत्वपूर्ण खासियत ये है कि इसमें सभी परीक्षापयोगी तथ्यों को अभ्यर्थी के सुविधानुसार तैयार किया गया है जिससे अभ्यर्थी के पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के साथ समय की बचत भी की जा सके। इसे अधिक-से-अधिक लाभप्रद एवं परीक्षा उपयोगी बनाने के लिए प्रत्येक खण्ड में विस्तृत विषय-वस्तु एवं विश्लेषणात्मक जानकारी का समावेश इस प्रकार किया गया है कि अभ्यर्थियों को परीक्षा में कोई कठिनाई न हो। इस पुस्तक को इस उद्देश्य से तैयार किया गया है जिससे आप सभी अभ्यर्थी बड़े पैमाने पर उत्तीर्ण होकर अपने भविष्य को एक नया मुकाम दे सकें।

## सामान्य ज्ञान प्रशिक्षित स्नातक (TGT) एवं प्रवक्ता (PGT)

**इकाई 1: समसामयिकीः-**

(i) राज्य, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की सामयिक घटनाएँ

(ii) चर्चित व्यक्तित्व

(iii) खेल

**इकाई 2: भारतीय इतिहास, भारतीय राजव्यवस्था, भारतीय अर्थव्यवस्था, भारत का भूगोल:-**

(i) भारतीय इतिहास एवं भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन

(ii) भारतीय संविधान एवं राज व्यवस्था, शैक्षिक व्यवस्था से संबंधित विधिक एवं संवैधानिक विकास

(iii) भारतीय अर्थव्यवस्था

(iv) भारत का सामान्य भूगोल एवं जनसंख्या

**इकाई 3: सामान्य विज्ञान, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी :-**

(i) सामान्य विज्ञान द्दसामयिक संदर्भ में प्रौद्योगिकी एवं पर्यावरण

(ii) मानव स्वास्थ्य एवं स्वच्छता विटामिन, खनिज, रोग, अल्पताजन्य रोग, हार्मोन्स, एन्जाइम

(iii) कम्प्यूटर और इन्टरनेट शब्दावली

(iv) आई० सी० टी० के अनुप्रयोग

(v) शैक्षिक प्रौद्योगिकी में विकास

## पुस्तक के बारे में

प्रिय अभ्यर्थियों, प्रस्तुत पुस्तक **'विदित पब्लिकेशन (VIDIT PUBLICATION)'** द्वारा **"उत्तर प्रदेश टीजीटी/पीजीटी (UP TGT/PGT)'** को संपूर्ण तरीके से ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। यह पुस्तक उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा चयन आयोग (UPESSC) द्वारा आयोजित होने वाले टीजीटी एवं पीजीटी परीक्षा के नवीन पाठ्यक्रम और प्रकृति को ध्यान में रखकर तैयार की गयी है। इस पुस्तक में उत्तर प्रदेश राज्य, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय समसामयिकी सहित सामान्य अध्ययन के समस्त पाठ्यक्रम और अवधारणाओं का संकलन किया गया है। परीक्षार्थियों की सहायता के लिए इसमें अद्यतन सरकारी आंकड़ों (Public Data) सहित आयोग के मानक स्तर का विशेष ध्यान रखा गया है एवं आवश्यकतानुसार मैप का उपयोग किया गया है। इसके साथ ही इस पुस्तक में प्रत्येक इकाई के साथ "अभ्यास प्रश्न" को भी सम्मिलित किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक को त्रुटिरहित और परीक्षा स्तरीय बनाने में जिन विशेषज्ञों तथा सहकर्मियों का हमें सहयोग मिला, उनके प्रति हम कृतज्ञता प्रकट करते हैं। निरंतर सतर्क प्रयासों के बावजूद पुस्तक में मानवीय भूलवश कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है। अतः आप सुधी पाठकों व अभ्यर्थियों के रचनात्मक सुझाव सदैव आमंत्रित हैं।

**आदित्य त्रिपाठी**

# 'अनुक्रमणिका'


| खण्ड (अ) | भारतीय इतिहास, भारतीय राजव्यवस्था, भारतीय अर्थव्यवस्था, भारत का भूगोल | |
|---|---|---|
| 1.1 | भारतीय इतिहास एवं भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन | 1-46 |
| 1.2 | भारतीय संविधान एवं राज व्यवस्था, शैक्षिक व्यवस्था से संबंधित विधिक एवं संवैधानिक विकास | 47-72 |
| 1.3 | भारतीय अर्थव्यवस्था | 73-102 |
| 1.4 | भारत का सामान्य भूगोल एवं जनसंख्या | 103-125 |
| | अभ्यास प्रश्न | 126-128 |
| खण्ड (ब) | सामान्य विज्ञान, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी | |
| 2.1 | सामान्य विज्ञान / सामयिक संदर्भ में प्रौद्योगिकी एवं पर्यावरण | 129-132 |
| 2.2 | मानव स्वास्थ्य एवं स्वच्छता विटामिन, खनिज, रोग, अल्पताजन्य रोग, हार्मोन्स, एन्जाइम | 133-159 |
| 2.3 | कम्प्यूटर और इन्टरनेट शब्दावली | 160-180 |
| 2.4 | सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग | 181-188 |
| 2.5 | शैक्षिक प्रौद्योगिकी में विकास | 189-194 |
| | अभ्यास प्रश्न | 195-197 |
| खण्ड (स) | समसामयिकी | |
| 3.1 | राज्य, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की सामयिक घटनाएँ | 198-227 |
| 3.2 | चर्चित व्यक्तित्व | 228-230 |
| 3.3 | खेल | 231-238 |
| | अभ्यास प्रश्न | 239-241 |

# (अ) खण्ड

# भारतीय इतिहास, भारतीय राजव्यवस्था, भारतीय अर्थव्यवस्था, भारत का भूगोल

## 1.1 भारतीय इतिहास एवं भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन

**हड़प्पा संस्कृति**

- हड़प्पा सभ्यता विश्व की प्राचीनतम और उन्नत शहरी सभ्यताओं में से एक थी, जिसे सिंधु घाटी सभ्यता भी कहा जाता है, जिसका विस्तार भारत एवं पाकिस्तान दोनों में था।
- इसका परिपक्व काल लगभग 2600 ई.पू. से 1900 ई.पू. तक माना जाता है और बाद में इसका पतन हो गया।
- वर्ष 1921 में तत्कालीन भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के अध्यक्ष जॉन मार्शल के निर्देशन में हड़प्पा स्थल की जानकारी प्राप्त हुई। इस दौरान पंजाब (वर्तमान पाकिस्तान) के मोंटगोमरी जिले में रावी नदी के तट पर हड़प्पा की खोज की गई थी।
- गार्डन चाइल्ड ने सिंधु सभ्यता को 'प्रथम नगरीय क्रांति' कहा।
- इस सभ्यता का विस्तार पश्चिम में सुत्कागेन-दोर से लेकर पूर्व में आलमगीरपुर (उप्र) तक तथा उत्तर में मांडा (जम्मू) से दक्षिण में दैमाबाद (महाराष्ट्र) तक फैला हुआ थ।
- यह क्षेत्र त्रिभुजाकार है जिसका क्षेत्रफल लगभग 12,99,600 वर्ग किलोमीटर था।
- मोहनजोदड़ो सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल है तथा राखीगढ़ी भारत में सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल है।
- पाकिस्तान में स्थित प्रमुख स्थल- हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, सुत्कागेंडोर, चन्हूदड़ों, कोटदीजी

**भारत में स्थित हड़प्पा/सिंधु घाटी सभ्यता के प्रमुख स्थल:**

| राज्य | संबंधित स्थल |
|---|---|
| राजस्थान | कालीबंगा |
| गुजरात | धौलावीरा, लोथल, रंगपुर, सुरकोटदा, देसलपुर, कुंतासी |
| हरियाणा | राखीगढ़ी, बनावली, मीताथल, कुणाल |
| पंजाब | रोपड़, संघोल |
| उत्तर प्रदेश | आलमगीरपुर |
| जम्मू-कश्मीर | मांडा |
| महाराष्ट्र | दैमाबाद |

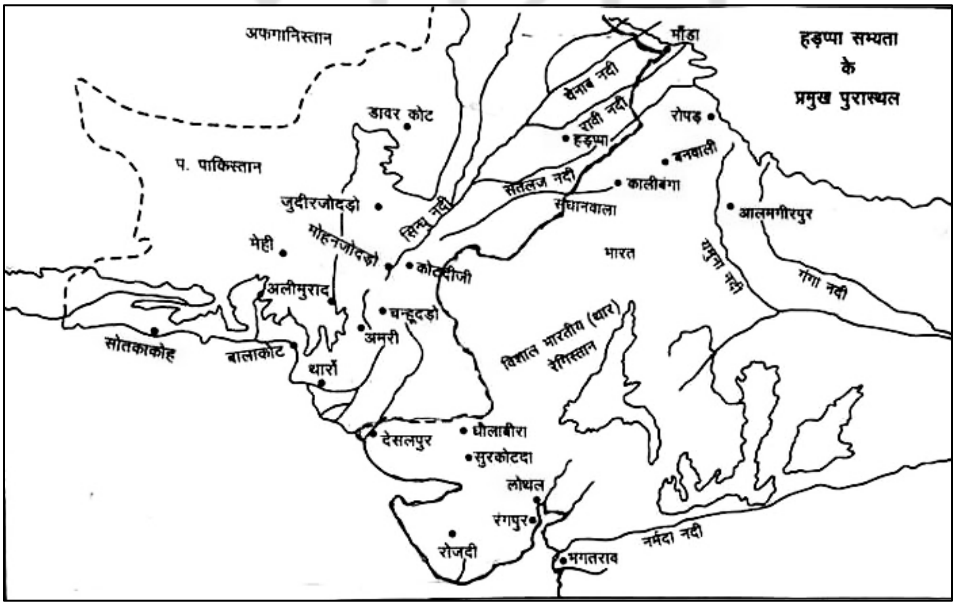

**प्रमुख स्थल/खोजकर्ता/नदी/प्राप्त सामग्री**

| प्रमुख स्थल | खोजकर्ता | नदी | प्राप्त सामग्री |
|---|---|---|---|
| हड़प्पा | दयाराम साहनी | रावी नदी | मुहरें, अन्नागार, शंख से निर्मित बैल, 16 ताम्र भट्टियां, पीतल की इक्का गाड़ी, कांसे का दर्पण |
| मोहनजोदड़ो | राखलदास बनर्जी | सिंधु नदी | वृहद स्नानागार, कांसे की नृत्य करती लड़की की मूर्ति, सूती कपड़ा, पुजारी राजाओं की मूर्ति, पशुपति मुहर, तांबे की हेयर पिन, सूती कपड़ा |
| धौलावीरा | आर. एस. बिष्ट | घग्घर नदी | तीन भागों में विभाजित एकमात्र शहर, जल प्रबंधन प्रणाली, खेल स्टेडियम |
| कालीबंगा | अमलानंद घोष | घग्घर नदी | अग्निकुंड, जुते हुए खेत के प्रमाण, सिलबट्टा, भूकंप के साक्ष्य |
| लोथल | रंगनाथ राव | भोगवा नदी | बंदरगाह , मनके उद्योग, फारस की मुहर, धान एवं बाजरे का साक्ष्य, बाट एवं माप |
| चन्हुदड़ो | एन जी मजूमदार | सिंधु नदी | वक्राकार ईंट, मनका निर्माण, लिपिस्टिक, स्याही की दवात |
| रोपड़ | यज्ञदत्त शर्मा | सतलुज नदी | मानव कंकाल, तांबे की वस्तुएँ |
| राखीगढ़ी | सूरजभान | घग्घर नदी | हाकरा मृदभांड के भंडार |
| बनावली | आर एस बिष्ट | रंगोई नदी | मिट्टी से बने हल के साक्ष्य, धावन पात्र |
| सुत्कागेंडोर | औरेल स्टाइन | दाश्क नदी | किलेबंदी, व्यापारिक केंद्र |
| सुरकोटदा | जगपति जोशी | ---------- | घोड़े की अस्थियां, शॉपिंग कॉम्पलेक्स, तराजू का पलड़ा |

**उत्तर प्रदेश के हड़प्पा स्थल**

| स्थल | जिला | विशेषताएँ / प्राप्त सामग्री |
|---|---|---|
| आलमगीरपुर | मेरठ | हड़प्पा सभ्यता का **सबसे पूर्वी स्थल** |
| हुलास | सहारनपुर | अनाज के दाने, मिट्टी के बर्तन |
| बड़गांव | सहारनपुर | साधारण मिट्टी के बर्तन |
| सिंघोल | पश्चिमी यूपी क्षेत्र | ग्रामीण बस्ती के प्रमाण |

## हड़प्पा सभ्यता की प्रमुख विशेषता

### नगर नियोजन प्रणाली

- इसकी सुव्यवस्थित नगर योजना थी, जिसमें चौड़ी सड़कों, पक्की ईंटों से मकानों का निर्माण और उन्नत जल निकासी प्रणाली का उपयोग किया गया था।
- ऊंचाई वाले भाग को नगर-दुर्ग तथा निचले हिस्से को निचला-नगर कहा गया है।
- सड़के एक-दूसरे को समकोण बनाते हुए काटती थी।
- मोहनजोदड़ो का वृहद स्नानागार इस सभ्यता की उन्नत निर्माण कला और स्वच्छता व्यवस्था का उत्कृष्ट उदाहरण है।

### आर्थिक परिदृश्य

- आर्थिक दृष्टि से यह सभ्यता कृषि और व्यापार पर आधारित थी, जिसमें गेहूं, जौ और कपास की खेती की जाती थी।
- मोहनजोदड़ो, हड़प्पा एवं लोथल से अन्नागार के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- लोथल एवं रंगपुर से चावल की खेती का प्रमाण मिला है।
- सर्वप्रथम कपास पैदा करने का श्रेय सिंधु सभ्यता के लोगों को दिया जाता है।
- सिंधु सभ्यता के लोगों को बैल, गाय, भैंस, बकरी भेड़ इत्यादि के बारे में जानकारी थी। कूबड़ वाला सांड इस सभ्यता का सबसे प्रिय पशु था।

### विदेशी व्यापार

- लोथल एक बंदरगाह नगर था जिसके माध्यम से मेसोपोटामिया से व्यापार होता था।
- मेलुहा (सिंधु क्षेत्र) के साथ व्यापारिक संबंध की जानकारी मिलती है।
- इसके अतिरिक्त धातु-शिल्प, मनका निर्माण, मिट्टी के बर्तन और मूर्तिकला भी अत्यंत विकसित थी।
- इस सभ्यता के लोगों को कांस्य, सोना तांबा की जानकारी थी तथा लोहा के बारे में कोई प्रमाण नहीं मिलता।

**माप तौल**

- इस समय दशमलव पद्धति पर आधारित मापतौल प्रणाली प्रचलित थी।
- सिंधु सभ्यता में प्रयोग किए जाने वाले मुहरों का निर्माण सेलखड़ी से किया जाता था।
- मोहनजोदड़ो से सर्वाधिक मात्रा में मुहरें प्राप्त हुई है। लोथल से फारस की मुहर की प्राप्ति हुई है।

**हड़प्पा स्थल से प्राप्त प्रमुख धातु एवं स्थल**

| प्रमुख धातु | स्थल |
|---|---|
| लाजवर्द | बदख्शां (अफगानिस्तान) |
| तांबा | खेतड़ी (राजस्थान) एवं बलूचिस्तान |
| टिन | अफगानिस्तान एवं ईरान |
| सीसा | अफगानिस्तान एवं ईरान |
| चांदी | राजस्थान की जावर खान |
| शिलाजीत | हिमालय क्षेत्र |

**सामाजिक-धार्मिक जीवन**

- धार्मिक रूप से लोग मातृदेवी, पशुपति तथा वृक्षों की पूजा करते थे और उनकी लिपि चित्रात्मक थी, जिसे अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है।
- इस समय के लोग धरती को उर्वरता की देवी मानकर उनकी पूजा करते थे।
- सिंधु सभ्यता के लोग यज्ञ से परिचित थे एवं पुनर्जन्म में विश्वास करते थे।
- लोथल, बनावली एवं कालीबंगा से अग्निवेदिका का प्रमाण प्राप्त हुआ है।
- सामाजिक जीवन अपेक्षाकृत समानतावादी था और दफनाने की प्रथा से परलोक में विश्वास के संकेत मिलते हैं।
- प्राकृतिक आपदाएँ, नदी मार्ग में परिवर्तन तथा अन्य कारणों के चलते इस महान सभ्यता का पतन हो गया, फिर भी इसकी उन्नत नगर व्यवस्था और वैज्ञानिक दृष्टिकोण आज भी अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं।

**महत्वपूर्ण तथ्य:**

- मोहनजोदड़ो का शाब्दिक अर्थ "मृतकों का टीला" है।
- तौल की इकाई के रूप में 16 के अनुपात का उपयोग किया जाता था।
- सिंधु सभ्यता की लिपि दायीं से बायीं ओर लिखी जाती थी।
- चन्हूदड़ों तथा लोथल में मनके बनाने का कार्य होता था।
- बालाकोट (पाकिस्तान) तथा लोथल सीप उद्योग के लिए जाने जाते थे।
- सुरकोटदा से घोड़े की अस्थियों के अवशेष की प्राप्ति हुई।

**वैदिक संस्कृति**

- वैदिक युग को दो भागों में विभाजित किया गया है - ऋग्वैदिक या पूर्व-वैदिक युग (1500-1000 ईसा पूर्व) और उत्तर-वैदिक युग (1000-600 ईसा पूर्व)।
- वैदिक साहित्य को चार भागों संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद में विभाजित किया गया है।
- वेद भारत का सबसे प्राचीन साहित्य है।
- चार वेद हैं- ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद।
- ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद को वेदत्रयी या त्रयी भी कहा जाता है।

**ऋग्वेद**

- ऋग्वेद सबसे पुराना वेद है तथा इसमें भजनों का संग्रह, स्रोत एवं प्रार्थनाएं तथा ईश्वरीय महिमा का वर्णन है।
- ऋग्वेद के पुरोहितों को 'होतृ' कहा जाता था।
- इसमें 10 मंडल, 1028 सूक्त और 10552 श्लोक (ऋचा) हैं।
- ऋग्वेद के 2 से 7 मंडल सबसे प्राचीन माने जाते हैं।
- गायत्री मंत्र का उल्लेख तीसरे मंडल में किया गया है। इसे विश्वामित्र ने लिखा है। यह भगवान सूर्य एवं सावित्री को समर्पित है।
- नौवां मंडल 'सोम' को समर्पित है।
- 'वर्ण' एवं 'गोत्र' शब्द का सर्वप्रथम वर्णन ऋग्वेद में मिलता है।
- शूद्र शब्द का पहली बार उल्लेख 10वें मंडल (सबसे बड़ा) के पुरुष सूक्त (वैदिक समाज शास्त्र) में किया गया है।
- वैदिक काल में गाय को 'अघन्या' माना जाता था। 'अघन्या' का अर्थ है वध के योग्य नहीं।

**यजुर्वेद**

- इसके अध्ययन करने वाले को 'अध्वर्यु' कहा जाता है।
- इसमें ऋग्वेद के श्लोकों का उपयोग करके विभिन्न अनुष्ठानों और यज्ञों को करने की प्रक्रिया के विवरण के बारे में गद्य में तथा कर्मकांडों का वर्णन किया गया है।
- शतपथ ब्राह्मण एक गद्य ग्रंथ है जिसमें यजुर्वेद से जुड़े वैदिक अनुष्ठानों, इतिहास और पौराणिक कथाओं का वर्णन किया गया है।

**सामवेद**

- भारतीय संगीत शास्त्र प्राचीनतम पुस्तक है।
- इसका संकलन सामवेद पर आधारित है तथा इसके अध्ययन करने वाले को 'उद्गाता' कहा जाता है।
- सामवेद में कुल 1,875 ऋचाएं (मंत्र) हैं।

**अथर्ववेद**

- इसके अध्ययन करता को 'ब्रह्म' कहा जाता है।
- इसमें भारतीय औषधि एवं विज्ञान संबंधी जानकारी शामिल है साथ इसमें रोग तथा उसके निवारण के साधन के रूप में जादू टोना एवं वशीकरण इत्यादि की जानकारी भी उपलब्ध कराई गई है।
- वेद में सभा और समिति को प्रजापति की दो पुत्रियाँ कहा गया है।

**वेद एवं ब्राह्मण ग्रंथ**

| **वेद** | **ब्राह्मण ग्रंथ** |
|---|---|
| ऋग्वेद | ऐतरेय |
| सामवेद | पंचविंश |
| यजुर्वेद | शतपथ, तैत्तिरीय |
| अथर्ववेद | गोपथ |

**वेद, उपवेद तथा उनके रचनाकार**

| **वेद** | **उपवेद** | **उपवेद के रचनाकार** |
|---|---|---|
| ऋग्वेद | आयुर्वेद | धन्वंतरि |
| यजुर्वेद | धनुर्वेद | विश्वामित्र |
| सामवेद | गंधर्ववेद | भरत मुनि |
| अथर्ववेद | स्थापत्यवेद | विश्वकर्मा |

**वैदिक युग में नदियां:**

- सिंधु नदी का उल्लेख सबसे अधिक बार किया गया है (इसके महत्व के कारण इसे 'हिरण्यनी' कहा जाता है)।
- सरस्वती नदी सबसे पवित्र नदी थी जिसे 'मातेतमा' (सभी माताओं में सर्वश्रेष्ठ), 'देवितमा' (सभी देवियों में सर्वश्रेष्ठ) और 'नदीतमा' (सभी नदियों में सर्वश्रेष्ठ) के रूप में जाना जाता था।
- ऋग्वेद में यमुना और गंगा नदी का उल्लेख क्रमशः तीन और एक बार किया गया है।

| **प्राचीन नाम** | **आधुनिक नाम** |
|---|---|
| अस्किनी | चिनाब |
| परुष्णी | रावी |
| विपासा | ब्यास |
| वितस्ता | झेलम |
| कुभा | काबुल |
| सदानीरा | गंडक |
| शतुद्रि | सतलज |
| द्षद्वती | घग्घर |

**धार्मिक स्थिति**

- ऋग्वेद में 'इंद्र' को सबसे शक्तिशाली देवता बताया गया है।
- 'इंद्र' को पुरंदर (किलों का विनाशक) कहा जाता है।
- बृहस्पति को वैदिक देवताओं का पुरोहित माना जाता था।
- अपाला, घोषा, विश्ववारा एवं लोपामुद्रा ऋग्वैदिक काल की प्रमुख ऋषिकाएँ एवं विदुषी स्त्रियाँ थीं।

| **ऋग्वैदिक देवता** | **विशेषता** |
|---|---|
| इंद्र | वर्षा का देवता, युद्ध के देवता, समस्त संसार का स्वामी |
| अग्नि | देवताओं एवं मनुष्यों के बीच मध्यस्थ |
| वरूण | जलनिधि का प्रतिनिधित्व करते थे |
| मरूत | आंधी-तूफान के देवता |
| पूषन | पशुओं के देवता |
| अरण्यानी | जंगल की देवी |
| यम | मृत्यु के देवता |
| अश्विन | चिकित्सा के देवता |
| सोम | वनस्पति के देवता |

**वैदिक कालीन प्रशासन**

- वैदिक काल में प्रशासन की व्यवस्था मुख्यतः जनजातीय एवं राजतंत्रात्मक थी। राजा को राजन् कहा जाता था, जो जन या विश् का प्रमुख होता था।
- प्रशासन की सबसे छोटी इकाई कुल थी, जिसके बाद ग्राम, विश् और जन आते थे।
- राजा की सहायता के लिए सभा, समिति, विदथ और गण जैसी संस्थाएँ कार्य करती थीं।
    - **सभा-** यह वृद्ध एवं अभिजात्य लोगों की संस्था थी जिसे मंत्रीपरिषद कहा जाता था।
    - **समिति-** यह सामान्य जनता की प्रतिनिधि सभा थी इसके सभापति को 'ईशान' कहा जाता था।
    - **विदथ-** यह आर्यों की सबसे प्राचीन संस्था थी।
- यजुर्वेद में राज्य के उच्च पदाधिकारी को 'रत्निन' कहा जाता था, इनकी संख्या 12 थी।

**वैदिक काल में राजा की सहायता के लिए नियुक्त अधिकारी**

| **अधिकारी** | **कार्य** |
|---|---|
| पुरोहित | राजा का प्रमुख सलाहकार होता था। |
| कुलपति | परिवार या कुल का प्रमुख होता था। |
| सेनानी | सेना का प्रमुख होता था। |
| विशपति | 'विश' (जनसमूह/कबीला) का प्रमुख होता था। |
| ग्रामणी | गाँव का प्रमुख होता था। |
| स्पश | गुप्तचर (जासूस) के रूप में कार्य करता था। |
| पुरप | किले या नगर का रक्षक होता था। |

**रत्निन / पदाधिकारी**

| **रत्निन / पदाधिकारी** | **कार्य** |
|---|---|
| राजा | शासन का प्रमुख |
| पुरोहित | राजा का धार्मिक एवं राजनीतिक सलाहकार |
| सेनानी | सेना का प्रमुख |
| महिषी | रानी/पटरानी |
| ग्रामणी | ग्राम का प्रमुख |
| युवराज | राजा का उत्तराधिकारी |
| सूत | सारथी एवं राजकीय घोषक |
| क्षता | राजप्रासाद के रक्षक |

| | |
|---|---|
| संग्रहीता | कोषाध्यक्ष |
| भागदुध | कर एवं राजस्व संग्रह से संबंधित अधिकारी |
| अक्षवाप | पासे के खेल में राजा का सहयोगी |
| पालागल | संदेशवाहक |

**वैदिकयुगीन शब्दावली एवं अर्थ**

| **वैदिक युगीन शब्दावली** | **अर्थ** |
|---|---|
| अघन्या | न मारे जाने योग्य अर्थात गाय |
| उर्वरा | उपजाऊ भूमि |
| लांगल | हल |
| वृक | बैल |
| यव | जौ |
| गोधूम | गेहूँ |
| करीष | गोबर की खाद |
| तंदुल | धान |
| व्रीहि | चावल |
| धन्व | मरूस्थल |
| पणि | व्यापारी |
| तक्षण | बढ़ई |
| वाय/तंतुवाय | जुलाहा |

**उपनिषद**

- उपनिषद साहित्य कोई धार्मिक ग्रंथ नहीं है, बल्कि यह सभी समय और सभी के लिए एक दार्शनिक विचारों का प्रतिनिधित्व करता है।
- उपनिषद 'ज्ञान' के सिद्धांत पर बल देता है।
- इसकी कुल संख्या 108 है तथा इसे वेदांत कहा जाता है।
- 'मोक्ष' शब्द की चर्चा सबसे पहले उपनिषदों में की गई थी।

| **उपनिषद** | **शब्द** |
|---|---|
| मुंडकोपनिषद | भारत का राष्ट्रीय वाक्य 'सत्यमेव जयते' से लिया गया है। |
| बृहदारण्यक | "तमसो मा ज्योतिर्गमय" एवं पुनर्जन्म की अवधारणा उपनिषद में मिलती है।<br>इसमें याज्ञवल्क्य और गार्गी का प्रसिद्ध संवाद मिलता है। |
| कठोपनिषद | मृत्यु के देवता यम और के नचिकेता के बीच बातचीत की कहानी है। |
| जाबालोपनिषद | चार आश्रम ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास का वर्णन है। |
| छान्दोग्य उपनिषद | इसमें महर्षि गौतम के शिष्य सत्यकाम जाबाल की कथा का उल्लेख मिलता है। |

**वेदांग**

- वैदिक साहित्य को समझने में वेदांग प्रमुख सहायक होते हैं। इनकी संख्या 6 है।

| | |
|---|---|
| शिक्षा | शिक्षा - स्वर व्यंजन के उच्चारण का व्याख्या करता है। |
| कल्प | वैदिक कर्मकांड का प्रतिपादन करने वाला वेदांग |
| निरुक्त | वैदिक शब्दों का अर्थ व्यवस्थित रूप से समझाना |
| व्याकरण | इसे वेदों का मुख कहा गया है। इसमें प्रकृति और प्रत्यय के रूप में विभाजन करके पदों की व्युत्पत्ति बताई गई है |
| छंद | यह वेद मंत्रों के सही उच्चारण के लिए उपयोगी है |
| ज्योतिष | यह काल का निर्धारण करने वाला वेदांग |

**प्रमुख दर्शन एवं उनके प्रवर्तक**

| दर्शन | प्रवर्तक |
|---|---|
| सांख्य | कपिल मुनि |
| योग | पतंजलि |
| न्याय | गौतम |
| वैशेषिक | कणाद |
| मीमांसा | जैमिनी |
| वेदांत | बादरायण |

**शैव धर्म के प्रमुख संप्रदाय एवं संस्थापक**

| शैव धर्म का संप्रदाय | संस्थापक / प्रमुख प्रवर्तक |
|---|---|
| पाशुपत संप्रदाय | लकुलीश |
| वीरशैव / लिंगायत संप्रदाय | बसवन्ना |
| नाथ संप्रदाय | मत्स्येन्द्रनाथ |

**जैन धर्म**

- जैन शब्द संस्कृत के 'जिन' शब्दों से बना है जिसका अर्थ विजेता है।
- जैन धर्म के संस्थापकों को 'तीर्थंकर' कहा जाता है।
- जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभनाथ या आदिनाथ को जैन धर्म का संस्थापक माना जाता है।
- 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ का जन्म काशी में हुआ था।
- इसके 24वें एवं अंतिम तीर्थंकर महावीर स्वामी को  जैनधर्म वास्तविक प्रवर्तक माना जाता है।

**महावीर स्वामी**

- इनका जन्म 599 ईसा पूर्व कुंडग्राम (वैशाली के पास) में हुआ था। उनके पिता सिद्धार्थ एक क्षत्रिय शासक थे और माता त्रिशला थीं।
- महावीर का बचपन का नाम वर्धमान था। उनकी पत्नी का नाम यशोदा था।
- 30 वर्ष की आयु में उन्होंने सांसारिक जीवन का त्याग कर दिया और कठोर तपस्या एवं साधना के मार्ग पर चल पड़े।
- लगभग 12 वर्षों की कठोर तपस्या के बाद ऋजुपालिका नदी के तट पर साल वृक्ष के नीचे उन्हें ज्ञान (कैवल्य) की प्राप्ति हुई।
- ज्ञान प्राप्ति के उपरांत वे केवलिन, अर्हत, जिन तथा निर्ग्रंथ कहलाए।
- जामालि  महावीर स्वामी के दामाद एवं उनके प्रथम शिष्य भी थे।
- उनकी मृत्यु 527 ईसा पूर्व पावापुरी में हुई, जिसे जैन धर्म में निर्वाण कहा जाता है।

**प्रमुख जैन तीर्थंकर एवं उनके प्रतीक चिन्ह**

| तीर्थंकर | प्रतीक चिन्ह |
|---|---|
| ऋषभदेव | वृषभ |
| अजितनाथ | हाथी |
| अभिनंदन | बंदर |
| सुपार्श्वनाथ | स्वास्तिक |
| वासुपूज्य | महिष |
| मल्लिनाथ | जल-कलश |
| संभवनाथ | घोड़ा |
| शांतिनाथ | हिरण |
| नेमिनाथ | शंख |
| सुमतिनाथ | हंस |
| पार्श्वनाथ | सर्प |
| महावीर स्वामी | सिंह |

### जैन दर्शन

- जैन धर्म का मुख्य उद्देश्य मोक्ष प्राप्त करना है, जिसके लिए व्यक्ति को अपने कर्मों से मुक्त होना पड़ता है।
- इस धर्म के अनुसार प्रत्येक जीव में आत्मा होती है और अहिंसा का पालन सर्वोपरि कर्तव्य है।
- जैन धर्म के प्रमुख सिद्धांतों में त्रिरत्न—सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक चरित्र—का विशेष महत्व है।
- इसके साथ ही पंच महाव्रत—सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह एवं ब्रह्मचर्य का पालन करना आवश्यक माना गया है।
- अहिंसा जैन धर्म का आधारभूत बिंदु है।
- जैन धर्म में अनंत चतुष्टय है- अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत वीर्य एवं अनंत सुख।
- जैन दर्शन में अणुव्रत सिद्धांत, अनेकांतवाद (सत्य के अनेक पक्ष) और स्यादवाद (ज्ञान की सापेक्षता) जैसे सिद्धांत भी महत्वपूर्ण हैं, जो सहिष्णुता और व्यापार दृष्टिकोण को बढ़ावा देते हैं।
- जैन धर्म में तत्व के तीन कारक है- उत्पत्ति, क्षय और स्थायित्व।
- स्थानकवासी संप्रदाय, यापनीय संप्रदाय, श्वेतांबर एवं दिगंबर संप्रदाय का संबंध जैन धर्म से है।

### जैन धर्म की प्रमुख संगीति

| संगीति | स्थान | अध्यक्ष | मुख्य कार्य |
|---|---|---|---|
| प्रथम जैन संगीति | पाटलिपुत्र | स्थूलभद्र | जैन धर्म के 12 अंगों का संकलन; जैन धर्म का विभाजन दिगंबर एवं श्वेतांबर संप्रदाय में हुआ |
| द्वितीय जैन संगीति | वल्लभी | देवर्धिगणि क्षमाश्रमण | जैन ग्रंथों का लेखन; अनुयोगसूत्र का संकलन हुआ |

### जैन धर्म के प्रमुख ग्रंथ एवं उनके रचनाकार

| ग्रंथ | रचनाकार |
|---|---|
| कल्पसूत्र | भद्रबाहु |
| स्यादवादमंजरी | मल्लिसेन |
| न्यायावतार | सिद्धसेन दिवाकर |
| प्रवचनसार | कुन्दकुन्द |
| द्रव्यसंग्रह | नेमिचंद्र |
| परिशिष्टपर्वन | हेमचंद्र |
| न्यायदीपिका | धर्मभूषण |
| कुवलयमाला | उद्योतन सूरी |
| भद्रबाहुचरित | रत्ननंदी |
| नीतिवाक्यमृतम | सोमदेव सूरी |

### बौद्ध धर्म

- बौद्ध धर्म की स्थापना छठी शताब्दी ईसा पूर्व में **गौतम बुद्ध** द्वारा की गई, जिनका जन्म 563 ईसा पूर्व कपिलवस्तु के निकट लुंबिनी में हुआ था।
- इनके पिता शुद्धोधन (शाक्यगण) तथा माता माया देवी कोलिय वंश से थी।
- उनका बचपन का नाम सिद्धार्थ था। इनका अन्य नाम तथागत एवं शाक्यमुनि भी है।
- इनका विवाह 16 वर्ष की आयु में यशोधरा से हुआ। उनके पुत्र का नाम राहुल था।
- संसार के दुखों को देखकर उन्होंने 29 वर्ष की आयु में गृह त्याग किया, जिसे 'महाभिनिष्क्रमण' कहा जाता है, और 6 वर्ष की कठोर तपस्या के बाद बोधगया में बोधि वृक्ष के नीचे उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई, जिसके बाद वे बुद्ध कहलाए।
- उन्होंने सारनाथ में अपना प्रथम उपदेश दिया, जिसे 'धर्मचक्र प्रवर्तन' कहा जाता है।
- गौतम बुद्ध ने अपना सर्वाधिक उपदेश श्रावस्ती में दिया।
- बुद्ध ने अपने जीवन की अंतिम वर्षा ऋतु वैशाली में बिताई थी।

**गौतम बुद्ध से संबंधित प्रमुख घटनाएँ:**

| घटना | स्थान | प्रतीक |
|---|---|---|
| जन्म | लुम्बिनी | कमल |
| गृह त्याग (महाभिनिष्क्रमण) | कपिलवस्तु | घोड़ा (कंथक) |
| ज्ञान प्राप्ति | बोधगया | बोधि वृक्ष |
| प्रथम उपदेश (धर्मचक्र प्रवर्तन) | सारनाथ | धर्मचक्र |
| महापरिनिर्वाण (मृत्यु) | कुशीनगर | स्तूप |

**बौद्ध धर्म के अनुयायी समकालीन शासक**

| शासक | राज्य |
|---|---|
| बिंबिसार, अजातशत्रु | मगध |
| प्रसेनजित | कोसल |
| उदयिन | वत्स |
| महाकच्चायन | अवंति |
| भद्रिक | शाक्य राजा |

**प्रमुख बौद्ध दर्शन**

- बौद्ध धर्म के त्रिरत्न है- बुद्ध, धम्म एवं संघ।
- बौद्ध धर्म के प्रमुख सिद्धांत चार आर्य सत्य -दुख, दुख का कारण, दुख का निरोध और दुख निरोध का मार्ग है।
- अष्टांगिक मार्ग-सम्यक दृष्टि, संकल्प, वाक, कर्मांत, आजीव, व्यायाम, स्मृति और समाधि हैं, जिनके पालन से मनुष्य मोक्ष या निर्वाण प्राप्त कर सकता है।
- बौद्ध धर्म में आत्मा और ईश्वर की अवधारणा को विशेष महत्व नहीं दिया गया, बल्कि कर्म और पुनर्जन्म के सिद्धांत को स्वीकार किया गया है।
- आगे चलकर बौद्ध धर्म दो प्रमुख शाखाओं—हीनयान और महायान—में विभाजित हो गया, जिनमें महायान में बुद्ध की पूजा और मूर्ति पूजा का अधिक महत्व है।
- बौद्ध धर्म की महायान शाखा औपचारिक रूप से कनिष्क के शासनकाल में प्रकट हुई।
- बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार में **सम्राट अशोक** का विशेष योगदान रहा, जिन्होंने इसे भारत के बाहर श्रीलंका, चीन, जापान आदि देशों तक फैलाया।
- बौद्ध धर्म की भाषा पालि और प्राकृत रही तथा इसके ग्रंथ त्रिपिटक कहलाते हैं।

**बौद्ध ग्रंथ के त्रिपिटक**

| पिटक | विवरण |
|---|---|
| विनय पिटक | इसमें बौद्ध संघ के नियम, अनुशासन और भिक्षुओं-भिक्षुणियों के आचार-विचार का वर्णन है |
| सुत्त पिटक | इसमें गौतम बुद्ध के उपदेश, प्रवचन और धर्म संबंधी शिक्षाएँ संकलित हैं |
| अभिधम्म पिटक | इसमें बौद्ध दर्शन एवं दार्शनिक विश्लेषण किया गया है |

**प्रमुख बौद्ध संगीति**

| बौद्ध संगीति | अवधि | शासक | स्थान | अध्यक्ष |
|---|---|---|---|---|
| प्रथम | 483 ई.पू. | अजातशत्रु | राजगृह | पूरन महाकस्सप |
| द्वितीय | 383 ई.पू. | कालाशोक | वैशाली | सर्वकामी |
| तृतीय | 250 ई.पू. | अशोक | पाटलिपुत्र | मोग्गलिपुत्त तिस्स |
| चतुर्थ | प्रथम शताब्दी | कनिष्क | कुंडलवन (कश्मीर) | वसुमित्र |

**प्रमुख बौद्ध ग्रंथ एवं उनके रचनाकार**

| ग्रंथ | रचनाकार |
|---|---|
| मिलिंदपन्हो | नागसेन |
| बुद्धचरित, सौंदरानंद | अश्वघोष |
| अभिधम्मकोश | वसुबंधु |
| माध्यमिक सूत्र | नागार्जुन |

**महाजनपद**

- महाजनपद प्राचीन भारत (लगभग 6ठी शताब्दी ईसा पूर्व) के वे बड़े जन-राज्य थे, जो छोटे-छोटे जनपदों के मिलकर बनने से विकसित हुए।
- बौद्ध ग्रंथ अंगुत्तर निकाय एवं जैन ग्रंथ भगवती सूत्र में 16 महाजनपदों का उल्लेख मिलता है।
- वैशाली बुद्ध काल का सबसे बड़ा तथा शक्तिशाली गणराज्य था।
- पुराणों के अनुसार मगध पर शासन करने वाला पहला राजवंश बृहद्रथ वंश था।

| **महाजनपद** | **राजधानी** |
|---|---|
| अंग | चंपा |
| मगध | राजगृह |
| काशी | वाराणसी |
| कोसल | श्रावस्ती |
| वज्जि (वृज्जि) | वैशाली |
| मल्ल | कुशीनगर / पावा |
| चेदि | शुक्तिमती |
| वत्स | कौशांबी |
| कुरु | इन्द्रप्रस्थ |
| पांचाल | अहिच्छत्र / कांपिल्य |
| मत्स्य | विराटनगर |
| शूरसेन | मथुरा |
| अश्मक | पोटलि/पोतन |
| अवंति | उज्जयिनी / महिष्मती |
| गांधार | तक्षशिला |
| कम्बोज | राजपुर |

**मगध राज्य के प्रमुख वंश**

| **वंश** | **संस्थापक, राजधानी, प्रमुख शासक एवं उपलब्धियाँ** |
|---|---|
| हर्यक वंश | कार्यकाल: 544-412 ई.पू.<br>संस्थापक: बिम्बिसार (महावीर जैन एवं गौतम बुद्ध के समकालीन)<br>राजधानी: राजगृह (बाद में पाटलिपुत्र)<br>प्रमुख शासक: अजातशत्रु, उदयिन<br>उपलब्धियाँ: मगध साम्राज्य का विस्तार, युद्ध में नवीन हथियारों (रथमूसल एवं महाशिलाकंटक) का प्रयोग, नागदशक इस वंश का अंतिम शासक था। |
| शिशुनाग वंश | कार्यकाल: 412-344 ई.पू.<br>संस्थापक: शिशुनाग<br>राजधानी: वैशाली (बाद में पाटलिपुत्र)<br>प्रमुख शासक: कालाशोक<br>उपलब्धियाँ: द्वितीय बौद्ध संगीति का आयोजन<br>नंदीवर्धन इस वंश का अंतिम शासक था। |
| नंद वंश | कार्यकाल: 344-321 ई.पू.<br>संस्थापक: महापद्मनंद (दूसरे परशुराम का अवतार)<br>राजधानी: पाटलिपुत्र<br>प्रमुख शासक: धनानंद (सिकंदर का समकालीन)<br>उपलब्धियाँ: पूरे उत्तर भारत पर नियंत्रण, शक्तिशाली केंद्रीकृत शासन |

**मौर्य वंश**

- मौर्य वंश प्राचीन भारत का पहला विशाल और केंद्रीकृत साम्राज्य था, जिसकी स्थापना 322 ईसा पूर्व में चंद्रगुप्त मौर्य ने की।
- इस स्थापना में उनके चाणक्य (कौटिल्य) का महत्वपूर्ण योगदान था।
- मौर्य साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र थी और यह उत्तर-पश्चिम से लेकर दक्षिण के बड़े हिस्सों तक फैला हुआ था।

**चंद्रगुप्त मौर्य (322–298 ईसा पूर्व):**

- चंद्रगुप्त मौर्य ने नंद वंश को पराजित कर मौर्य साम्राज्य की नींव रखी।
- उनके सत्ता में आने में चाणक्य (कौटिल्य/विष्णुगुप्त) की महत्वपूर्ण भूमिका रही। यूनानी लेखों में चंद्रगुप्त को 'सैंड्रोकोटस' (Sandrokotus) के नाम से उल्लेखित किया गया है।
- उन्होंने यूनानी शासक सेल्युकस निकेटर को हराकर उत्तर-पश्चिमी सीमाओं को सुरक्षित किया और एक विशाल साम्राज्य स्थापित किया।
- जीवन के अंतिम समय में चंद्रगुप्त ने जैन धर्म को अपनाया और जैन आचार्य भद्रबाहु के नेतृत्व में कर्नाटक के श्रवणबेलगोला चले गए। वहीं उन्होंने 'सल्लेखना' (उपवास द्वारा शरीर त्याग) की विधि से अपना जीवन समाप्त किया।
- चंद्रगुप्त मौर्य ने सौराष्ट्र के गिरनार क्षेत्र में सुदर्शन झील का निर्माण कराया गया। इस झील का निर्माण उनके राज्यपाल पुष्यगुप्त वैश्य द्वारा कराया गया था।

**मेगस्थनीज**

- यह एक यूनानी राजदूत था, जिसे सेल्युकस निकेटर ने चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में भेजा था।
- उसने 'इंडिका' नामक पुस्तक की रचना की।
- यह ग्रंथ मौर्यकालीन प्रशासन, समाज और अर्थव्यवस्था पर महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है।

**बिंदुसार (297–273 ईसा पूर्व) :**

- बिंदुसार, चंद्रगुप्त के पुत्र थे, जिन्होंने साम्राज्य को आगे बढ़ाया और दक्षिण भारत तक उसका विस्तार किया।
- उन्हें 'अमित्रघात', 'भद्रसार' और 'सिंहसेन' जैसे नामों से भी जाना जाता था।
- तक्षशिला में विद्रोह होने पर उन्होंने अपने पुत्रों अशोक और सुषीम को वहाँ भेजा।
- बिंदुसार के दरबार में यूनानी राजदूत डाइमेकस (एंटिओकस I द्वारा भेजे गए) और डायोनिसियस (टॉलेमी II द्वारा भेजे गए) आए थे, जो उस समय के विदेशी संबंधों को दर्शाते हैं।
- उन्होंने अशोक को उज्जैन का गवर्नर नियुक्त किया।
- बिंदुसार 'आजीवक' संप्रदाय के अनुयायी थे, जिसकी स्थापना मक्खलि गोसाल ने की थी, जो गौतम बुद्ध के समकालीन थे।

**अशोक (273 – 232 ईसा पूर्व):**

- अशोक बिंदुसार और सुभद्रांगी के पुत्र थे। उनका जन्म लगभग 304 ईसा पूर्व में हुआ था।
- उन्हें 'देवानामप्रिय' और 'प्रियदर्शी' जैसे उपनामों से भी जाना जाता था।
- अशोक का वास्तविक (व्यक्तिगत) नाम हमें मास्की, गुर्जरा और नेत्तूर के अभिलेखों में मिलता है।
- वे 268 ईसा पूर्व में सिंहासन पर बैठे। राजा बनने से पहले अशोक उज्जैन के गवर्नर थे।
  - ❖ कलिंग युद्ध 261 ईसा पूर्व में अशोक और कलिंग राज्य के बीच लड़ा गया था। उस समय कलिंग (वर्तमान उड़ीसा) की राजधानी तोशली थी।
  - ❖ इस युद्ध की जानकारी अशोक के 13वें शिलालेख से प्राप्त होती है। इस युद्ध की भयावहता ने उनके मन पर गहरा प्रभाव डाला, जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने सदैव के लिए युद्ध की नीति का त्याग कर दिया और 'धम्म' अर्थात् शांति, अहिंसा और नैतिकता की नीति को अपनाया। यह युद्ध उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ सिद्ध हुआ।

**अशोक के अभिलेख**

- अशोक के अभिलेखों को सबसे पहले 1837 में जेम्स प्रिंसेप ने पढ़ा।
- अधिकांश अभिलेख पाली भाषा तथा कुछ प्राकृत भाषा में लिखे गए हैं।
- अशोक ने भारत के अधिकांश भागों में अपने अभिलेखों के लिए ब्राह्मी लिपि का प्रयोग किया, जबकि उत्तर-पश्चिमी भारत में खरोष्ठी लिपि का उपयोग किया गया।
- अशोक के कुल 14 प्रमुख शिलालेख (Major Rock Edicts) माने जाते हैं।

**अशोक के प्रमुख शिलालेख**

| शिलालेख | विषय |
|---|---|
| पहला | पशु बलि की निंदा |
| दूसरा | मनुष्य एवं पशु दोनों की चिकित्सा व्यवस्था |
| तीसरा | राजकीय अधिकारियों को धम्म एवं नैतिक आदेश |
| चौथा | धम्म-घोष (धर्म की घोषणा) का प्रचार |
| पाँचवाँ | धम्म महामात्रों की नियुक्ति |
| छठा | आत्म नियंत्रण की शिक्षा |
| सातवाँ | धार्मिक सहिष्णुता का संदेश |
| आठवाँ | धम्म यात्राओं की शुरुआत |
| नौवाँ | शिष्टाचार का उल्लेख |
| दसवाँ | राज्य के अधिकारी प्रजा के हित में सोचें |
| ग्यारहवाँ | धम्म की व्याख्या की गई है |
| बारहवाँ | स्त्री महामात्रों की नियुक्ति |
| तेरहवाँ | कलिंग युद्ध का उल्लेख |
| चौदहवाँ | अशोक द्वारा जनता को धार्मिक जीवन बिताने की प्रेरणा दी गई |

**अशोक द्वारा धम्म के प्रचार के लिए भेजे गए प्रचारक एवं क्षेत्र**

| प्रचारक | क्षेत्र |
|---|---|
| मज्झांतिक | कश्मीर एवं गांधार |
| महाधर्मरक्षित | महाराष्ट्र |
| महारक्षित | यवन देश (यूनानी प्रदेश) |
| मज्जिम | हिमालय क्षेत्र |
| सोन एवं उत्तर | सुवर्णभूमि |
| महेंद्र एवं संघमित्रा | श्रीलंका |

**मौर्य के काल का प्रशासन**

- प्रशासन अत्यंत केंद्रीकृत और सुव्यवस्थित था। इसमें सम्राट सर्वोच्च शक्ति का स्रोत होता था और सभी प्रशासनिक, न्यायिक तथा सैन्य निर्णय उसी के नियंत्रण में होते थे।
- राजा की सहायता के लिए एक मंत्रिपरिषद होती थी।
- प्रशासन को छोटे-छोटे स्तरों में विभाजित किया गया था। सबसे छोटी इकाई गाँव थी, जिसका प्रमुख अधिकारी ग्रामिक होता था।
- गाँवों के समूह और बड़े क्षेत्रीय प्रशासन के लिए एक उच्च अधिकारी रज्जुक नियुक्त होता था।
- राजस्व व्यवस्था के संचालन के लिए एक प्रमुख अधिकारी समाहर्ता होता था, जो पूरे राज्य में कर संग्रह की निगरानी करता था।
- मौर्य काल की न्याय व्यवस्था (Judicial System) में दो प्रकार के न्यायालय होते थे। पहला धर्मस्थीय न्यायालय था, जो दीवानी मामलों जैसे संपत्ति, विवाद और अनुबंध से संबंधित मामलों की सुनवाई करता था। दूसरा कंटकशोधन न्यायालय था, जो फौजदारी मामलों जैसे अपराध, दंड और कानून-व्यवस्था से संबंधित मामलों का निपटारा करता था।

**मौर्य काल के प्रमुख पदाधिकारी**

| पदाधिकारी | कार्य |
|---|---|
| पण्याध्यक्ष | वाणिज्य और व्यापार का अध्यक्ष |
| सुराध्यक्ष | मद्य (शराब) उत्पादन और बिक्री का अध्यक्ष |
| सूनाध्यक्ष | कसाईखानों का अध्यक्ष |
| गणिकाध्यक्ष | गणिकाओं (वेश्याओं) का का अध्यक्ष |
| सीताध्यक्ष | कृषि भूमि का अध्यक्ष |
| आकराध्यक्ष | खानों (खनिज संसाधनों) का अध्यक्ष |
| लक्षणाध्यक्ष | मुद्रा (सिक्कों) और टकसाल का अध्यक्ष |
| लोहाध्यक्ष | लौह (लोहे) उत्पादन और उपयोग का अध्यक्ष |
| नवाध्यक्ष | नौकाओं और जल परिवहन का अध्यक्ष |

**मौर्य काल की कृषि, राजस्व एवं मुद्रा व्यवस्था**

| विषय | विवरण |
|---|---|
| सीता | राजा की अपनी भूमि से प्राप्त आय |
| भूमि कर | कुल उपज का लगभग 1/4 से 1/6 भाग |
| अदेवमातृक भूमि | ऐसी भूमि जहाँ बिना वर्षा के भी खेती की जाती थी |
| उदकभाग | सिंचाई कर |
| अरणी | वर्षा मापने का यंत्र |
| भाग और बलि | राज्य की प्रमुख राजस्व आय के स्रोत |
| कार्षापण | चाँदी का सिक्का |
| काकणी | ताँबे का सिक्का |
| पण | राज्य की मानक मुद्रा |

**मौर्यकालीन सैन्य प्रशासन समिति**

| समिति | कार्य |
|---|---|
| प्रथम समिति | नौसेना विभाग का संचालन तथा जल-मार्गों की सुरक्षा |
| द्वितीय समिति | परिवहन एवं रसद विभाग का प्रबंधन |
| तृतीय समिति | पैदल सेना (पदाति सेना) का प्रबंधन एवं नियंत्रण |
| चतुर्थ समिति | अश्व सेना (घुड़सवार सेना) का संचालन एवं देखरेख |
| पंचम समिति | गज सेना (हाथी सेना) का संचालन |
| षष्ठ समिति | रथ सेना का प्रबंधन |

**शुंग वंश (185 ई. पू. से 73 ई. पू.):**

- शुंग वंश की स्थापना 185 ईसा पूर्व में पुष्यमित्र शुंग ने की, जो मौर्य वंश के अंतिम शासक बृहद्रथ के सेनापति थे।
- उन्होंने बृहद्रथ की हत्या कर सत्ता प्राप्त की और मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद शुंग वंश की नींव रखी।
- इस वंश की राजधानी प्रारंभ में पाटलिपुत्र थी, बाद में विदिशा भी महत्वपूर्ण केंद्र बना। इस काल में ब्राह्मण धर्म का पुनरुत्थान हुआ तथा संस्कृत भाषा और वैदिक परंपराओं को बढ़ावा मिला।

**पुष्यमित्र शुंग**

- पुष्यमित्र शुंग ने 185 ईसा पूर्व में उन्होंने बृहद्रथ की हत्या कर शुंग वंश की स्थापना की और पाटलिपुत्र को अपनी राजधानी बनाया।
- उनके शासनकाल में यवन (इंडो-ग्रीक) आक्रमण हुए, जिनमें मिनांडर और डेमेट्रियस प्रमुख थे। शुंग शासकों का एक प्रमुख शत्रु यज्ञसेन था।
- पुष्यमित्र शुंग का शासन लगभग 36 वर्षों तक चला और उनकी मृत्यु 151 ईसा पूर्व में हुई।

**अग्निमित्र**

- अग्निमित्र, पुष्यमित्र शुंग के पुत्र और शुंग वंश के शासक थे। उनका शासनकाल लगभग 149 ईसा पूर्व से 141 ईसा पूर्व तक माना जाता है।
- अग्निमित्र के बारे में प्रमुख जानकारी संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध कवि कालिदास द्वारा रचित नाटक मालविकाग्निमित्रम् से प्राप्त होती है, जिसमें वे मुख्य पात्र के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं।

**शक वंश**

- शक (Shaka) मध्य एशिया से भारत में आए विदेशी शासक थे, जो बोलन दर्रे के माध्यम से भारत में प्रवेश किए और लगभग 500 वर्षों तक विभिन्न क्षेत्रों में शासन करते रहे।
- उनके पाँच प्रमुख शाखाएँ थीं—अफगानिस्तान, तक्षशिला, मथुरा, महाराष्ट्र और उज्जैन (मालवा)।
- महाराष्ट्र में नहपान एक प्रसिद्ध शक शासक था।

**रुद्रदामन प्रथम (130–150 ई.)**

- सबसे प्रसिद्ध शक शासक थे, जिन्होंने उज्जैन पर शासन किया और 'महाक्षत्रप' की उपाधि धारण की।
- उनका प्रसिद्ध जूनागढ़ अभिलेख गुजरात के गिरनार पर्वत पर मिला है, जो संस्कृत भाषा में ब्राह्मी लिपि में लिखा गया है।
- रुद्रदामन ने सुदर्शन झील का पुनर्निर्माण भी कराया।

**कुषाण वंश**

- कुषाण वंश की स्थापना पहली शताब्दी ईस्वी में **कुजुल कडफिसेस** द्वारा की गई, जो मध्य एशिया की यूची (Yuezhi) जनजाति से संबंधित थे।
- उत्तर-पश्चिम भारत में आकर उन्होंने अपनी सत्ता स्थापित की।
- इसके बाद **विम कडफिसेस** शासक बना, जिसने सोने के सिक्कों का प्रचलन शुरू किया और भारत-रोम व्यापार को बढ़ावा दिया।

**कनिष्क (78–105 ई.):**

- कनिष्क कुषाण वंश के महान शासक थे। उन्होंने 78 ईस्वी में सिंहासन प्राप्त किया और 'शक संवत' की शुरुआत की।
- उनकी प्रथम राजधानी पुरुषपुर (वर्तमान पेशावर) तथा दूसरी राजधानी मथुरा थी।
- उन्हें उनके बौद्ध धर्म के संरक्षण और प्रचार के कारण 'द्वितीय अशोक' भी कहा जाता है।
- कनिष्क ने कश्मीर में 'कनिष्कपुर' तथा तक्षशिला में 'सिरकप' नामक नगर बसाए।
- वे बौद्ध धर्म के महायान संप्रदाय के अनुयायी थे। उनके समय में गांधार और मथुरा कला शैलियों का विकास हुआ, जो मूर्तिकला के लिए प्रसिद्ध हैं।
- कनिष्क की मृत्यु लगभग 102 ईस्वी में हुई।
- कनिष्क के शासनकाल में कश्मीर में चौथी बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ, जिससे महायान बौद्ध धर्म का विकास और प्रचार-प्रसार हुआ।
- उनके बाद इस वंश का अंतिम शासक वासुदेव था।

**कनिष्क के दरबार के विद्वान एवं उनके कार्य**

| विद्वान | कार्य/योगदान |
|---|---|
| वसुमित्र | बौद्ध विद्वान, कनिष्क का संरक्षण प्राप्त |
| अश्वघोष | कनिष्क के दरबारी कवि; 'बुद्धचरित' और 'सौंदरानंद' की रचना |
| नागार्जुन | प्रसिद्ध दार्शनिक; महायान बौद्ध धर्म के प्रवर्तक विचारक |
| चरक | कनिष्क के राजवैद्य; 'चरक संहिता' से संबंधित |
| भरत मुनि | 'नाट्यशास्त्र' की रचना |
| पतंजलि | 'महाभाष्य' की रचना |
| वात्स्यायन | 'कामसूत्र' की रचना |

**गुप्त काल**

- गुप्त काल (लगभग 319–550 ई.) की स्थापना श्रीगुप्त ने की, जिन्होंने "महाराज" की उपाधि धारण की थी।
- प्रारंभ में गुप्त शासक कुषाण साम्राज्य के अधीन सामंत थे।
- गुप्त वंश के प्रारंभिक शासकों के बारे में जानकारी प्रयाग प्रशस्ति से मिलती है, जो समुद्रगुप्त के समय की है।
- गुप्त काल को भारत का "स्वर्ण युग" कहा जाता है क्योंकि इस समय कला, साहित्य, विज्ञान और संस्कृति में अभूतपूर्व प्रगति हुई।

**चंद्रगुप्त प्रथम (319–335 ई.)**

- चंद्रगुप्त प्रथम गुप्त वंश के प्रमुख शासक थे और इन्हें वास्तविक संस्थापक माना जाता है। वे घटोत्कच के पुत्र थे।
- उन्होंने लिच्छवि वंश की राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह किया, जिससे उन्हें पाटलिपुत्र क्षेत्र पर अधिकार मिला । उन्होंने "महाराजाधिराज" की उपाधि धारण की।
- उनके राज्याभिषेक (319–320 ई.) की स्मृति में गुप्त संवत की शुरुआत हुई।

**समुद्रगुप्त (335–380 ई.)**

- समुद्रगुप्त, चंद्रगुप्त प्रथम के पुत्र थे । उनके शासनकाल की विस्तृत जानकारी प्रयाग प्रशस्ति (इलाहाबाद स्तंभ) से मिलती है, जिसे उनके दरबारी कवि हरिषेण ने संस्कृत में लिखा था।
- इस अभिलेख में उन्हें एक महान योद्धा, विद्वान और कवि के रूप में दर्शाया गया है, जिसके कारण उन्हें "कविराज" की उपाधि दी गई।
- हरिषेण ने 'संधिविग्रहक', 'महादंडनायक' और 'कुमारामात्य' जैसे उच्च पद भी संभाले थे।
- प्रयाग प्रशस्ति में समुद्रगुप्त को "लिच्छवि दौहित्र" (लिच्छवि वंश का नाती) भी कहा गया है।
- वे वैष्णव धर्म के अनुयायी थे तथा उनके सिक्कों पर उन्हें वीणा बजाते हुए दिखाया गया है।
- इतिहासकार वी. ए. स्मिथ ने उन्हें "भारत का नेपोलियन" कहा है।

**समुद्रगुप्त के प्रमुख विजय अभियान**

| अभियान | विवरण |
|---|---|
| प्रथम चरण | उत्तर भारत के 9 शासकों को पराजित किया |
| द्वितीय चरण | पंजाब क्षेत्र पर अधिकार किया |
| तृतीय चरण | विंध्य क्षेत्र के आटविक (वन) राज्यों को पराजित किया |
| चतुर्थ चरण | दक्षिण भारत के 12 शासकों को हराया |
| पंचम चरण | उत्तर-पश्चिम के कुछ विदेशी राज्यों को पराजित किया |

### चंद्रगुप्त द्वितीय (380–415 ई.)

- चंद्रगुप्त द्वितीय, समुद्रगुप्त के पुत्र थे । उनके बारे में जानकारी देवीचंद्रगुप्तम् (विशाखदत्त द्वारा रचित) से मिलती है।
- उनका विवाह नाग वंश की राजकुमारी कुबेरनागा से हुआ था। उनकी पुत्री प्रभावतीगुप्त का विवाह वाकाटक वंश के रुद्रसेन द्वितीय से हुआ।
- उन्होंने "विक्रमादित्य", "परमभागवत विक्रमांक" और "शकारी" (शक शासकों को हराने के बाद) जैसी उपाधियाँ धारण कीं।
- उज्जैन को अपनी दूसरी राजधानी बनाया। उनके सिक्कों पर उनका नाम "चंद्र" भी अंकित मिलता है।
- उदयगिरि गुफा अभिलेख में उनके दिग्विजय (विजयों) का उल्लेख मिलता है।
- उनके दरबार में "नवरत्न" नाम से प्रसिद्ध विद्वानों का समूह था, जिससे उनके काल को गुप्त युग का चरम और "स्वर्ण युग" माना जाता है।
- फाह्यान एक चीनी यात्री थे, जिन्होंने 399–414 ईस्वी के बीच भारत की यात्रा की। वे चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में भारत आए थे।

### कुमारगुप्त प्रथम (415–455 ई.)

- चंद्रगुप्त द्वितीय के पुत्र और उत्तराधिकारी थे।
- उन्हें 'शक्रादित्य' और 'महेंद्रादित्य' की उपाधियाँ प्राप्त थीं।
- कुमारगुप्त प्रथम के काल में नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना हुई, जिसे महायान बौद्ध धर्म का प्रमुख केंद्र और "महायान का ऑक्सफोर्ड" कहा जाता है।
- गुप्त शासकों में उनके शासनकाल के सर्वाधिक (लगभग 18) अभिलेख प्राप्त हुए हैं।
- उनके समय में चाँदी के सिक्कों का प्रचलन भी शुरू हुआ।

### स्कंदगुप्त (455–467 ई.)

- गुप्त वंश के अंतिम महान और गौरवशाली शासक माने जाते हैं।
- उन्होंने प्रशासनिक सुविधा के लिए अपनी राजधानी को पाटलिपुत्र से हटाकर अयोध्या स्थानांतरित किया।
- उनके शासनकाल में पहला हूण आक्रमण हुआ, जिसका नेतृत्व खुशनवाज ने किया था। उससे संबंधित जानकारी का उल्लेख जूनागढ़ अभिलेख में मिलता है।
- इसी अभिलेख में गिरनार के प्रशासक चक्रपालित द्वारा सुदर्शन झील के पुनर्निर्माण का भी उल्लेख है, जिससे गुप्तकालीन जल प्रबंधन की जानकारी मिलती है।

**सुदर्शन झील के निर्माण से संबंधित प्रमुख शासन एवं अधिकारी**

| शासक | संबंधित अधिकारी / व्यक्ति |
|---|---|
| चन्द्रगुप्त मौर्य | पुष्यगुप्त |
| अशोक | तुषास्प |
| रुद्रदामन प्रथम | सुविशाख |
| स्कन्दगुप्त | पर्णदत्त तथा चक्रपालित |

### गुप्त काल की प्रशासनिक व्यवस्था

- गुप्त काल की प्रशासनिक व्यवस्था राजतंत्रीय प्रणाली पर आधारित थी और यह सुव्यवस्थित एवं कुशल थी। इसमें सर्वोच्च अधिकारी स्वयं सम्राट होता था, जो राज्य का अंतिम निर्णयकर्ता था।
- शासक को सहायता देने के लिए मंत्रिपरिषद (Council of Ministers) होती थी। प्रशासनिक कार्यों में **कुमारामात्य** नामक अधिकारी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे, जिन्हें वेतन के रूप में नकद भुगतान किया जाता था।
- सम्पूर्ण साम्राज्य को **भुक्तियों (Bhuktis)** में विभाजित किया गया था, जिन्हें आगे जिलों (विषय) में बाँटा गया था।
- जिलों के प्रमुख अधिकारी को **विषयपति (Vishayapati)** कहा जाता था।
- प्रशासन की सबसे छोटी इकाई गाँव (Village) थी, जिसका प्रमुख अधिकारी **ग्रामीक या महत्तर** होता था।

**गुप्त काल की राजस्व व्यवस्था**

| कर/व्यवस्था | विवरण |
|---|---|
| भाग | उपज का 1/6 भाग राज्य द्वारा कर के रूप में लिया जाता था |
| उदकभाग | सिंचाई कर |
| उद्रंग | स्थायी किसानों पर लगाया जाने वाला भूमि कर |
| उपरिकर | अस्थायी किसानों पर लगाया जाने वाला भूमि कर |
| ध्रुवाधिकरण | भूमि राजस्व एकत्र करने वाला विभाग |
| शौल्किक | सीमा शुल्क/कर वसूलने वाला अधिकारी |
| विष्टि | जबरन श्रम |

**गुप्त काल में भूमि के प्रकार**

| भूमि का प्रकार | विवरण |
|---|---|
| अग्रहार भूमि | मंदिरों और ब्राह्मणों को दी जाने वाली कर-मुक्त भूमि |
| वास्तु | निवास योग्य (आबादी वाली) भूमि |
| अप्रहत | जंगली भूमि, जो कृषि योग्य नहीं थी |
| खिल | अनुपजाऊ या बिना जोती गई भूमि |
| औदक | दलदली या जलभराव वाली भूमि |

**गुप्त काल की प्रमुख रचनाएँ एवं रचनाकार**

| रचनाकार | प्रमुख रचनाएँ |
|---|---|
| कालिदास | अभिज्ञान शाकुंतलम्, मेघदूत, ऋतुसंहार, कुमारसंभव, रघुवंश, मालविकाग्निमित्रम् |
| विशाखदत्त | मुद्राराक्षस, देवीचंद्रगुप्तम |
| वराहमिहिर | पंचसिद्धांतिका, बृहत्संहिता, बृहत्जातक |
| विष्णु शर्मा | पंचतंत्र |
| शूद्रक | मृच्छकटिकम् |
| आर्यभट्ट | आर्यभट्टीयम |
| अमरसिंह | अमरकोश |
| भारवि | किरातार्जुनीयम |

## गुप्तोत्तर काल

### पुष्यभूति/वर्द्धन वंश

- पुष्यभूति अथवा वर्धन वंश उत्तर भारत का एक महत्वपूर्ण राजवंश था जिसका उदय लगभग 6वीं शताब्दी ईस्वी में हुआ।
- इस वंश का संस्थापक पुष्यभूति माना जाता है, हालांकि इसके वास्तविक राजनीतिक उत्थान का श्रेय प्रभाकरवर्धन को दिया जाता है। बाद में इस वंश का सबसे शक्तिशाली शासक हर्षवर्धन हुआ।
- इस वंश की राजधानी थानेश्वर (वर्तमान हरियाणा) थी।

**हर्षवर्धन (606 ई. से 647 ई.)**

- हर्षवर्धन ने 606 ई. से 647 ई. तक शासन किया। हर्षवर्धन ने थानेश्वर के साथ-साथ कन्नौज को भी अपनी राजधानी बनाया।
- वह एक कुशल प्रशासक था और उसने धर्म, शिक्षा तथा कला को विशेष संरक्षण दिया। वह प्रारंभ में शैव धर्म से जुड़ा था लेकिन बाद में बौद्ध धर्म, विशेषकर महायान संप्रदाय का संरक्षक बन गया।
- उसने प्रयाग में महामोक्ष परिषद तथा कन्नौज में एक विशाल धर्मसभा का आयोजन किया।
- हर्षवर्धन के समय चीन का प्रसिद्ध यात्री ह्वेन त्सांग (Xuanzang) भारत आया, जिसने लगभग 630 से 643 ईस्वी तक भारत में यात्रा की। उसका उद्देश्य बौद्ध धर्म का अध्ययन करना और भारत के बौद्ध स्थलों की जानकारी एकत्र करना था।
- ह्वेन त्सांग ने अपनी प्रसिद्ध कृति "सी-यू-की" (Si-Yu-Ki) में भारत की सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक स्थिति का विस्तृत वर्णन किया है।
- हर्ष स्वयं भी एक विद्वान शासक था तथा उसने "प्रियदर्शिका", "रत्नावली" और "नागानंद" ग्रंथ की रचना की।
- उसके दरबार में प्रसिद्ध कवि बाणभट्ट रहते थे, जिन्होंने "हर्षचरित" तथा "कादंबरी" नामक ग्रंथ की रचना की।

**दक्षिण भारत के प्रमुख राजवंश**

| राजवंश | स्थापना | संस्थापक | राजधानी | प्रमुख शासक |
|---|---|---|---|---|
| पल्लव वंश | लगभग 575 ई. | सिंहविष्णु | कांची (कांचीपुरम) | महेन्द्रवर्मन I, नरसिंहवर्मन I, नरसिंहवर्मन II (राजसिंह) |
| चोल वंश | 9वीं शताब्दी | विजयालय चोल | तंजावुर (तंजौर), | राजराज चोल I, राजेन्द्र चोल I, कुलोत्तुंग I |
| चालुक्य वंश (बादामी) | 6वीं शताब्दी | पुलकेशिन I | वातापी (बादामी) | पुलकेशिन II, कीर्तिवर्मन I, विक्रमादित्य I |
| राष्ट्रकूट वंश | 8वीं शताब्दी | दंतिदुर्ग | मान्यखेत | कृष्ण I, अमोघवर्ष I, इंद्र III |

**पल्लव वंश**

- पल्लव वंश का उदय दक्षिण भारत में हुआ और इसकी प्रमुख राजधानी कांची (कांचीपुरम्) थी। पल्लवों का शासन मुख्यतः वर्तमान तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश के कुछ क्षेत्रों में रहा।
- पल्लवों का उत्कर्ष लगभग छठी से नौवीं शताब्दी ई. के बीच माना जाता है।

**प्रमुख शासक एवं उनके कार्य**

- सिंहविष्णु पल्लव वंश के प्रारंभिक शक्तिशाली शासकों में से एक था। उसने पल्लव शक्ति को मजबूत किया और कावेरी नदी तक अपने राज्य का विस्तार किया। किरातार्जुनीयम् के रचना करने वाले भारवि इसी के दरबार में रहते थे।
- महेंद्रवर्मन प्रथम (600–630 ई.) एक विद्वान एवं कला-प्रेमी शासक था। उसके समय में शैलकृत मंदिर स्थापत्य का विकास हुआ। उसने चट्टानों को काटकर मंदिर बनवाने की परंपरा को प्रोत्साहित किया। इसमें मत्तविलास प्रहसन नामक ग्रंथ की रचना की थी।
- नरसिंहवर्मन प्रथम (630–668 ई.) पल्लवों का सबसे शक्तिशाली शासक माना जाता है। उसने चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय को पराजित कर वातापी (बादामी) पर अधिकार किया, जिसके कारण उसे 'वातापीकोंड' की उपाधि मिली। उसके शासनकाल में मामल्लपुरम् (महाबलीपुरम्) का स्थापत्य विशेष रूप से विकसित हुआ।
- नरसिंहवर्मन द्वितीय 'राजसिंह' (700-728 ई.) के समय कैलासनाथ मंदिर, कांची तथा मामल्लपुरम् का शोर मंदिर जैसे महत्वपूर्ण संरचनात्मक मंदिरों का निर्माण हुआ।

**चोल वंश**

- चोल वंश दक्षिण भारत का एक शक्तिशाली राजवंश था, जिसका प्रमुख क्षेत्र तमिलनाडु तथा कावेरी नदी की घाटी था।
- विजयालय चोल को मध्यकालीन चोल वंश का संस्थापक माना जाता है, जिसने लगभग 9वीं शताब्दी में तंजावुर पर अधिकार किया।
- राजराज प्रथम (985–1014 ई.) चोल वंश का सबसे महत्वपूर्ण शासक था। उसने चोल साम्राज्य का व्यापक विस्तार किया और श्रीलंका के उत्तरी भाग पर अधिकार स्थापित किया।
- राजेंद्र प्रथम (1014–1044 ई.) ने अपने पिता की विस्तारवादी नीति को आगे बढ़ाया। उसने गंगा घाटी तक अभियान चलाया और गंगैकोंडचोलपुरम् को अपनी राजधानी बनाया।

**चोल प्रशासन**

- चोल प्रशासन में राजा सर्वोच्च अधिकारी था और उसके अधीन केंद्रीय प्रशासन कार्य करता था। साम्राज्य को विभिन्न प्रशासनिक इकाइयों में विभाजित किया गया था।
- प्रमुख रूप से मंडलम् → वलनाडु → नाडु → ग्राम प्रशासनिक क्रम था।
- चोल प्रशासन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक स्थानीय स्वशासन एवं ग्राम प्रशासन था। उत्तरमेरूर अभिलेख चोलों की स्थानीय स्वशासन व्यवस्था की जानकारी का प्रमुख स्रोत है।
- गाँव प्रशासन की मूल इकाई था। गाँवों में विभिन्न समितियाँ स्थानीय कार्यों का संचालन करती थीं। उर सामान्य गाँवों की सभा थी, जबकि सभा या महासभा ब्राह्मदेय गाँवों की संस्था थी।
- नगरम् व्यापारियों और नगरवासियों की संस्था थी। समितियाँ सिंचाई, कृषि, मंदिर, न्याय तथा सार्वजनिक कार्यों से संबंधित कार्य करती थीं।

### चोल स्थापत्य कला

- चोल काल में द्रविड़ शैली के मंदिर स्थापत्य का अत्यधिक विकास हुआ। इस काल के मंदिरों में विशाल विमान, ऊँचे गोपुरम, मंडप तथा उत्कृष्ट मूर्तिकला प्रमुख विशेषताएँ थीं।
- तंजावुर का बृहदेश्वर मंदिर, गंगैकोंडचोलपुरम् का मंदिर तथा दारासुरम का ऐरावतेश्वर मंदिर चोल स्थापत्य के प्रमुख उदाहरण हैं। ये तीनों मंदिर वर्तमान में यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में 'ग्रेट लिविंग चोला टेम्पल्स' के अंतर्गत शामिल हैं।
- चोल काल में कांस्य मूर्तिकला, विशेषकर नटराज की प्रतिमा, भी अत्यंत प्रसिद्ध हुई।

### प्राचीन भारत से संबंधित प्रमुख महत्वपूर्ण अभिलेख

| अभिलेख का नाम | विवरण |
|---|---|
| हाथीगुम्फा अभिलेख | कलिंग शासक खारवेल का यह अभिलेख ओडिशा के उदयगिरि की हाथीगुम्फा गुफा में उत्कीर्ण है। इसमें खारवेल की विजयों, जनकल्याणकारी कार्यों तथा धार्मिक गतिविधियों का वर्णन मिलता है। |
| प्रयाग प्रशस्ति (इलाहाबाद स्तंभ लेख) | समुद्रगुप्त की उपलब्धियों का वर्णन करने वाला यह अभिलेख उनके दरबारी कवि हरिषेण द्वारा रचित है। इससे गुप्त साम्राज्य के विस्तार और तत्कालीन राजनीतिक स्थिति की जानकारी मिलती है। |
| मेहरौली लौह स्तंभ अभिलेख | दिल्ली स्थित लौह स्तंभ पर अंकित यह अभिलेख चन्द्रगुप्त द्वितीय की विजयों और पराक्रम का वर्णन करता है। यह गुप्तकालीन धातुकर्म की उन्नति का भी प्रमाण है। |
| जूनागढ़ अभिलेख (रुद्रदामन) | रुद्रदामन प्रथम द्वारा संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण यह अभिलेख सुदर्शन झील के जीर्णोद्धार तथा उनकी विजयों का विवरण देता है। इसे संस्कृत का प्रथम दीर्घ अभिलेख माना जाता है। |
| नासिक अभिलेख | सातवाहन शासक गौतमी बलश्री से संबंधित यह अभिलेख महाराष्ट्र की नासिक गुफाओं में प्राप्त हुआ है। इससे व्यापार, प्रशासन तथा दान व्यवस्था की जानकारी मिलती है। |
| ऐहोल अभिलेख | चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय की उपलब्धियों का वर्णन करने वाला यह अभिलेख उनके दरबारी कवि रविकीर्ति द्वारा रचित है। इससे चालुक्य इतिहास की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। |
| मंदसौर अभिलेख | मालवा नरेश यशोवर्मन से संबंधित यह अभिलेख मालवा क्षेत्र के रेशम बुनकरों की श्रेणी (गिल्ड) तथा गुप्तकालीन आर्थिक और सामाजिक जीवन पर प्रकाश डालता है। |
| बेसनगर (हेलियोडोरस) स्तंभ अभिलेख | यूनानी राजदूत हेलियोडोरस द्वारा स्थापित यह स्तंभ वैष्णव धर्म के प्रसार का महत्वपूर्ण प्रमाण है। इसे गरुड़ स्तंभ भी कहा जाता है। |
| एरण अभिलेख | मध्य प्रदेश के एरण से प्राप्त यह अभिलेख गुप्तकालीन प्रशासन, धार्मिक जीवन तथा हूण आक्रमणों की जानकारी प्रदान करता है। |
| तालगुंड अभिलेख | कदंब वंश के इतिहास का प्रमुख स्रोत है। इसमें कदंब शासकों की उत्पत्ति, शासन व्यवस्था और उपलब्धियों का वर्णन मिलता है। |
| ग्वालियर अभिलेख | प्रतिहार शासक मिहिरभोज से संबंधित यह अभिलेख गुर्जर-प्रतिहार वंश के इतिहास और राजनीतिक स्थिति की जानकारी देता है। |
| भीतरी स्तंभ अभिलेख | स्कन्दगुप्त का यह अभिलेख हूणों पर उनकी विजय तथा गुप्त साम्राज्य की स्थिति का वर्णन करता है। |
| नानाघाट अभिलेख | सातवाहन वंश के इतिहास का महत्वपूर्ण स्रोत है। इसमें शासकों की वंशावली, यज्ञों तथा राजनीतिक उपलब्धियों का वर्णन मिलता है। |

## मध्यकालीन भारत

### भारत पर अरबों का आक्रमण

- भारत पर अरबों का पहला सफल आक्रमण 712 ईस्वी में हुआ। इस आक्रमण का नेतृत्व मुहम्मद बिन कासिम ने किया था। उस समय सिंध पर राजा दाहिर का शासन था।
- अरबों ने समुद्री व्यापार की सुरक्षा तथा इस्लाम के प्रसार के उद्देश्य से भारत पर आक्रमण किया।
- मुहम्मद बिन कासिम ने सिंध और मुल्तान पर विजय प्राप्त की तथा राजा दाहिर को पराजित कर दिया। इस विजय के बाद सिंध में अरब शासन स्थापित हुआ।

### महमूद गजनी

- महमूद गजनवी गजनी वंश का एक शक्तिशाली शासक था, जिसने 1000 ईस्वी से 1027 ईस्वी के बीच भारत पर लगभग 17 बार आक्रमण किए।
- उसका मुख्य उद्देश्य भारत की अपार धन-संपत्ति को लूटना तथा अपने साम्राज्य का विस्तार करना था।

- उसका सबसे प्रसिद्ध आक्रमण 1025 ईस्वी में गुजरात के सोमनाथ मंदिर (सौराष्ट्र) पर हुआ, जहाँ से उसने अत्यधिक धन-संपत्ति लूटी और मंदिर को नष्ट कर दिया।
- सुल्तान की उपाधि धारण करने वाला प्रथम शासक महमूद गजनी था।
- फिरदौसी, उत्बी एवं अलबरूनी महमूद गजनी के दरबार में रहते थे।

### मोहम्मद गौरी

- मोहम्मद गौरी गौर वंश का प्रसिद्ध शासक था, जिसने 12वीं शताब्दी के अंत में भारत पर अनेक आक्रमण किए।
- उसका मुख्य उद्देश्य भारत में स्थायी मुस्लिम शासन स्थापित करना था।
- 1192 ईस्वी में तराइन के द्वितीय युद्ध में उसने पृथ्वीराज चौहान को हराकर दिल्ली और अजमेर पर अधिकार कर लिया।
- इसके बाद उसने अपने सेनापति कुतुबुद्दीन ऐबक के माध्यम से भारत में तुर्क शासन की नींव रखी।

| युद्ध | वर्ष | किसके बीच हुआ | परिणाम / महत्व |
|---|---|---|---|
| तराइन का प्रथम युद्ध | 1191 ई. | मोहम्मद गौरी एवं पृथ्वीराज चौहान | पृथ्वीराज चौहान की विजय, मोहम्मद गौरी पराजित |
| तराइन का द्वितीय युद्ध | 1192 ई. | मोहम्मद गौरी एवं पृथ्वीराज चौहान | मोहम्मद गौरी की विजय, भारत में मुस्लिम शासन की नींव मजबूत |
| चंदावर का युद्ध | 1194 ई. | मोहम्मद गौरी एवं जयचंद (गाहड़वाल शासक) | जयचंद पराजित, कन्नौज पर गौरी का अधिकार |

## दिल्ली सल्तनत

### गुलाम वंश/मामलुक वंश (1206–1290 ई.):

- गुलाम वंश (मामलुक वंश) दिल्ली सल्तनत का प्रथम वंश था, जिसकी स्थापना 1206 ई. में हुई।
- कुतुबुद्दीन ऐबक ने दिल्ली सल्तनत की स्थापना की।
  प्रमुख शासकों का क्रम (Sequence) इस प्रकार है:
- कुतुबुद्दीन ऐबक → आराम शाह → इल्तुतमिश → रुक्नुद्दीन फिरोज → रजिया सुल्तान → बहराम शाह → अलाउद्दीन मसूद शाह → नसीरुद्दीन महमूद → गयासुद्दीन बलबन → कैकुबाद → कैमूर्स

### कुतुबुद्दीन ऐबक (1206–1210 ई.)

- दिल्ली सल्तनत की स्थापना की।
- लाहौर को राजधानी बनाया।
- **कुतुब मीनार** का निर्माण प्रारंभ कराया। कुतुबमीनार का नाम सूफी संत ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के नाम पर पड़ा।
- **कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद** का निर्माण।
- दानशीलता के कारण इसे "**लाख बख्श**" कहा गया

### इल्तुतमिश (1210-1236 ई.)

- इल्तुतमिश को दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
- यह इल्बरी जनजाति  तथा गुलाम वंश के अंतर्गत शम्शी राजवंश का संस्थापक था।
- सुल्तान बनने से पहले इल्तुतमिश बदायूं का गवर्नर था।
- इल्तुतमिश सुल्तान की उपाधि धारण करने वाला दिल्ली का पहला शासक था।
- इसने तुर्कान-ए-चहलगान नामक 40 अमीरों का समूह बनाया।
- शुद्ध अरबी सिक्के (चांदी का टंका एवं तांबा का जीतल) जारी करने वाला प्रथम सुल्तान इल्तुतमिश था।
- इक्ता व्यवस्था का प्रारंभ इल्तुतमिश के द्वारा किया गया। इक्ता सल्तनत काल में एक प्रकार की भूमि थी जो सैनिक एवं असैनिक अधिकारियों को उनके सेवाओं के बदले में दिया जाता था।
- इसने बगदाद के खलीफा से मान्यता प्राप्त की।

### रजिया सुल्तान (1236–1240 ई.)

- रज़िया सुल्तान सुल्तान इल्तुतमिश की पुत्री थी।
- वह दिल्ली सल्तनत की पहली और एकमात्र महिला शासिका थी जिसने सिंहासन संभाला।
- उसने उस समय की परंपरा के अनुसार पर्दा प्रथा (Purdah system) का त्याग किया।
- वह पुरुषों की तरह कुबा (कोट) और कुलाह (टोपी) पहनकर शासन कार्य करती थी।
- उसने एक अबीसीनियन अधिकारी मलिक जमालुद्दीन याकूत को अमीर-ए-आखूर (घुड़साल प्रमुख) नियुक्त किया।

**गयासुद्दीन बलबन (1266–1287 ई.)**

- इसने "**रक्त और लौह नीति**" अपनाई।
- तुर्कान-ए-चहलगान (40 अमीरों) दल का अंत किया।
- बलबन ने सैन्य व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए 'दीवान-ए-आरिज' नामक सैन्य संगठन बनाया।
- बलबन ने राज दरबार में सिजदा एवं पैबोस प्रथा की शुरुआत की।
- फारसी रीति-रिवाज पर आधारित नवरोज उत्सव को प्रारंभ किया।
- बलबन मंगोलों के आक्रमण से दिल्ली की रक्षा करने में सफल रहा था।

**खिलजी वंश (1290-1320 ई.)**

- सल्तनत कालीन राजवंशों में खिलजी वंश का कार्यकाल सबसे छोटा था। इस वंश ने दिल्ली पर 30 वर्षों तक शासन किया।
- जलालुद्दीन खिलजी **खिलजी वंश का संस्थापक** था।
- जलालुद्दीन खिलजी की हत्या उसके भतीजे और दामाद अलाउद्दीन खिलजी ने 1296 ई. में कर दी।

**अलाउद्दीन खिलजी (1296–1316 ई.)**

- अलाउद्दीन खिलजी जलालुद्दीन खिलजी का भतीजा और दामाद था।
- उसे उसकी सैन्य विजयों और साम्राज्य विस्तार के कारण "भारत का सिकंदर (Sikandar-e-Sani)" कहा जाता है।
- अलाउद्दीन खिलजी दिल्ली का पहला सुल्तान था जिसने भूमि की माप का आदेश दिया। इस भूमि माप प्रणाली को "मसाहत" कहा जाता था।
- उसने 1311 ई. में **अलाई दरवाजा (Alai Darwaza)** का निर्माण करवाया।

**अलाउद्दीन की बाजार व्यवस्था**

- उसने 'सराय-ए-अदल' नामक विशेष बाजार की स्थापना की, जिसे राज्य का संरक्षण प्राप्त था और जहाँ कपड़ों तथा अन्य वस्तुओं का व्यापार होता था।
- बाजार व्यवस्था को नियंत्रित करने के लिए 'सदर-ए-रियासत' नामक अधिकारी नियुक्त किया गया।
- अलाउद्दीन खिलजी को 'सार्वजनिक वितरण प्रणाली' का जनक भी कहा जाता है।

**अलाउद्दीन खिलजी का विजय अभियान:**

| **विजय अभियान** | **शासक (Ruler)** |
|---|---|
| गुजरात विजय (1298–99) | रायकर्ण |
| रणथंभौर पर आक्रमण (1301) | हम्मीर देव |
| चित्तौड़ विजय (1303) | राणा रतन सिंह |
| मालवा विजय (1305) | महलकदेव |
| देवगिरी अभियान (1307) | रामचंद्र देव |
| वारंगल विजय (1308) | प्रतापरुद्र देव |
| द्वारसमुद्र अभियान (1310) | वीर बल्लाल |

**तुगलक वंश (1320–1414 ई.):**

- तुगलक वंश ने 1320 ईस्वी से 1414 ईस्वी तक शासन किया।
- इस वंश की स्थापना गयासुद्दीन तुगलक ने की थी।

**गयासुद्दीन तुगलक (1320–1325 ई.)**

- इसका वास्तविक नाम **गाजी मलिक** था।
- उसने **तुगलकाबाद** को अपनी राजधानी बनाया।
- 1321 ई. में गयासुद्दीन तुगलक ने अपने पुत्र **जौना खाँ** को तेलंगाना के **वारंगल** के शासक **प्रतापरुद्र देव** के विरुद्ध अभियान पर भेजा, लेकिन यह अभियान असफल रहा।
- 1325 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।

**मुहम्मद बिन तुगलक (1325–1351 ई.)**

- इसका वास्तविक नाम जौना खाँ या उलूग खाँ था।
- वह तर्कशास्त्र, दर्शनशास्त्र, ज्योतिष, गणित, सुलेख (कैलीग्राफी) तथा भौतिक विज्ञान का विद्वान था।
- उसके शासनकाल में प्रसिद्ध यात्री **इब्न बतूता** भारत आया।
- दिल्ली सल्तनत में सबसे अधिक विद्रोह मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में हुए।
- कुछ इतिहासकारों ने उसे **निर्दयी, रक्तपिपासु और अधार्मिक** शासक कहा है।
- 1351 ई. में सिंध के **थट्टा** नामक स्थान के निकट उसकी मृत्यु हो गई।

**मुहम्मद बिन तुगलक के प्रमुख कार्य**

- **दीवान-ए-अमीर कोही** — कृषि विकास हेतु विभाग स्थापित किया गया।
- **राजधानी परिवर्तन** — राजधानी दिल्ली से देवगिरि स्थानांतरित की गई तथा उसका नाम दौलताबाद रखा गया।
- **सांकेतिक मुद्रा (1329 ई.)** — ताँबे और पीतल के सिक्कों को सोने-चाँदी के बराबर घोषित किया गया।
- **दोआब में कर वृद्धि** — गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र में भूमि कर बढ़ाया गया। अकाल के कारण किसानों ने विद्रोह कर दिया।

**फिरोज शाह तुगलक (1351–1388 ई.)**

- 1351 ईस्वी में फिरोज शाह तुगलक दिल्ली सल्तनत का शासक बना।
- फिरोज शाह तुगलक का राज्याभिषेक दो बार किया गया था।
- उसने **"फुतूहात-ए-फिरोजशाही"** नामक आत्मकथा लिखी।
- समकालीन इतिहासकारों ने फिरोज शाह तुगलक को मध्यकालीन भारत का **"प्रथम लोककल्याणकारी राज्य निर्माता तथा निरंकुश शासक"** कहा है।
- इतिहासकार **एलफिंस्टन** ने फिरोज शाह तुगलक को **"सल्तनत काल का अकबर"** कहा।
- फिरोज शाह तुगलक ने एक **अनुवाद विभाग** की स्थापना की थी, जिसका उद्देश्य हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदायों के लोगों को एक-दूसरे के विचार समझने में सहायता देना था।
- इसके शासनकाल में सिंचाई के लिए कई नहरों का निर्माण कराया गया, जिनमें 'राजवाही' और 'उलुगखानी' नहरें प्रसिद्ध हैं।
- उसने पहली बार ब्राह्मणों पर जजिया कर लगाया।
- फिरोज शाह तुगलक ने 'अधा' और 'बिख' नामक मिश्रित ताँबा-चाँदी के सिक्के चलाए।

**सैय्यद वंश (1414 ई. – 1451 ई.):**

- इसकी स्थापना 1414 ईस्वी में खिज्र खाँ ने की थी। इसने रैयत-ए- आला की उपाधि धारण की।
- तैमूर के आक्रमण (1398 ई.) के बाद दिल्ली सल्तनत बहुत कमजोर हो गई थी। इसी परिस्थिति का लाभ उठाकर खिज्र खाँ ने दिल्ली पर अधिकार किया और सैय्यद वंश की नींव रखी।
- इस वंश के शासक स्वयं को पैगंबर मुहम्मद का वंशज (सैय्यद) मानते थे।

| **शासक** | **शासनकाल** |
|---|---|
| खिज्र खाँ | 1414 – 1421 ई. |
| मुबारक शाह | 1421 – 1434 ई. |
| मुहम्मद शाह | 1434 – 1445 ई. |
| आलम शाह | 1445 – 1451 ई. |

**लोदी वंश (1451–1526 ई.):**

- लोदी वंश दिल्ली सल्तनत का अंतिम वंश था।
- यह एक अफगान वंश था जिसने सैय्यद वंश के बाद दिल्ली की सत्ता संभाली।
- लोदी वंश की स्थापना बहलोल लोदी ने 1451 ईस्वी में की। इस वंश ने लगभग 75 वर्षों तक शासन किया।
- इस वंश का अंत 1526 ईस्वी में प्रथम पानीपत के युद्ध में इब्राहिम लोदी की हार के साथ हुआ।

**बहलोल लोदी (1451–1489 ई.)**

- दिल्ली सल्तनत का पहला अफगान शासक था। उसने 1451 ईस्वी में दिल्ली की गद्दी प्राप्त कर लोदी वंश की स्थापना की।
- उसकी सबसे महत्वपूर्ण विजय जौनपुर के शासक महमूद शाह शर्की के विरुद्ध थी। इस विजय के बाद जौनपुर राज्य दिल्ली सल्तनत में मिला लिया गया।
- 1489 ईस्वी में उसकी मृत्यु के बाद उसका पुत्र निजाम खाँ गद्दी पर बैठा, जिसने "सुल्तान सिकंदर शाह लोदी" के नाम से शासन किया।

**सिकंदर लोदी (1489–1517 ई.)**

- यह बहलोल लोदी का पुत्र था, जिसका वास्तविक नाम निजाम खाँ था।
- सिकंदर लोदी ने 1504 ईस्वी में आगरा नगर की स्थापना की और अपने शासनकाल में राजधानी को दिल्ली से आगरा स्थानांतरित किया।
- कृषि व्यवस्था में सुधार के उद्देश्य से सिकंदर लोदी ने भूमि मापन के लिए "गज-ए-सिकंदरी" नामक पैमाने की शुरुआत की।
- इसने 'फरहंगे सिकंदरी' का फारसी में अनुवाद करवाया।
- इसके समय में लज्जत-ए- सिकंदरी की रचना हुई जोकि गायन से जुड़ा हुआ पुस्तक था।
- सिकंदर लोदी 'गुलरुखी' उपनाम से कविता लिखता था।

**इब्राहिम लोदी (1517–1526 ई.)**

- यह लोदी वंश का अंतिम शासक था।
- 1518 ईस्वी में इब्राहिम लोदी एवं महाराणा सांगा के मध्य खतौली का युद्ध हुआ जिसमें इब्राहिम की पराजय हुई।
- 1526 ईस्वी में बाबर और इब्राहिम लोदी के बीच प्रथम पानीपत का युद्ध हुआ। इस युद्ध में इब्राहिम लोदी पराजित हुआ और युद्धभूमि में मारा गया।
- उसकी मृत्यु के साथ दिल्ली सल्तनत तथा लोदी वंश का अंत हो गया और भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना हुई।

**दिल्ली सल्तनत केंद्रीय प्रशासन**

- मध्यकालीन भारत में संपूर्ण साम्राज्य को सूबा (प्रांत) में विभाजित किया गया था इसका प्रमुख 'सूबेदार' होता था।
- इनको आगे 'सरकार' कहा जाता था जिनका प्रमुख 'फौजदार' होता था।
- प्रत्येक सरकार को पुनः परगना में विभाजित किया जाता था जिसका अधिकारी 'शिकदार' कहलाता था।
- शासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम थी।

**दिल्ली सल्तनत प्रमुख विभाग**

| विभाग | संस्थापक |
|---|---|
| दीवान-ए-अर्ज (सैन्य विभाग) | बलबन |
| दीवान-ए-मुस्तखराज (राजस्व विभाग) | अलाउद्दीन खिलजी |
| दीवान-ए-रियासत (बाजार नियंत्रण विभाग) | अलाउद्दीन खिलजी |
| दीवान-ए-कोही (कृषि विभाग) | मुहम्मद बिन तुगलक |
| दीवान-ए-बंदगान (दास विभाग) | फिरोजशाह तुगलक |
| दीवान-ए-खैरात (दास विभाग) | फिरोजशाह तुगलक |
| दीवान-ए-इस्तिहाक (पेंशन विभाग) | फिरोजशाह तुगलक |
| दीवान-ए-वकूफ (व्यय विभाग) | जलालुद्दीन खिलजी |

**प्रमुख कर**

| कर | विवरण |
|---|---|
| जज़िया | गैर-मुसलमानों से लिया जाने वाला धार्मिक कर |
| ज़कात | मुसलमानों पर लगाया जाने वाला धार्मिक कर |
| उश्र | मुस्लिम किसानों की भूमि पर लगाया जाने वाला भूमि कर |
| खराज | गैर-मुस्लिम किसानों की भूमि पर लगाया जाने वाला भूमि कर |
| खम्स | युद्ध में लूट से प्राप्त धन |

**दिल्ली सल्तनतकालीन स्थापत्यकला**

| शासक | प्रमुख स्थापत्य / निर्माण कार्य |
|---|---|
| कुतुबुद्दीन ऐबक | कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद, ढाई दिन का झोपड़ा, कुतुब मीनार का निर्माण प्रारंभ |
| इल्तुतमिश | कुतुब मीनार का निर्माण पूर्ण, सुल्तानगढ़ी मकबरा |
| अलाउद्दीन खिलजी | अलाई दरवाजा, सीरी किला, हौज खास |
| गयासुद्दीन तुगलक | तुगलकाबाद |

**दिल्ली सल्तनतकालीन पुस्तक**

| पुस्तक | लेखक |
|---|---|
| किताब उल हिंद | अलबरूनी |
| रेहला | इब्नबतूता |
| तबकात-ए-नासिरी | मिनहाज- उस-सिराज |
| तारीख-ए-फिरोजशाही, फतवा-ए-जहांदारी | जियाउद्दीन बरनी |
| तुगलकनामा, खजायन उल फुतूह | अमीर खुसरो |
| ताजुल मासिर | हसन निजामी |
| तारीख-ए-मुबारकशाही | याहिया बिन अहमद सरहिंदी |
| तारीख-ए-यामिनी | उत्बी |
| फुतुहात-ए-फिरोजशाही | फिरोज शाह तुगलक |
| फुतूह-उस-सलातिन | इसामी |
| तबकात-ए-अकबरी | निजामुद्दीन |
| श्री कृष्ण विजय | मालधर बसु |
| हकाइक-ए-हिंदी | अब्दुल वाहिद बिलग्रामी |

**मुगल साम्राज्य**

- मुगल साम्राज्य की स्थापना 1526 ई. में बाबर ने पानीपत के प्रथम युद्ध में इब्राहिम लोदी को हराकर की थी।
- बाबर के बाद हुमायूँ, अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ और औरंगजेब प्रमुख मुगल शासक हुए। इनमें अकबर ने मुगल साम्राज्य को मजबूत और व्यापक आधार प्रदान किया, जबकि शाहजहाँ के काल में मुगल स्थापत्य कला अपने चरम पर पहुँची। औरंगजेब के शासनकाल में साम्राज्य का क्षेत्रफल सबसे अधिक विस्तृत हुआ।

## प्रमुख मुगल शासक

**बाबर (1526–1530)**

- बाबर भारत में मुगल साम्राज्य का संस्थापक था। बाबर मूलतः फरगना (वर्तमान उज्बेकिस्तान) का शासक था और वह तैमूर तथा चंगेज खान का वंशज था।
- वह पिता की ओर से तैमूर तथा माता की ओर से चंगेज खाँ का वंशज था।
- उसका वास्तविक नाम ज़हीरुद्दीन मुहम्मद बाबर था।
- 1494 ईस्वी में 11 वर्ष की आयु में वह अपने पिता उमर शेख मिर्जा के बाद फरगना का शासक बना।
- 26 दिसंबर 1530 ईस्वी को 40 वर्ष की आयु में आगरा में बाबर की मृत्यु हो गई।

| युद्ध का नाम | वर्ष | प्रतिद्वंदी | स्थान | महत्व |
|---|---|---|---|---|
| पानीपत का प्रथम युद्ध | 1526 | इब्राहिम लोदी (दिल्ली सल्तनत) | पानीपत (हरियाणा) | मुगल साम्राज्य की स्थापना<br>बाबर ने तोपों और तुलुगमा युद्ध नीति का प्रयोग किया |
| खानवा का युद्ध | 1527 | राणा सांगा (मेवाड़) | खानवा (राजस्थान) | बाबर ने "गाजी" (धर्मयोद्धा) की उपाधि धारण की एवं 'जिहाद' का नारा दिया। |
| चंदेरी का युद्ध | 1528 | मेदिनी राय (मालवा) | चंदेरी (मध्य प्रदेश) | इस युद्ध में मेदिनीराय को पराजय का सामना करना पड़ा |
| घाघरा का युद्ध | 1529 | अफगान सरदार (बिहार-बंगाल क्षेत्र) | घाघरा नदी (बिहार) | बाबर एक बार फिर विजयी हुआ। |

**हुमायूँ (1530–1540, 1555–1556):**

- हुमायूँ का जन्म 1508 ईस्वी में काबुल में हुआ था। वह बाबर का ज्येष्ठ पुत्र था।
- बाबर की मृत्यु के बाद 1530 ईस्वी में 22 वर्ष की आयु में हुमायूँ मुगल शासक बना।
- उसके तीन भाई थे — कामरान, अस्करी और हिंदाल।
- हुमायूँ की जीवनी "हुमायूननामा" कहलाती है, जिसे उसकी बहन गुलबदन बेगम ने लिखा था।
- हुमायूँ ने यमुना नदी के तट पर "दीनपनाह" नामक नगर की स्थापना की, जिसका अर्थ "धर्म का आश्रय" है।

| युद्ध | वर्ष | प्रतिद्वंदी | स्थान | महत्व |
|---|---|---|---|---|
| चौसा का युद्ध | 1539 | शेरशाह सूरी | चौसा (बिहार) | हुमायूँ की हार; मुगल शक्ति कमजोर हुई |
| कन्नौज (बिलग्राम) का युद्ध | 1540 | शेरशाह सूरी | कन्नौज (उत्तर प्रदेश) | हुमायूँ पूरी तरह पराजित; मुगल साम्राज्य से निष्कासन |

- 1540 ईस्वी में बिलग्राम (कन्नौज) के युद्ध में हुमायूँ शेर खाँ से पराजित हुआ। इसके बाद वह लगभग 15 वर्षों तक निर्वासन में रहा।
- 1555 ईस्वी में हुमायूँ ने सरहिंद के युद्ध में अफगानों को पराजित कर पुनः मुगल सिंहासन प्राप्त किया।
- इसके लगभग छह महीने बाद 1556 ईस्वी में पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिरने के कारण उसकी मृत्यु हो गई।

**शेरशाह सूरी (1540–1545 ई.);**

- शेरशाह सूरी का वास्तविक नाम फरीद खाँ था। उसका जन्म बिहार के सासाराम में हुआ था।
- एक शेर को मारने पर उसे "शेर खाँ" की उपाधि मिली।
- वह सूर वंश का संस्थापक था।
- 1540 ईस्वी में कन्नौज (बिलग्राम) के युद्ध में हुमायूँ को हराकर दिल्ली का शासक बना।
- उसने 1540 से 1545 ईस्वी तक शासन किया।
- सासाराम (बिहार) में उसका भव्य मकबरा स्थित है।
- उसने पुराना किला (दिल्ली) का निर्माण कार्य भी कराया।
- शेरशाह सूरी ने दिल्ली के पुराने किले में 'किला-ए-कुहना' मस्जिद का निर्माण कराया तथा रोहतासगढ़ किले का निर्माण भी करवाया।

**प्रशासनिक एवं आर्थिक सुधार**

- उसने भूमि की माप कराकर उचित भूमि-राजस्व व्यवस्था लागू की।
- किसानों को पट्टा (भूमि विवरण) और कबूलियत (कर समझौता) दी जाती थी।
- शेरशाह सूरी ने 'अशरफ' नामक स्वर्ण मुद्रा तथा 'रुपया' नामक चाँदी की मुद्रा जारी की।
- शेरशाह सूरी ने प्रसिद्ध ग्रांड ट्रंक रोड (GT Road) का निर्माण कराया।

**अकबर (1556–1605):**

- अकबर का जन्म 15 अक्टूबर 1542 ईस्वी को अमरकोट में राजा वीरसाल के महल में हुआ था।
- 14 फरवरी 1556 ईस्वी को पंजाब के गुरदासपुर जिले के कलानौर में उसका राज्याभिषेक किया गया।
- 1556 ईस्वी में पानीपत के द्वितीय युद्ध में अकबर ने हेमू को पराजित किया।
- 1562 ईस्वी में अकबर ने राजपूत राजकुमारी हरखा बाई से विवाह किया, जिन्हें बाद में "मरियम-उज़-ज़मानी" के नाम से जाना गया।
- 1605 ईस्वी में अकबर की मृत्यु हो गई और उसे आगरा के निकट सिकंदरा में दफनाया गया।

**अकबर द्वारा लड़े गए महत्वपूर्ण युद्ध**

| युद्ध | वर्ष | प्रतिद्वंदी | परिणाम |
|---|---|---|---|
| पानीपत का द्वितीय युद्ध | 1556 | हेमू | अकबर की निर्णायक जीत; मुगल सत्ता पुनः स्थापित |
| मालवा विजय | 1561 | बाज बहादुर | मालवा पर मुगल नियंत्रण स्थापित |
| आमेर | 1562 | राजा भारमल | स्वेच्छा से अधीनता स्वीकार की |
| गोंडवाना | 1564 | रानी दुर्गावती | आसिफ खा के नेतृत्व में गोंडवाना मुगल साम्राज्य का भाग हो गया |
| चित्तौड़ विजय | 1568 | राणा उदयसिंह | राजपूत शक्ति को बड़ा झटका; रणनीतिक किला मुगलों के अधीन |
| रणथंभौर विजय | 1569 | हाडा राजपूत | राजपूत क्षेत्रों पर मुगल नियंत्रण मजबूत हुआ |
| गुजरात विजय | 1571 | मुजफ्फर शाह | समृद्ध व्यापारिक क्षेत्र मुगलों के अधीन आया |
| हल्दीघाटी का युद्ध | 1576 | महाराणा प्रताप | मुगलों की जीत, लेकिन महाराणा प्रताप ने संघर्ष जारी रखा |
| बंगाल-बिहार विजय | 1576 | दाउद खाँ कर्रानी | पूर्वी भारत में मुगल शासन स्थापित हुआ |
| काबुल अभियान | 1581 | हाकिम मिर्जा | उत्तर-पश्चिम सीमा पर मुगल नियंत्रण मजबूत |
| कश्मीर | 1586 | युसुफ खां | कश्मीर मुगल सत्ता के अधीन आ गया |
| खानदेश | 1591 | अली खां | स्वेच्छा से अकबर की अधीनता स्वीकार |
| असीरगढ़ किला विजय | 1601 | मीरन बहादुर | दक्खन क्षेत्र में मुगल विस्तार और रणनीतिक किला प्राप्त |

**अकबर द्वारा किए गए महत्वपूर्ण कार्यों**

| वर्ष | महत्वपूर्ण कार्य |
|---|---|
| 1562 | दास प्रथा (दास व्यापार) का उन्मूलन |
| 1563 | तीर्थयात्रा कर समाप्त |
| 1564 | जज़िया कर की समाप्ति |
| 1571 | फतेहपुर सीकरी की स्थापना |
| 1575 | इबादतखाना की स्थापना (फतेहपुर सीकरी में) |
| 1579 | "महज़र" की घोषणा (धार्मिक मामलों में सर्वोच्च अधिकार) |
| 1580 | टोडरमल के द्वारा दशशाला प्रणाली की शुरुआत |
| 1582 | दीन-ए-इलाही धर्म की स्थापना |
| 1583 | अकबर द्वारा इलाही संवत की शुरुआत |

**मनसबदारी प्रथा**

- मनसबदारी प्रथा की शुरुआत अकबर ने की थी। "मनसब" का अर्थ पद या रैंक होता है।
- इस व्यवस्था के तहत साम्राज्य के सभी अधिकारी और सैन्य सरदारों को एक निश्चित पद (मनसब) दिया जाता था, जो उनकी स्थिति, वेतन और सैनिक जिम्मेदारियों को निर्धारित करता था।
- प्रत्येक मनसबदार को दो प्रकार की संख्याएँ दी जाती थीं— ज़ात (Zat) और सवार (Sawar)।
- ज़ात संख्या व्यक्ति की व्यक्तिगत स्थिति और वेतन को दर्शाती थी, जबकि सवार संख्या यह बताती थी कि उसे कितने घुड़सवार सैनिक रखने हैं।
- मनसबदारों को वेतन, नकद या जागीर के रूप में दिया जाता था।

| राजस्व / सिक्का | विवरण |
|---|---|
| दहसाला प्रणाली | अकबर द्वारा 1580 ई. में लागू; 10 वर्षों के उत्पादन और कीमतों के औसत के आधार पर कर निर्धारण |
| कानकूत प्रणाली | भूमि मापन और फसल के अनुमान के आधार पर राजस्व तय किया जाता था |
| जब्ती प्रणाली | अकबर के समय की प्रमुख भू-राजस्व प्रणाली; निश्चित दर पर कर वसूली, एकरूपता सुनिश्चित |
| मदद-ए-माश | विद्वानों और धार्मिक व्यक्तियों को दी जाने वाली कर-मुक्त भूमि |
| दाम | अकबर द्वारा जारी तांबे का सिक्का; 1 रुपया = 40 दाम |
| रुपया | चाँदी का प्रमुख सिक्का, मुगल काल की मुख्य मुद्रा |
| शाहरुख | बाबर द्वारा जारी चाँदी का सिक्का |

**अकबर कालीन प्रमुख विद्वान एवं चित्रकार**

- अकबर के दरबार के प्रसिद्ध विद्वानों को "नवरत्न" कहा जाता है।
- अबुल फज़ल ने "अकबरनामा" और "आइन-ए-अकबरी" की रचना की, जबकि फैजी एक प्रसिद्ध फारसी कवि था।
- अकबर के समय तुलसीदास और सूरदास जैसे भक्तिकालीन कवि भी प्रसिद्ध थे।
- संगीत के क्षेत्र में तानसेन अकबर के दरबार के सबसे प्रसिद्ध संगीतज्ञ थे। उनका प्रारंभिक नाम रामतनु पांडेय था।
- अकबर ने उनकी प्रतिभा से प्रभावित होकर उन्हें "कंठाभरण वाणीविलास" की उपाधि प्रदान की।
- बैजू बावरा भी उस समय के प्रसिद्ध संगीतकार थे। चित्रकला के क्षेत्र में दसवंत और बसावन अकबर काल के महान चित्रकार थे।
- इनके अतिरिक्त मीर सैयद अली और अब्दुस्समद जैसे फारसी कलाकारों ने भी मुगल चित्रकला के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

**जहाँगीर (1605–1627):**

- जहाँगीर का जन्म 30 अगस्त 1569 ईस्वी में हुआ था। उसका प्रारंभिक नाम सलीम था।
- वह अकबर और हरखा बाई (मरियम-उज़-ज़मानी) का पुत्र था। अकबर की मृत्यु के बाद 1605 ईस्वी में सलीम ने "जहाँगीर" अर्थात "विश्व विजेता" की उपाधि धारण कर मुगल सिंहासन प्राप्त किया।
- 1611 ईस्वी में जहाँगीर ने अफगान विधवा मेहरुन्निसा से विवाह किया। बाद में उसने उसे "नूरमहल" (महल की रोशनी) तथा "नूरजहाँ" (विश्व की रोशनी) की उपाधियाँ प्रदान कीं।
- जहाँगीर के शासनकाल को "मुगल चित्रकला का स्वर्ण युग" कहा जाता है।
- उसके दरबार के प्रसिद्ध चित्रकार थे – उस्ताद मंसूर और अबुल हसन, जिन्होंने प्राकृतिक दृश्य, पक्षी और दरबारी जीवन के सुंदर चित्र बनाए।
- कश्मीर में सुंदर बागों का निर्माण हुआ, जिनमें शालीमार बाग और निशात बाग (Srinagar) प्रसिद्ध हैं।
- पंजाब के जालंधर में सराय नूरमहल (Sarai Nurmahal) का निर्माण करवाया गया, जो यात्रा करने वाले लोगों के लिए विश्राम स्थल था।

**शाहजहाँ (1628–1658):**

- शाहजहाँ का जन्म 1593 ईस्वी में लाहौर में हुआ था। उसका बचपन का नाम "खुर्रम" था।
- 1612 ईस्वी में उसने अर्जुमंद बानो बेगम से विवाह किया, जो नूरजहाँ के भाई आसफ खाँ की पुत्री थी। बाद में अर्जुमंद बानो बेगम "मुमताज़ महल" के नाम से प्रसिद्ध हुई।
- शाहजहाँ के शासनकाल को "मुगल स्थापत्य कला का स्वर्ण युग" कहा जाता है।
- शाहजहाँ को "निर्माताओं का राजकुमार (Prince of Builders)" कहा जाता है।
- ताजमहल (आगरा) का निर्माण उसने 1631 ई. में अपनी पत्नी मुमताज महल की स्मृति में शुरू करवाया और इसे 1653 ई. में पूरा किया गया। यह प्रेम का विश्व प्रसिद्ध प्रतीक है।
- उसने 1638 ई. में राजधानी को आगरा से दिल्ली स्थानांतरित करके शाहजहाँनाबाद (Shahjahanabad) की स्थापना की।
- लाल किला (दिल्ली) का निर्माण 1639 ई. में शुरू हुआ और इसे 1648 ई. में पूरा किया गया। यह मुगल सत्ता का प्रमुख केंद्र था।
- 1658 ईस्वी में औरंगज़ेब ने अपने पिता शाहजहाँ को बंदी बना लिया। शाहजहाँ को आगरा किले में कैद रखा गया, जहाँ उसकी पुत्री जहाँआरा भी उसके साथ रही। लगभग आठ वर्षों तक कैद में रहने के बाद 1666 ईस्वी में शाहजहाँ की मृत्यु हो गई।

**औरंगजेब (1658–1707):**

- शाहजहाँ के शासनकाल के अंतिम वर्ष उसके चारों पुत्रों के बीच उत्तराधिकार के भीषण संघर्ष से प्रभावित रहे।
- उसके पुत्र दारा शिकोह, शुजा (बंगाल का गवर्नर), औरंगज़ेब (दक्कन का गवर्नर) तथा मुराद बख्श (मालवा और गुजरात का गवर्नर) सत्ता प्राप्ति के लिए आपस में संघर्ष करने लगे।
- इस उत्तराधिकार युद्ध में अंततः औरंगज़ेब विजयी हुआ तथा उसने मुगल सिंहासन पर अधिकार कर लिया।

**उत्तराधिकार युद्ध**

| युद्ध | तिथि | प्रतिद्वंद्वी | स्थान | परिणाम |
|---|---|---|---|---|
| बहादुरगढ़ का युद्ध | 14 फरवरी, 1658 ई. | दारा शिकोह एवं शाह शुजा | बनारस | दारा शिकोह की विजय |
| धरमत का युद्ध | 15 अप्रैल, 1658 ई. | औरंगजेब एवं मुराद बख्श बनाम जसवंत सिंह | उज्जैन | औरंगजेब एवं मुराद बख्श की विजय |
| सामूगढ़ का युद्ध | 29 मई, 1658 ई. | औरंगजेब एवं मुराद बख्श बनाम दारा शिकोह | आगरा | औरंगजेब एवं मुराद बख्श की विजय |
| देवराई का युद्ध | 12–13 अप्रैल, 1659 ई. | औरंगजेब बनाम दारा शिकोह | अजमेर | औरंगजेब की निर्णायक विजय |

- औरंगजेब ने 1658 में अपने पिता शाहजहाँ को कैद कर लिया और अपने बड़े भाई दारा शिकोह को समूगढ़ के युद्ध (Battle of Samugarh, 1658) में हराकर स्वयं मुगल सम्राट बन गया।
- उसने "आलमगीर (Alamgir)" की उपाधि धारण की।
- औरंगजेब को "जिंदा पीर (Zinda Pir)" या "जीवित संत" भी कहा जाता था, ।
- 1686 में उसने बीजापुर को मुगल साम्राज्य में मिला लिया।
- 1675 में उसने 9वें सिख गुरु गुरु तेग बहादुर को दिल्ली के चांदनी चौक में इस कारण फांसी दी क्योंकि उन्होंने इस्लाम स्वीकार करने से इनकार कर दिया था।
- 1695 में इटली के यात्री जेमेली कैरेरी (Gemelli Careri) ने उसके शासनकाल में भारत की यात्रा की।
- औरंगजेब की मृत्यु 1707 ई. में अहमदनगर (दक्खन) में हुई। उसका मकबरा महाराष्ट्र के दौलताबाद में स्थित है।

**दारा शिकोह**

- शाहजहाँ के चार पुत्रों में सबसे बड़े थे और उन्हें सबसे अधिक शिक्षित तथा योग्य माना जाता था।
- इतिहासकार स्टैनली लेनपूल ने उनकी उदारता और सहिष्णुता के कारण उन्हें 'लघु अकबर' की उपाधि दी।
- शाहजहाँ ने उन्हें 'शाह बुलंद इक़बाल' की उपाधि प्रदान की थी।
- दारा शिकोह एक महान विद्वान और लेखक भी थे, जिनकी प्रमुख कृति Majma-ul-Bahrain है, जिसमें हिंदू और इस्लामी विचारधाराओं के सामंजस्य का वर्णन मिलता है।
- इसके अलावा उन्होंने उपनिषदों का फ़ारसी में अनुवाद 'सिर्र-ए-अकबर' Sirr-e-Akbar के नाम से करवाया।

**मुगलकालीन प्रशासन से संबंधित प्रमुख अधिकारी**

| अधिकारी | कार्य |
|---|---|
| वकील-ए-मुतलक | सम्राट के बाद सबसे महत्वपूर्ण अधिकारी; शासन कार्यों का संचालन करता था |
| वज़ीर / दीवान | राजस्व और वित्त विभाग का प्रमुख; शाही खजाने का प्रबंधन और लेखा-जोखा देखता था |
| मीर बख्शी | सेना का प्रमुख अधिकारी; मनसबदारों की नियुक्ति, सैनिकों की भर्ती, वेतन और संख्या की जांच करता था; 'सरख़त' पर हस्ताक्षर कर वेतन निर्धारित करता था |
| मीर समन | शाही परिवार/दरबार की आवश्यकताओं और घरेलू व्यवस्था की देखरेख करता था |
| काजी-उल-कुजात | न्याय विभाग का प्रमुख |
| मीर-ए-आतिश | तोपखाने और शाही हथियारों का प्रमुख अधिकारी |
| मुहतसिब | शरीयत के अनुसार जनता के आचरण और नैतिक नियमों की निगरानी करता था |
| सद्र-उस-सुदूर | धार्मिक कार्यों और दान विभाग का प्रमुख |
| मीर-ए-बहर | जल सेना एवं शाही नौकाओं का प्रधान |
| मुस्तौफी | राज्य के आय-व्यय की जांच करने वाला मुख्य लेखाकार |
| कोतवाल | राज्य/शहर में आंतरिक शांति और सुरक्षा की व्यवस्था बनाए रखता था |
| शाहबंदर | बंदरगाहों के प्रशासन की देखरेख करने वाला |
| सफिर | पड़ोसी राज्यों के राजदूत |

**मुगलकालीन भूमि का प्रकार**

| भूमि का प्रकार | विवरण |
|---|---|
| पोलज | हर वर्ष जोती/खेती की जाने वाली भूमि |
| परती | दो वर्षों में एक बार खेती की जाने वाली भूमि |
| चाचर | तीन या चार वर्षों में एक बार खेती की जाने वाली भूमि |
| बंजर | पाँच या उससे अधिक वर्षों तक अनुपजाऊ या बिना खेती वाली भूमि |

**मध्यकालीन मुद्राएं**

| मुद्रा | शासक | धातु |
|---|---|---|
| मोहर | अकबर | सोने का सिक्का |
| शंसब | अकबर | सोने का सिक्का |
| इलाही | अकबर | सोने का सिक्का |
| रुपया | शेरशाह सूरी | चाँदी का सिक्का |
| दाम | अकबर | ताँबे का सिक्का |
| जीतल | इल्तुतमिश | ताँबे का सिक्का |
| निसार | जहांगीर | ताँबे का सिक्का |

**मुगलकालीन साहित्य को एवं उनके रचनाकार**

| साहित्य / ग्रंथ | रचनाकार (लेखक) |
|---|---|
| बाबरनामा (तुजुक-ए-बाबरी) | बाबर |
| हुमायूंनामा | गुलबदन बेगम |
| अकबरनामा (आईन-ए-अकबरी) | अबुल फ़ज़ल |
| तारीख-ए-अकबरी | आरिफ कन्धारी |
| पादशाहनामा | अब्दुल हमीद लाहौरी |
| तुजुक-ए-जहाँगीरी (जहाँगीरनामा) | जहाँगीर |
| मुन्तखब-उत-तवारीख | बदायूंनी |
| शाहज़हां नामा | इनायत खां |
| तारीख-ए-फरिश्ता | मुहम्मद कासिम फरिश्ता |

| | |
|---|---|
| रियाज़-उस-सलातीन | गुलाम हुसैन सलीम |
| फुतुहात-ए-आलमगीरी | ईश्वरदास नागर |
| चहार चमन | चन्द्रभान |
| मसीर-ए-आलमगीरी | साकी मुस्तैद खान |
| मज्म-उल-बहरीन | दारा शिकोह |

**मुगलकालीन स्थापत्य कला**

| **स्थापत्य कला / इमारत** | **किसने बनवाया** |
|---|---|
| हुमायूँ का मकबरा | अकबर |
| आगरा किला | अकबर |
| फतेहपुर सीकरी | अकबर |
| बुलंद दरवाजा | अकबर |
| जामा मस्जिद (फतेहपुर सीकरी) | अकबर |
| इतमाद-उद-दौला का मकबरा | जहाँगीर |
| शालीमार बाग | जहाँगीर |
| ताजमहल | शाहजहाँ |
| लाल किला | शाहजहाँ |
| जामा मस्जिद (दिल्ली) | शाहजहाँ |
| मोती मस्जिद (आगरा) | शाहजहाँ |

**मुगल काल में आए प्रमुख विदेशी यात्री**

| **विदेशी यात्री** | **शासक** |
|---|---|
| एंटोनियो मोंसेराट (पुर्तगाल), रा ॅल्फ-फिंच (ब्रिटेन) | अकबर |
| विलियम हॉकिन्स (ब्रिटेन), सर थॉमस रो (ब्रिटेन), पित्रा वेले (इटली) | जहाँगीर |
| फ्रांस्वा बर्नियर (फ्रांस), निकोलो मनुची (इटली) | औरंगजेब |
| जीन बैप्टिस्ट टैवर्नियर(फ्रांस) , पीटर मुंडी (ब्रिटेन) | शाहजहाँ |

**मुगल कालीन प्रमुख मकबरे**

| **मकबरा** | **स्थान** |
|---|---|
| बाबर का मकबरा | काबुल |
| हुमायूँ का मकबरा | दिल्ली |
| शेरशाह सूरी का मकबरा | सासाराम (बिहार) |
| अकबर का मकबरा | सिकंदरा |
| जहाँगीर का मकबरा | लाहौर |
| एतमादुद्दौला का मकबरा | आगरा |
| बीबी का मकबरा | औरंगाबाद |

**विजयनगर साम्राज्य**

| **वंश** | **कार्यकाल** | **संस्थापक** | **अंतिम शासक** |
|---|---|---|---|
| संगम वंश | 1336 – 1485 ई. | हरिहर प्रथम एवं बुक्का राय प्रथम | विरुपाक्ष द्वितीय |
| सालुव वंश | 1485 – 1505 ई. | सालुव नरसिंह | नरसिंह राय द्वितीय |
| तुलुव वंश | 1505 – 1570 ई. | वीर नरसिंह | सदाशिव राय |
| अराविडु वंश | 1570 – 1649 ई. | तिरुमल देव राय | श्रीरंग तृतीय |

**शासन क्रम निम्नानुसार है:-** संगम वंश> सालुव वंश >तुलुव वंश >अराविडु वंश।

- विजयनगर साम्राज्य की स्थापना 1336 ई. में हरिहर एवं बुक्का नामक दो भाइयों ने की थी। हरिहर एवं बुक्का दोनों वारंगल के काकतीय वंश के सामंत थे।

- 1356 ईस्वी में बुक्का प्रथम विजयनगर का शासक बना। इसने 'वेदमार्ग प्रतिष्ठापक' की उपाधि धारण की।
- मदुरै के राजा के विरुद्ध सफल अभियान में बुक्का प्रथम के पुत्र कंपन की विशेष भूमिका थी। कंपन की पत्नी गंगा देवी ने अपने पति के इस पराक्रम का वर्णन 'मदुरै विजयम' नामक पुस्तक में की।
- संगम वंश के शासक विरुपाक्ष द्वितीय की मृत्यु के उपरांत सालुव वंश की स्थापना हुई।

**कृष्णदेव राय**

- विजयनगर साम्राज्य के महान शासक कृष्णदेव राय का संबंध तुलुव वंश से था। कृष्णदेव राय 1509 ई.में विजयनगर के शासक बने।
- बाबर ने अपनी आत्मकथा बाबरनामा में कृष्णदेव राय को तत्कालीन भारत का सर्वश्रेष्ठ शासक कहा है।
- कृष्णदेव राय के शासनकाल को 'तेलुगु साहित्य का स्वर्ण युग' कहा जाता है।
- कृष्णदेव राय ने आंध्रभोज, अभिनव भोज एवं आंध्र पितामह आदि उपाधि को धारण किया।
- कृष्णदेव राय ने तेलुगु भाषा में 'आमुक्तमाल्यद' नामक पुस्तक की रचना की। उषा परिणय नामक पुस्तक की रचना कृष्ण देवराय ने की थी।
- कृष्णदेव राय के दरबार में तेलुगु साहित्य के आठ सर्वश्रेष्ठ कवि रहते थे जिन्हें अष्टदिग्गज कहा जाता था। इनमें से एक थे तेनालीराम रामकृष्ण जिन्होंने पांडुरंग महात्म्यम् की रचना की।
- डोमिंगो पायस एवं बारबोसा दोनों पुर्तगाली यात्री थे। दोनों ने कृष्णदेव राय के शासनकाल के दौरान 1515-1516 ई.के आस-पास विजयनगर की यात्रा की थी।
- कृष्णदेव राय की मृत्यु के उपरांत उसका सौतेला भाई अच्युत देवराय शासक बना।

**तालीकोटा या राक्षसी तंगड़ी का युद्ध**

- यह युद्ध 1565 ई. में विजय नगर एवं बहमनी सुल्तानों द्वारा निर्मित महासंघ के मध्य हुआ।
- इस युद्ध में विजय नगर का नेतृत्व राम राय ने किया था तथा बहमनी राज्य द्वारा निर्मित संयुक्त मोर्चे का नेतृत्व अली आदिलशाह द्वारा किया गया था।
- इस युद्ध में राम राय की हार हुई थी।

**प्रशासन**

- मंत्रीपरिषद के प्रमुख अधिकारी को 'महाप्रधानी' कहा जाता था।
- विजयनगर के प्रशासन में रायसम एक सचिव होता था, जिसका मुख्य कार्य राजा के आदेशों को लिपिबद्ध करना था।
- कर्णिकम, लेखाधिकारी का कार्य करता था।
- विजयनगर साम्राज्य में 50 ग्रामों के समूह को 'मेलाग्राम' कहा जाता था। 'मेलाग्राम', उर/ग्राम से मिलकर बनती थी जोकि प्रशासन की सबसे छोटी इकाई थी।
- विजयनगर साम्राज्य में ग्रामीण प्रशासन के संचालन के लिए प्रत्येक गांव को एक स्वतंत्र इकाई के रूप में संगठित किया गया।
- इनके संचालन के लिए 12 अधिकारियों की नियुक्ति की गई, जिसे सामूहिक रूप से आयंगर कहा जाता था। इनकी नियुक्ति राज्य के द्वारा की जाती थी तथा इन्हें वेतन के बदले कर-मुक्त भूमि प्रदान की जाती थी।
- विजयनगर के सेनानायकों को नायक कहा जाता था। इन्हें इनकी सेवा के बदले अमरम (भूमि का सबसे बड़ा वर्ग) नामक भूमि प्रदान की जाती थी।
- 'कदमई' एवं 'कनिक्कई' विजयनगर साम्राज्य में प्रचलित कर के प्रकार है। 'शिष्ट' नामक कर राज्य की आय का प्रमुख स्रोत था।

**विजयनगर साम्राज्य के दौरान वहां आए प्रमुख यात्री**

| यात्री | देश | शासक |
|---|---|---|
| निकोलो कॉण्टी | इटली | देवराय प्रथम |
| अब्दुर रज्जाक | फारस | देवराय द्वितीय |
| डोमिंगो पायस | पुर्तगाल | कृष्णदेव राय |
| बारबोसा | पुर्तगाल | कृष्णदेव राय |
| फर्नाओ नूनीज | पुर्तगाल | अच्युतदेव राय |

**विजयनगर साम्राज्य की कला एवं स्थापत्य**

- विजयनगर की चित्रकला शैली लेपाक्षी शैली के नाम से जाना जाता था।
- विजयनगर में नृत्य एवं संगीत की मिश्रित शैली को यक्षिणी शैली कहा जाता था।
- कृष्ण देवराय द्वारा निर्मित विट्ठल स्वामी मंदिर हम्पी में स्थित एक प्राचीन स्मारक है। यह मंदिर तुंगभद्रा नदी के तट के पास स्थित है।

**बहमनी वंश**

- बहमनी साम्राज्य की स्थापना 1347 ई. में अलाउद्दीन हसन बहमन शाह (हसन गंगू) ने की थी। इसके विघटन के बाद दक्कन में कई स्वतंत्र सल्तनतों का उदय हुआ, जिन्हें दक्कन की पाँच सल्तनतें कहा जाता है।

| राज्य/सल्तनत | राजवंश | संस्थापक | स्थापना |
|---|---|---|---|
| बीजापुर | आदिलशाही वंश | यूसुफ आदिल शाह | 1489 ई. |
| अहमदनगर | निजामशाही वंश | मलिक अहमद निजाम शाह | 1490 ई. |
| बरार | इमादशाही वंश | फतहुल्लाह इमादशाह | 1490 ई. |
| गोलकुंडा | कुतुबशाही वंश | सुल्तान कुली कुतुबशास | 1512 ई. |
| बीदर | बरीदशाही वंश | आमिर अली बरीद | 1527 ई. |

**मराठा साम्राज्य**

- मराठा साम्राज्य भारतीय इतिहास का एक शक्तिशाली हिंदू साम्राज्य था, जिसकी स्थापना 17वीं शताब्दी में छत्रपति शिवाजी महाराज ने की थी।
- मराठा शक्ति का उदय दक्कन क्षेत्र में हुआ और धीरे-धीरे यह भारत के विशाल भूभाग तक फैल गया।
- शिवाजी ने स्वराज्य की स्थापना, कुशल प्रशासन, सुदृढ़ सैन्य संगठन तथा प्रभावी गुरिल्ला युद्ध नीति के माध्यम से मराठा साम्राज्य की नींव रखी।
- औरंगजेब के काल में मराठों ने मुगल साम्राज्य को सबसे बड़ी चुनौती दी।

**शिवाजी महाराज का जीवन परिचय**

- छत्रपति शिवाजी महाराज का जन्म 19 फरवरी 1627 (कुछ स्रोतों में 1630) को महाराष्ट्र के शिवनेरी दुर्ग में हुआ था। उनके पिता शाहजी भोंसले बीजापुर के दरबार में सरदार थे तथा माता जीजाबाई धार्मिक एवं राष्ट्रभक्त महिला थीं।
- दादाजी कोंडदेव के संरक्षण में शिवाजी ने प्रशासन और युद्धकला का प्रशिक्षण प्राप्त किया।
- शिवाजी ने युवावस्था में तोरणा, राजगढ़, पुरंदर तथा कोंडाणा जैसे किलों पर अधिकार करके स्वतंत्र राज्य की स्थापना का अभियान प्रारंभ किया।
- उन्होंने "हिंदवी स्वराज्य" की अवधारणा को मूर्त रूप दिया। 1674 ई. में रायगढ़ में उनका राज्याभिषेक हुआ और वे "छत्रपति" बने।
- 3 अप्रैल 1680 को उनका निधन हो गया।

**अष्टप्रधान परिषद**

- शिवाजी ने प्रशासन चलाने के लिए अष्टप्रधान परिषद की स्थापना की थी।

| पद | कार्य |
|---|---|
| पेशवा | प्रधानमंत्री एवं शासन का प्रमुख |
| अमात्य | वित्त एवं लेखा विभाग |
| वाकियानवीस | राजकीय अभिलेख एवं गुप्त सूचनाएँ |
| सचिव | सरकारी पत्राचार |
| सुमंत (दबीर) | विदेश मंत्री |
| सर्र-ए-नौबत | सेना का प्रमुख |
| न्यायाधीश | न्याय व्यवस्था |
| पंडितराव | धार्मिक एवं दान संबंधी कार्य |

**शिवाजी के प्रमुख उत्तराधिकारी**

| उत्तराधिकारी | शासनकाल | प्रमुख विशेषताएँ |
|---|---|---|
| शंभाजी | 1681–1689 ई. | शिवाजी के ज्येष्ठ पुत्र, औरंगजेब से संघर्ष, 1689 में मुगलों द्वारा मृत्युदंड |
| राजाराम | 1689–1700 ई. | शिवाजी के छोटे पुत्र, जिन्होंने शंभाजी के पुत्र शाहू के प्रतिनिधि के रूप में कार्य किया |
| ताराबाई | 1700–1707 ई. (संरक्षिका) | राजाराम की पत्नी, मराठा प्रतिरोध का सफल नेतृत्व |
| शाहूजी | 1708–1749 ई. | मराठा साम्राज्य का पुनर्गठन, पेशवाओं का प्रभाव बढ़ा |

**मराठा काल में पेशवा**

- मराठा प्रशासन में पेशवा का पद मूलतः प्रधानमंत्री का था। छत्रपति शिवाजी महाराज की अष्टप्रधान व्यवस्था में पेशवा महत्वपूर्ण पदाधिकारी था।
- प्रारंभ में पेशवा छत्रपति के अधीन कार्य करता था, लेकिन 18वीं शताब्दी में पेशवाओं की शक्ति इतनी बढ़ गई कि वे मराठा साम्राज्य के वास्तविक शासक बन गए।
- छत्रपति का पद धीरे-धीरे नाममात्र का रह गया और प्रशासन का प्रमुख केंद्र पूना (पुणे) बन गया।

| पेशवा | कार्यकाल | प्रमुख तथ्य |
|---|---|---|
| बालाजी विश्वनाथ | 1713–1720 ई. | पेशवा पद को प्रभावशाली बनाया; मराठा शक्ति के विस्तार की नींव रखी। |
| बाजीराव प्रथम | 1720–1740 ई. | मराठा साम्राज्य का व्यापक विस्तार; पालखेड़ा के युद्ध (1728) में निजाम को हराया। |
| बालाजी बाजीराव | 1740–1761 ई. | इनके कार्यकाल में 1761 ई. का पानीपत का तृतीय युद्ध हुआ, जिसमें मराठों को अहमद शाह अब्दाली से पराजय मिली। |
| माधवराव प्रथम | 1761–1772 ई. | इसने 1763 में निजाम को एवं 1771 में मैसूर के हैदर अली को पराजित किया |
| नारायणराव | 1772–1773 ई. | अल्पकालीन कार्यकाल; 1773 ई. में हत्या कर दी गई। |
| माधवराव नारायण (सवाई माधवराव) | 1774–1796 ई. | नाना फड़नवीस के नेतृत्व में मराठा राजनीति को मजबूती मिली। |
| बाजीराव द्वितीय | 1796–1818 ई. | अंतिम पेशवा; 1818 ई. में पेशवा पद समाप्त हुआ और मराठा शक्ति का पतन हुआ। |

**उत्तरकालीन मुगल शासक**

| शासक का नाम | कार्यकाल |
|---|---|
| बहादुर शाह प्रथम (शाहे-बेखबर) | 1707 – 1712 ई. |
| जहाँदार शाह (लम्पट मूर्ख) | 1712 – 1713 ई. |
| फर्रुख़सियर (घृणित कायर) | 1713 – 1719 ई. |
| मुहम्मद शाह (रंगीला) | 1719 – 1748 ई. |
| अहमद शाह बहादुर | 1748 – 1754 ई. |
| आलमगीर द्वितीय (अजीजुद्दीन) | 1754 – 1759 ई. |
| शाह आलम द्वितीय (अली गौहर) | 1760 – 1806 ई. |
| अकबर शाह द्वितीय | 1806 – 1837 ई. |
| बहादुर शाह द्वितीय (बहादुर शाह ज़फर) | 1837 – 1857 ई. |

**मुगलों के से स्वतंत्र होने वाले राज्य**

| राज्य का नाम | संस्थापक |
|---|---|
| अवध | सआदत खान (बुरहान-उल-मुल्क) |
| हैदराबाद | निज़ाम-उल-मुल्क आसफ जाह प्रथम |
| बंगाल | मुर्शिद कुली खाँ |
| रुहेलखंड | अली मुहम्मद खाँ |
| कर्नाटक | सआदतुल्लाह खाँ |
| भरतपुर (जाट राज्य) | चूडामन एवं बदन सिंह |

## आधुनिक भारत

### भारत में यूरोपियों का आगमन

- 15वीं शताब्दी के अंत में यूरोपीय देशों ने नए समुद्री मार्गों की खोज शुरू की।
- उनका मुख्य उद्देश्य भारत के मसालों, रेशम, कपास तथा अन्य बहुमूल्य वस्तुओं के व्यापार पर अधिकार प्राप्त करना था।
- समुद्री मार्ग की खोज के बाद सबसे पहले पुर्तगाली भारत आए, जिनके बाद डच, अंग्रेज, डेनिश और फ्रांसीसी आए।

| यूरोपीय शक्ति | भारत में आगमन | प्रथम फैक्ट्री | प्रमुख विशेषताएँ |
|---|---|---|---|
| पुर्तगाली | 1498 ई. | कोचीन | भारत आने वाले प्रथम यूरोपीय |
| डच | 1605 ई. | मसूलीपट्टनम | मसाला व्यापार में रुचि |
| अंग्रेज | 1608 ई. | सूरत | बाद में भारत पर शासन स्थापित |
| डेनिश | 1620 ई. | त्रांक्वेबार | व्यापार सीमित रहा |
| फ्रांसीसी | 1664 ई. | सूरत | अंग्रेजों के प्रमुख प्रतिद्वंद्वी |

**प्लासी का युद्ध (1757)**

- प्लासी का युद्ध 23 जून 1757 ई. को बंगाल में प्लासी नामक स्थान पर अंग्रेज़ी ईस्ट इंडिया कंपनी और बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला के बीच लड़ा गया।
- अंग्रेज़ी सेना का नेतृत्व रॉबर्ट क्लाइव ने किया। इस युद्ध में नवाब के सेनापति मीर जाफर तथा अन्य अधिकारियों ने विश्वासघात किया, जिसके कारण सिराजुद्दौला पराजित हुए।
- युद्ध के बाद मीर जाफर को बंगाल का नवाब बनाया गया।
- प्लासी के युद्ध ने भारत में अंग्रेज़ी सत्ता की नींव रखी तथा ईस्ट इंडिया कंपनी को बंगाल के राजनीतिक और आर्थिक मामलों में हस्तक्षेप करने का अवसर मिला।

**बक्सर का युद्ध (1764)**

- बक्सर का युद्ध भारतीय इतिहास की एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटना थी।
- यह युद्ध 22 अक्टूबर 1764 को बिहार के बक्सर नामक स्थान पर ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी और तीन भारतीय शक्तियों—मीर कासिम (बंगाल का नवाब), शुजाउद्दौला (अवध का नवाब) तथा मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय—की संयुक्त सेना के बीच लड़ा गया।
- इस युद्ध में ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना का नेतृत्व हेक्टर मुनरो ने किया। युद्ध में अंग्रेजों को निर्णायक विजय प्राप्त हुई और भारतीय शक्तियों की संयुक्त सेना पराजित हुई।
- युद्ध के परिणामस्वरूप 1765 ई. में इलाहाबाद की संधि हुई, जिसके अंतर्गत मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय ने बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी (राजस्व वसूली का अधिकार) ईस्ट इंडिया कंपनी को प्रदान कर दी।

**आंग्ल-मैसूर युद्ध**

| युद्ध | अवधि | मैसूर शासक | गवर्नर | युद्ध समाप्त करने वाली संधि |
|---|---|---|---|---|
| प्रथम आंग्ल-मैसूर युद्ध | 1767–1769 ई. | हैदर अली | लॉर्ड वेरल्स्ट | मद्रास की संधि (1769) |
| द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध | 1780–1784 ई. | हैदर अली | वॉरेन हेस्टिंग्स | मंगलौर की संधि (1784) |
| तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध | 1790–1792 ई. | टीपू सुल्तान | लॉर्ड कॉर्नवालिस | श्रीरंगपट्टनम की संधि (1792) |
| चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध | 1799 ई. | टीपू सुल्तान | लॉर्ड वेलेजली | टीपू सुल्तान की मृत्यु के बाद मैसूर पर अंग्रेजी नियंत्रण |

**आंग्ल–मराठा युद्ध**

| युद्ध | अवधि | गवर्नर | युद्ध समाप्त करने वाली संधि |
|---|---|---|---|
| प्रथम आंग्ल–मराठा युद्ध | 1775–1782 ई. | वारेन हेस्टिंग्स | सालबाई की संधि (1782) |
| द्वितीय आंग्ल–मराठा युद्ध | 1803–1805 ई. | वेलेजली | बेसीन की संधि (1802), देवगाँव की संधि (1803 - भोंसले), सुर्जी-अर्जुनगाँव की संधि (1803 - सिंधिया), राजपुरघाट की संधि (1805 - होल्कर) |
| तृतीय आंग्ल–मराठा युद्ध | 1817–1819 ई. | लॉर्ड हेस्टिंग्स | मराठों की पूर्ण पराजय; मराठा संघ का अंत तथा अंग्रेजी प्रभुत्व की स्थापना |

**अंग्रेज़ तथा मराठों के बीच हुई महत्त्वपूर्ण संधियाँ**

| प्रमुख संधि | वर्ष | संधि में शामिल पक्ष |
|---|---|---|
| सूरत की संधि | 1775 | रघुनाथ राव तथा अंग्रेज़ |
| सालबाई की संधि | 1782 | सिंधिया की मध्यस्थता से पूना दरबार तथा अंग्रेज़ों के बीच |
| बसीन की संधि | 1802 | बाजीराव द्वितीय तथा अंग्रेज़ |

| | | |
|---|---|---|
| देवगाँव की संधि | 1803 | भोंसले तथा अंग्रेज़ |
| सुर्जी-अर्जुनगाँव की संधि | 1803 | सिंधिया तथा अंग्रेज़ |
| राजपुर घाट की संधि | 1805 | होल्कर तथा अंग्रेज़ |
| नागपुर की संधि | 1816 | भोंसले तथा अंग्रेज़ |
| ग्वालियर की संधि | 1817 | सिंधिया तथा अंग्रेज़ |
| पूना की संधि | 1817 | बाजीराव द्वितीय तथा अंग्रेज़ |
| मंदसौर की संधि | 1818 | होल्कर तथा अंग्रेज़ |

**ब्रिटिश काल की प्रमुख भू-राजस्व व्यवस्थाएँ**

| भू-राजस्व व्यवस्था | संस्थापक | क्षेत्र / प्रभाव |
|---|---|---|
| स्थायी बंदोबस्त | शुरुआत लॉर्ड कॉर्नवालिस द्वारा 1793 ई. | लगभग 19% क्षेत्र (बंगाल, बिहार, उड़ीसा के भाग) |
| रैयतवाड़ी व्यवस्था | थॉमस मुनरो एवं चार्ल्स रीड | लगभग 51% क्षेत्र (मद्रास, बॉम्बे आदि) |
| महालवाड़ी व्यवस्था | होल्ट मैकेंज़ी एवं लॉर्ड विलियम बेंटिक | लगभग 30% क्षेत्र (उत्तर-पश्चिमी प्रांत, पंजाब, मध्य भारत के भाग) |

**भारत में अंग्रेजों की विस्तारवादी नीति**

- भारत में अंग्रेजों ने अपने साम्राज्य का विस्तार करने के लिए विभिन्न राजनीतिक, कूटनीतिक और सैन्य नीतियों का प्रयोग किया। इनमें **सहायक संधि** और **हड़प नीति** सबसे महत्वपूर्ण थीं।

**सहायक संधि**

- सहायक संधि अंग्रेजों की महत्वपूर्ण विस्तारवादी नीति थी, जिसे लॉर्ड वेलेजली ने 1798 ई. में अपनाया। इसका मुख्य उद्देश्य भारतीय देशी रियासतों को बिना प्रत्यक्ष रूप से अपने साम्राज्य में मिलाए, उन्हें अंग्रेजों के राजनीतिक नियंत्रण में लाना था।
- इस संधि को स्वीकार करने वाले शासक को अपने राज्य में अंग्रेजी सेना रखनी पड़ती थी और उसके खर्च के लिए धन या अपने राज्य का कुछ भू-भाग अंग्रेजों को देना पड़ता था।
- संबंधित राज्य अंग्रेजों की अनुमति के बिना किसी अन्य राज्य से युद्ध या संधि नहीं कर सकता था तथा उसके दरबार में एक अंग्रेज रेजीडेंट नियुक्त किया जाता था।
- सहायक संधि स्वीकार करने वाले प्रमुख राज्य: हैदराबाद (1798ई.) ➔ मैसूर (1799 ई.) ➔ तंजौर (1799 ई.) ➔ अवध (1801ई.) ➔ पेशवा (1802ई.) ➔ सिंधिया (1803 ई.) ➔ भोसले (1803 ई.)

**हड़प नीति**

- हड़प नीति (Doctrine of Lapse) भी अंग्रेजों की एक महत्वपूर्ण विस्तारवादी नीति थी, जिसे लॉर्ड डलहौजी ने अपने शासनकाल में 1848 ई. से प्रभावी रूप से लागू किया।
- इस नीति के अनुसार, यदि किसी देशी रियासत के शासक की मृत्यु प्राकृतिक उत्तराधिकारी के बिना हो जाती थी, तो अंग्रेज उसके द्वारा गोद लिए गए पुत्र को उत्तराधिकारी मानने से इनकार कर देते थे और उस रियासत को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लेते थे।
- इस नीति के तहत सतारा (1848), जैतपुर और संबलपुर (1849), उदयपुर (1852), झाँसी (1853) तथा नागपुर (1854) जैसी रियासतों का अंग्रेजी साम्राज्य में विलय किया गया।
- झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने इस नीति का कड़ा विरोध किया और बाद में 1857 के विद्रोह में अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष किया।
- हड़प नीति ने भारतीय राजाओं और जनता में अंग्रेजों के प्रति असंतोष को बढ़ाया तथा 1857 के विद्रोह के प्रमुख कारणों में से एक बनी।

**ब्रिटिश भारत में शिक्षा का विकास**

- चार्ल्स ग्रांट (Charles Grant) ने भारत में शिक्षा के प्रसार हेतु अंग्रेजी भाषा को सबसे उपयुक्त माध्यम माना। उन्होंने भारतीयों में पाश्चात्य शिक्षा एवं अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार का समर्थन किया।
- चार्ल्स ग्रांट को भारत में "आधुनिक शिक्षा का जनक" (Father of Modern Education in India) कहा जाता है।
- कलकत्ता मदरसा (Calcutta Madrasa) की स्थापना वॉरेन हेस्टिंग्स द्वारा 1781 ई. में की गई थी। इसका उद्देश्य इस्लामी शिक्षा एवं मुस्लिम विधि (Islamic Law) के अध्ययन को प्रोत्साहित करना था।

- संस्कृत कॉलेज, बनारस की स्थापना जोनाथन डंकन द्वारा 1792 ई. में की गई थी।
- फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना लॉर्ड वेलेजली द्वारा 1800 ई. में कलकत्ता में की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश अधिकारियों को भारतीय भाषाओं एवं भारतीय प्रशासन का प्रशिक्षण देना था।
- हिन्दू कॉलेज की स्थापना 1817 ई. में राजा राममोहन राय के प्रयासों तथा डेविड हेयर के सहयोग से कलकत्ता में की गई थी। यह आधुनिक पाश्चात्य शिक्षा के प्रसार का महत्वपूर्ण केंद्र बना।
- वुड्स डिस्पैच (Wood's Dispatch), 1854 को भारतीय शिक्षा के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर माना जाता है। इसे चार्ल्स वुड द्वारा प्रस्तुत किया गया था और इसे "भारतीय शिक्षा का मैग्ना कार्टा" कहा जाता है। इस डिस्पैच में प्राथमिक स्तर पर स्थानीय (वर्नाक्युलर) भाषाओं तथा उच्च शिक्षा के स्तर पर अंग्रेजी भाषा को माध्यम बनाने पर बल दिया गया।
- भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 1904 को लॉर्ड कर्ज़न के शासनकाल में पारित किया गया था।

**ब्रिटिश भारत में प्रेस का विकास**

- भारत में मुद्रण कला (Printing Press) का प्रारंभ पुर्तगाली पादरियों (Portuguese Clergy) द्वारा गोवा में किया गया।
- भारत में स्वतंत्र पत्रकारिता का आरंभ जेम्स ऑगस्टस हिक्की (James Augustus Hickey) ने 1780 ई. में किया। उन्होंने 'बंगाल गजट (Bengal Gazette)' नामक समाचार पत्र प्रकाशित किया, जिसे भारत का प्रथम मुद्रित समाचार पत्र माना जाता है।
- 1816 ई. में गंगाधर भट्टाचार्य द्वारा प्रकाशित "द बंगाल गजट" अंग्रेजी भाषा में किसी भारतीय द्वारा प्रकाशित पहला समाचार पत्र था।
- हिंदी भाषा का प्रथम समाचार पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' था, जिसका प्रकाशन 30 मई 1826 को पंडित जुगल किशोर शुक्ल द्वारा कलकत्ता से हुआ था।
- भारत में राष्ट्रीय प्रेस की स्थापना का श्रेय राजा राममोहन राय को दिया जाता है। उन्होंने 1821 ई. में 'संवाद कौमुदी' नामक साप्ताहिक पत्र प्रारंभ किया, जिसके माध्यम से सामाजिक एवं राजनीतिक जागरूकता फैलाने का प्रयास किया गया।

**वर्नाक्युलर प्रेस अधिनियम,1878**

- वर्नाक्युलर प्रेस अधिनियम, 1878 को लॉर्ड लिटन द्वारा लागू किया गया था।
- इस अधिनियम का मुख्य उद्देश्य भारतीय भाषाओं (गैर-अंग्रेजी) के समाचार पत्रों की स्वतंत्रता पर नियंत्रण स्थापित करना तथा ब्रिटिश सरकार की आलोचना को रोकना था।
- "वर्नाक्युलर" का अर्थ स्थानीय या देशी भाषा होता है। इस कानून के तहत सरकार को भारतीय भाषा के समाचार पत्रों पर प्रतिबंध लगाने, उनकी सामग्री की जांच करने तथा बिना मुकदमे के उनके विरुद्ध कार्रवाई करने का अधिकार प्राप्त था।
- बाद में लॉर्ड रिपन ने 1882 ई. में इस अधिनियम को समाप्त कर दिया।

**प्रमुख नागरिक/जनजातीय विद्रोह**

| जनजातीय विद्रोह | काल | प्रमुख नेता | संबंधित क्षेत्र |
|---|---|---|---|
| संन्यासी विद्रोह | 1763-1800 ई. | भवानी पाठक एवं देवी चौधरानी | बंगाल |
| फकीर विद्रोह | 1776-77 ई. | मजनू शाह एवं चिराग अली | बंगाल |
| पागलपंथी विद्रोह | 1825-33 ई. | करमशाह | बंगाल |
| पाइका विद्रोह | 1817-25 ई. | बख्शी जगबंधु विद्याधर | उड़ीसा |
| कोल विद्रोह | 1831–1832 ई. | बुद्धो भगत | छोटानागपुर |
| संथाल विद्रोह | 1855–1856 ई. | सिद्धू, कान्हू | राजमहल क्षेत्र (झारखंड) |
| मुंडा विद्रोह (उलगुलान) | 1899–1900 ई. | बिरसा मुंडा | छोटानागपुर |
| खासी विद्रोह | 1829–1833 ई. | तीरथ सिंह | मेघालय |
| खोंड विद्रोह | 1846–1855 ई. | चक्र बिसोई | उड़ीसा |

**प्रमुख किसान विद्रोह**

| विद्रोह / आंदोलन | समय | स्थान | नेतृत्वकर्ता |
|---|---|---|---|
| नील विद्रोह | 1859–1860 ई. | बंगाल क्षेत्र | दिगंबर विश्वास एवं विष्णु विश्वास |
| पाबना आंदोलन | 1873–76 ई. | बंगाल | ईशान चंद्र राय एवं किसान संघ |
| दक्कन दंगे | 1875 ई. | महाराष्ट्र | कालूराम |

| | | | |
|---|---|---|---|
| चंपारण सत्याग्रह | 1917 ई. | बिहार | महात्मा गांधी |
| खेड़ा सत्याग्रह | 1918 ई. | गुजरात | महात्मा गांधी, वल्लभभाई पटेल |
| अवध किसान आंदोलन | 1920–22 ई. | उत्तर प्रदेश | बाबा रामचंद्र |
| एका आंदोलन | 1921–22 ई. | उत्तर प्रदेश | मदारी पासी |
| मोपला विद्रोह | 1921 ई. | मालाबार (केरल) | शौकत अली मुदलियार |
| बारदोली सत्याग्रह | 1928 ई. | गुजरात | वल्लभभाई पटेल |
| बिजोलिया किसान आंदोलन | 1897–1941 ई. | मेवाड़ (राजस्थान) | विजय सिंह पथिक |
| तेभागा आंदोलन | 1946–47 ई. | बंगाल | किसान सभा के नेता |
| तेलंगाना किसान आंदोलन | 1946–51 ई. | हैदराबाद राज्य | कम्युनिस्ट नेता |

**1857 का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम**

- इसे भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम, सैनिक विद्रोह, 1857 का गदर तथा सिपाही विद्रोह भी कहा जाता है।
- यह विद्रोह 10 मई 1857 को मेरठ से प्रारंभ हुआ और धीरे-धीरे उत्तर तथा मध्य भारत के अनेक भागों में फैल गया।
- इस विद्रोह का उद्देश्य अंग्रेजी शासन को समाप्त करना और भारतीय सत्ता को पुनः स्थापित करना था।
- स्वतंत्रता सेनानी वीडी सावरकर ने इसे "भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम" कहा।
- डिजरायली ने इस विद्रोह को 'एक राष्ट्रीय विद्रोह" कहा था तथा टी आर होम्स ने इसे 'बर्बरता तथा सभ्यता के बीच युद्ध' कहा था।
- वीडी सावरकर ने 'द इंडियन वॉर ऑफ़ इंडिपेंडेंस', 1857 पुस्तक लिखी तथा एसएन सेन ने 'एट्टीन फिफ्टीसेवन' नामक पुस्तक लिखी।

| **विद्रोह का केंद्र** | **भारतीय नेता** | **ब्रिटिश सेनापति** |
|---|---|---|
| दिल्ली | बहादुर शाह जफर, बख्त खाँ | जनरल निकोलसन |
| कानपुर | नाना साहेब, तात्या टोपे | कॉलिन कैंपबेल |
| झाँसी | रानी लक्ष्मीबाई | सर ह्यूरोज |
| लखनऊ | बेगम हजरत महल | कॉलिन कैंपबेल |
| बिहार (जगदीशपुर) | कुंवर सिंह | विलियम टेलर |
| फैजाबाद | मौलवी अहमदुल्लाह | कर्नल नील |
| बरेली | खान बहादुर खाँ | हड्सन |
| इलाहाबाद | लियाकत अली | कर्नल नील |

**18वीं–19वीं सदी के प्रमुख सामाजिक-धार्मिक संगठन**

| **संगठन** | **संस्थापक** | **स्थापना** | **स्थान** |
|---|---|---|---|
| आत्मीय सभा | राजा राममोहन राय | 1815 | कलकत्ता |
| यंग बंगाल आंदोलन | हेनरी लुई विवियन डेरेजियो | 1826 | कलकत्ता |
| ब्रह्म समाज | राजा राममोहन राय | 1828 | कलकत्ता |
| तत्त्वबोधिनी सभा | देवेंद्र नाथ टैगोर | 1839 | कलकत्ता |
| प्रार्थना समाज | आत्माराम पांडुरंग, महादेव गोविंद रानाडे | 1867 | बांबे |
| सत्यशोधक समाज | ज्योतिराव फुले | 1873 | पुणे |
| आर्य समाज | स्वामी दयानंद सरस्वती | 1875 | बांबे |
| थियोसोफिकल सोसाइटी | मैडम ब्लावात्स्की, कर्नल ओल्कॉट | 1875 | न्यूयॉर्क |
| अलीगढ़ आंदोलन | सर सैयद अहमद खान | 1875 | अलीगढ़ |
| आर्य महिला समाज | पंडिता रमाबाई | 1882 | पुणे |
| देव समाज | शिव नारायण अग्निहोत्री | 1887 | लाहौर |

| | | | |
|---|---|---|---|
| भारतीय राष्ट्रीय सामाजिक सम्मेलन | महादेव गोविंद रानाडे | 1887 | मद्रास (चेन्नई) |
| रामकृष्ण मिशन | स्वामी विवेकानंद | 1897 | बेलूर मठ (कोलकाता) |
| सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी | गोपाल कृष्ण गोखले | 1905 | पुणे |

**ब्रिटिश शासनकाल के प्रमुख सामाजिक सुधार**

| सामाजिक सुधार | वायसराय | भारतीय समाज सुधारक |
|---|---|---|
| सती प्रथा उन्मूलन अधिनियम (1829) | लॉर्ड विलियम बेंटिक | राजा राममोहन राय |
| विधवा पुनर्विवाह अधिनियम (1856) | लॉर्ड डलहौजी | ईश्वरचंद्र विद्यासागर |
| आयु सहमति अधिनियम (1891) | लॉर्ड लैंसडाउन | बेहरामजी मालाबारी |
| विशेष विवाह अधिनियम (1872) | लॉर्ड नॉर्थब्रुक | केशवचंद्र सेन |
| महिला शिक्षा का प्रोत्साहन | लॉर्ड हार्डिंग | ज्योतिराव फुले, सावित्रीबाई फुले |
| दास प्रथा उन्मूलन | लॉर्ड एलनबरो | |
| बाल विवाह निषेध अधिनियम / शारदा अधिनियम (1929) | लॉर्ड इरविन | हरविलास शारदा |
| कन्या हत्या रोकने के प्रयास | लॉर्ड विलियम बेंटिक | स्वामी दयानंद सरस्वती |

**प्रमुख राजनीतिक संस्थाएं**

| राजनीतिक संस्था | स्थापना वर्ष | संस्थापक |
|---|---|---|
| जमींदारी एसोसिएशन | 1838 ई. | द्वारकानाथ टैगोर, राधाकांत देव |
| बंगाल ब्रिटिश इंडिया सोसाइटी | 1843 ई. | ताराचंद चक्रवर्ती |
| ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन | 1851 ई. | राधाकांत देव एवं देवेंद्रनाथ टैगोर |
| बॉम्बे एसोसिएशन | 1852 ई. | जगन्नाथ शंकरसेठ |
| ईस्ट इंडिया एसोसिएशन | 1866 ई. | दादाभाई नौरोजी |
| पूना सार्वजनिक सभा | 1870 ई. | महादेव गोविंद रानाडे, गणेश वासुदेव जोशी |
| इंडियन लीग | 1875 ई. | शिशिर कुमार घोष |
| इंडियन एसोसिएशन | 1876 ई. | सुरेंद्रनाथ बनर्जी एवं आनंद मोहन बोस |
| मद्रास महाजन सभा | 1884 ई. | एम. वीरराघवाचारी, पी. आनंद चार्लू एवं जी सुब्रमण्यम |
| बॉम्बे प्रेसीडेंसी एसोसिएशन | 1885 ई. | फिरोजशाह मेहता, बदरुद्दीन तैयबजी एवं के.टी. तेलंग |
| यूनाइटेड इंडियन पैट्रियाटिक संगठन | 1888 ई. | सर सैयद अहमद खान एवं राजा शिवप्रसाद सिंह |

## भारतीय स्वतंत्रता संग्राम

### भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना 1885 ई. में बॉम्बे (मुंबई) में ए. ओ. ह्यूम द्वारा की गई थी।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के साथ ही राष्ट्रीय आंदोलन का प्रथम चरण (1885-1905) प्रारंभ हुआ। इस चरण को 'उदारवादी चरण' के नाम से जाना जाता है।
- इसके प्रथम अधिवेशन के अध्यक्ष व्योमेश चंद्र बनर्जी थे।
- इसका मुख्य उद्देश्य भारतीयों के लिए राजनीतिक मंच तैयार करना और ब्रिटिश शासन से संवैधानिक सुधारों की मांग करना था।
- 1886 के कलकत्ता अधिवेशन में दादाभाई नौरोजी अध्यक्ष बने और कांग्रेस को अखिल भारतीय स्तर पर मजबूत करने का प्रयास किया गया।
- 1887 के मद्रास अधिवेशन में बदरुद्दीन तैयबजी पहले मुस्लिम अध्यक्ष बने।
- 1888 के इलाहाबाद अधिवेशन में जॉर्ज यूल कांग्रेस के पहले अंग्रेज अध्यक्ष बने।

| वर्ष / अधिवेशन | अध्यक्ष | महत्वपूर्ण तथ्य |
|---|---|---|
| 1896 (कलकत्ता) | रहीमतुल्ला सयानी | वंदे मातरम् पहली बार गाया गया |
| 1907 (सूरत) | रास बिहारी घोष | कांग्रेस का विभाजन → नरम दल और गरम दल |
| 1911 (कलकत्ता) | बिशन नारायण धर | जन-गण-मन पहली बार गाया गया |

| | | |
|---|---|---|
| 1916 (लखनऊ) | अम्बिका चरण मजूमदार | कांग्रेस–मुस्लिम लीग समझौता (Lucknow Pact) |
| 1917 (कलकत्ता) | एनी बेसेंट | पहली महिला कांग्रेस अध्यक्ष |
| 1920 (नागपुर) | सी. विजय राघवाचार्य | रियासतों के प्रति नीति घोषित |
| 1924 (बेलगावी) | महात्मा गांधी | गांधीजी केवल एक बार कांग्रेस अध्यक्ष बने |
| 1925 (कानपुर) | सरोजिनी नायडू | पहली भारतीय महिला कांग्रेस अध्यक्ष |
| 1929 (लाहौर) | जवाहरलाल नेहरू | पूर्ण स्वराज की घोषणा एवं 26 जनवरी 1930 स्वतंत्रता दिवस तय |
| 1931 (कराची) | सरदार वल्लभभाई पटेल | मौलिक अधिकार एवं आर्थिक–सामाजिक न्याय की रूपरेखा |
| 1936 (फैजपुर) | जवाहरलाल नेहरू | पहला ग्रामीण कांग्रेस अधिवेशन |
| 1940–1946 | अबुल कलाम आज़ाद | स्वतंत्रता से पहले सबसे लंबा कार्यकाल (6 वर्ष) |
| 1947 | जे. बी. कृपलानी | भारत की स्वतंत्रता के समय कांग्रेस अध्यक्ष |

### राष्ट्रीय आंदोलन का द्वितीय चरण (1905 -1913)

- यह समय राष्ट्रीय आंदोलन के उदय का काल था। यह चरण 'उग्रवाद या नव राष्ट्रवाद' का चरण भी कहलाता है।
- इस आंदोलन के प्रमुख नेता लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, विपिन चंद्रपाल एवं अरविंद घोष थे।

### बंगाल विभाजन एवं स्वदेशी आंदोलन

- 20 जुलाई, 1905 को लॉर्ड कर्जन द्वारा बंगाल का विभाजन किया, जिसका उद्देश्य भारतीय राष्ट्रीय एकता को कमजोर करना और हिंदू-मुस्लिम एकता को तोड़ना था।
- इसके विरोध में 7 अगस्त 1905 को कलकत्ता में स्वदेशी आंदोलन की घोषणा हुई।
- 16 अक्टूबर 1905 को बंगाल विभाजन प्रभावी हो गया जिसे बंगाल में शोक दिवस के रूप में मनाया गया।
- स्वदेशी आंदोलन के दौरान वंदे मातरम नारे लगाए गए इसी दौरान रवींद्रनाथ टैगोर ने 'आमार सोनार बांग्ला' लिखा।
- इस आंदोलन का नेतृत्व दिल्ली में सैय्यद हैदर रजा, मद्रास में चिदंबरम पिल्लै तथा बांबे में बाल गंगाधर तिलक ने किया।
- स्वदेशी आंदोलन के लिए बारीसाल में अश्विनी कुमार दत्त ने 'स्वदेश बांधव समिति' की स्थापना की।
- वर्ष 1906 में कलकत्ता के कांग्रेस अधिवेशन में स्वदेशी, बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा एवं स्वशासन से जुड़े कर प्रस्ताव पारित किए गए थे।

### मुस्लिम लीग

- अखिल भारतीय मुस्लिम लीग की स्थापना 30 दिसंबर, 1906 ई. को ढाका में हुई थी।
- इसका गठन मुस्लिम समुदाय के राजनीतिक हितों की रक्षा तथा ब्रिटिश सरकार के समक्ष उनकी राजनीतिक मांगों को रखने के उद्देश्य से किया गया था।
- मुस्लिम लीग की स्थापना में आगा खान, नवाब सलीमुल्लाह खान और नवाब वकार-उल-मुल्क जैसे नेताओं की महत्वपूर्ण भूमिका थी।
- मुस्लिम लीग के गठन की पृष्ठभूमि में 1905 का बंगाल विभाजन, मुस्लिम अभिजात वर्ग की राजनीतिक चिंताएँ तथा शिमला प्रतिनिधिमंडल (1906) की भूमिका महत्वपूर्ण थी।

### कांग्रेस का विभाजन (सूरत)

- 1907 ई. में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का विभाजन सूरत अधिवेशन में हुआ। इसकी अध्यक्षता रासबिहारी घोष द्वारा की गई थी।
- इस समय कांग्रेस में नरम दल और गरम दल के बीच मतभेद काफी बढ़ गए थे। नरम दल के प्रमुख नेताओं में गोपाल कृष्ण गोखले, सुरेंद्रनाथ बनर्जी और फिरोजशाह मेहता थे।
- गरम दल का नेतृत्व बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय और बिपिन चंद्र पाल जैसे नेताओं ने किया।
- दोनों दलों में अध्यक्ष पद तथा आंदोलन की कार्यपद्धति को लेकर विवाद हुआ और अंततः कांग्रेस का विभाजन हो गया। यह विभाजन 1916 के लखनऊ अधिवेशन में समाप्त हुआ, जब दोनों दल फिर से एकजुट हुए।

### मार्ले-मिंटो सुधार

- मार्ले–मिंटो सुधार को भारतीय परिषद अधिनियम, 1909 भी कहा जाता है। इस सुधार के समय लॉर्ड मार्ले भारत सचिव तथा लॉर्ड मिंटो द्वितीय भारत के वायसराय थे, इसलिए इसे मार्ले–मिंटो सुधार कहा गया।
- इसका उद्देश्य भारतीयों को शासन में सीमित रूप से अधिक प्रतिनिधित्व देना और बढ़ते राष्ट्रीय आंदोलन को नियंत्रित करना था।
- इस अधिनियम द्वारा पहली बार मुसलमानों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल की व्यवस्था की गई।
- इसके अंतर्गत मुस्लिम मतदाता अपने प्रतिनिधि के रूप में केवल मुस्लिम उम्मीदवारों को चुनते थे। इस व्यवस्था ने भारत की राजनीति में **साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व** को संस्थागत रूप दिया।

### दिल्ली दरबार

- दिसंबर, 1911 ई. को दिल्ली में तीसरा दिल्ली दरबार आयोजित किया गया, जिसमें ब्रिटिश सम्राट जॉर्ज पंचम और महारानी मैरी भारत आए। इस दरबार में दो महत्वपूर्ण घोषणाएँ की गईं।
- पहली, भारत की राजधानी को कलकत्ता से दिल्ली स्थानांतरित करने का निर्णय लिया गया।
- दूसरी, 1911 में किए गए बंगाल विभाजन (1905) को रद्द कर दिया गया। राजधानी को आधिकारिक रूप से 1912 ई. में दिल्ली स्थानांतरित किया गया।

### लखनऊ पैक्ट

- लखनऊ पैक्ट दिसंबर 1916 ई. में लखनऊ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच हुआ एक महत्वपूर्ण समझौता था।
- कांग्रेस की ओर से बाल गंगाधर तिलक और अन्य नेताओं तथा मुस्लिम लीग की ओर से मुहम्मद अली जिन्ना ने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- कांग्रेस ने मुस्लिमों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल की मांग को स्वीकार किया। इसी अधिवेशन में कांग्रेस के नरम दल और गरम दल का पुनर्मिलन भी हुआ।
- लखनऊ पैक्ट को हिंदू-मुस्लिम राजनीतिक सहयोग की दिशा में एक महत्वपूर्ण घटना माना जाता है।

### होमरूल आंदोलन

- होमरूल आंदोलन (1916) प्रथम विश्व युद्ध के समय भारत में ब्रिटिश शासन के अधीन 'स्वशासन' यानी अपना शासन प्राप्त करने के लिए शुरू किया गया एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय आंदोलन था।
- यह आंदोलन आयरलैंड के होम रूल आंदोलन से प्रेरित था, जिसे भारत में दो प्रमुख नेताओं—बाल गंगाधर तिलक और एनी बेसेंट—ने अलग-अलग लीग बनाकर चलाया।
- तिलक ने अप्रैल 1916 में पुणे से इसकी शुरुआत करते हुए महाराष्ट्र और कर्नाटक जैसे क्षेत्रों में काम किया, जबकि एनी बेसेंट ने सितंबर 1916 में मद्रास से देश के बाकी हिस्सों में इसका प्रसार किया।
- 'केसरी', 'मराठा', 'न्यू इंडिया' और 'कॉमनवील' जैसे समाचार पत्रों के माध्यम से उन्होंने जनता में राजनीतिक जागरूकता फैलाई और मातृभाषा में शिक्षा तथा भाषाई आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की माँग रखी।

### महात्मा गांधी का परिचय एवं भारत आगमन

- महात्मा गांधी का पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी था। उनका जन्म 2 अक्टूबर, 1869 ई. को पोरबंदर, गुजरात में हुआ था।
- उनके पिता करमचंद गांधी पोरबंदर रियासत के दीवान थे तथा माता पुतलीबाई धार्मिक प्रवृत्ति की थीं। गांधीजी ने प्रारंभिक शिक्षा गुजरात में प्राप्त की और 1888 ई. में कानून की पढ़ाई के लिए इंग्लैंड गए। वर्ष 1891 ई. में बैरिस्टर बनकर भारत लौटे।
- इसके बाद 1893 ई. में वे एक कानूनी मुकदमे के सिलसिले में दक्षिण अफ्रीका गए। दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के साथ होने वाले नस्लीय भेदभाव ने गांधीजी के जीवन को गहराई से प्रभावित किया।
- यहीं उन्होंने सत्याग्रह और अहिंसा को राजनीतिक संघर्ष के प्रभावी साधन के रूप में विकसित किया। उन्होंने भारतीयों के अधिकारों के लिए अनेक आंदोलनों का नेतृत्व किया और लगभग 21 वर्षों तक दक्षिण अफ्रीका में रहे।
- गांधीजी 9 जनवरी, 1915 ई. को दक्षिण अफ्रीका से भारत वापस लौटे। भारत में उनके राजनीतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले माने जाते हैं।
- 1915 में गांधी जी ने अहमदाबाद में साबरमती के किनारे 'सत्याग्रह आश्रम' की स्थापना की।
- वर्ष 1916 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के उद्घाटन समारोह में महात्मा गांधी की भारतीय राजनीति में पहली सार्वजनिक उपस्थिति देखने को मिली।

### महात्मा गांधी द्वारा प्रारंभ किए गए महत्वपूर्ण आंदोलन

- **चंपारण सत्याग्रह (1917)** महात्मा गांधी द्वारा भारत में किया गया प्रथम सत्याग्रह था, जो बिहार के चंपारण जिले में हुआ। इसका मुख्य कारण तिनकठिया प्रणाली थी, जिसके अंतर्गत यूरोपीय नील बागान मालिक किसानों को उनकी भूमि के लगभग 3/20 हिस्से पर नील की खेती करने के लिए मजबूर करते थे। इस आंदोलन के लिए किसान राजकुमार शुक्ल ने गांधीजी को चंपारण आने के लिए आमंत्रित किया।
- **खेड़ा सत्याग्रह (1918)** महात्मा गांधी के नेतृत्व में गुजरात के खेड़ा जिले में हुआ था। यह आंदोलन मुख्य रूप से सूखे (drought) के कारण फसल खराब होने से उत्पन्न संकट के कारण शुरू हुआ।
- **अहमदाबाद मिल हड़ताल (1918)** महात्मा गांधी के नेतृत्व में अहमदाबाद (गुजरात) में हुई एक महत्वपूर्ण श्रमिक आंदोलन थी। इसे गांधीजी का "पहला उपवास" भी कहा जाता है। इस आंदोलन का मुख्य कारण प्लेग महामारी के दौरान दिए गए प्लेग बोनस (Plague Bonus) को लेकर विवाद था।

- **रॉलेट एक्ट 1919** में ब्रिटिश सरकार द्वारा पारित एक काला कानून (Black Law) था, जिसका उद्देश्य भारत में क्रांतिकारी गतिविधियों को रोकना था। इस कानून के अनुसार सरकार किसी भी व्यक्ति को केवल संदेह के आधार पर बिना वकील, बिना मुकदमे और बिना अपील के अनिश्चित काल तक जेल में रख सकती थी। इसका विरोध महात्मा गांधी ने किया और उन्होंने "सत्याग्रह सभा" का गठन कर 1919 में भारत में पहला राष्ट्रीय सत्याग्रह शुरू किया।
- **जलियांवाला बाग हत्याकांड** 13 अप्रैल 1919 को अमृतसर (पंजाब) में हुआ। इससे पहले 9 अप्रैल 1919 को डॉ. सैफुद्दीन किचलू और डॉ. सत्यपाल की गिरफ्तारी के विरोध में जनता में आक्रोश था। ब्रिटिश सेना के जनरल डायर ने बिना चेतावनी दिए बाग के सभी निकास बंद कर निहत्थे लोगों पर गोली चलाने का आदेश दिया, जिससे भारी संख्या में लोग मारे गए और घायल हुए। इस घटना के विरोध में महात्मा गांधी ने "कैसर-ए-हिंद" सम्मान वापस किया, रवींद्रनाथ टैगोर ने "नाइटहुड" त्याग दिया तथा सर शंकरन नायर ने वायसराय की कार्यकारी परिषद से इस्तीफा दिया। घटना की जांच के लिए हंटर आयोग का गठन किया गया था।

**भारत सरकार अधिनियम, 1919**

- भारत सरकार अधिनियम 1919, जिसे मॉन्टेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार भी कहा जाता है, भारत में उत्तरदायी शासन की क्रमिक स्थापना के उद्देश्य से बनाया गया था।
- इस अधिनियम के तहत केंद्र और प्रांतों के विषयों का विभाजन किया गया तथा प्रांतीय स्तर पर द्वैध शासन (Dyarchy System) लागू किया गया, जिसमें प्रशासन को दो भागों—आरक्षित और हस्तांतरित विषयों—में बांटा गया।
- इसके अतिरिक्त, इसी अधिनियम के अंतर्गत 1926 में केंद्रीय लोक सेवा आयोग की स्थापना की गई।

### असहयोग आंदोलन

- असहयोग आंदोलन का प्रस्ताव महात्मा गांधी ने सितंबर 1920 में कलकत्ता में प्रस्तुत किया। इसे दिसंबर 1920 के नागपुर अधिवेशन में स्वीकार किया गया, जिसके अध्यक्ष सी. विजय राघवाचार्य थे। यह महात्मा गांधी द्वारा शुरू किया गया पहला जन-आंदोलन (First Mass Movement) था।
- आंदोलन की शुरुआत 1 अगस्त 1920 को हुई। इसका उद्देश्य ब्रिटिश शासन के सहयोग को समाप्त कर अहिंसक तरीके से स्वराज प्राप्त करना था।
- **चौरी-चौरा कांड** 4–5 फरवरी 1922 को संयुक्त प्रांत (वर्तमान उत्तर प्रदेश) के गोरखपुर जिले के चौरी-चौरा में हुआ। इस घटना के बाद महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन वापस ले लिया तथा असहयोग आंदोलन को अपनी 'हिमालय जैसी भूल' बताया।

### साइमन कमीशन का गठन

- साइमन कमीशन का गठन ब्रिटिश सरकार ने 1927 में किया, जिसकी अध्यक्षता सर जॉन साइमन कर रहे थे और इसके सभी 7 सदस्य ब्रिटिश थे, इसलिए इसे "व्हाइट कमीशन" कहा गया।
- यह आयोग 3 फरवरी 1928 को बॉम्बे पहुँचा, जिसका उद्देश्य 1919 के अधिनियम की समीक्षा करना था।
- भारतीयों ने इसका जोरदार विरोध किया और "साइमन गो बैक" के नारे लगे; विरोध के दौरान लाला लाजपत राय गंभीर रूप से घायल हुए और बाद में उनकी मृत्यु हो गई।
- इसके जवाब में 1928 में नेहरू रिपोर्ट तैयार की गई।

### सविनय अवज्ञा आंदोलन

- **सविनय अवज्ञा आंदोलन** 1930 में महात्मा गांधी के नेतृत्व में शुरू हुआ, जिसे दांडी मार्च के नाम से भी जाना जाता है। इसकी शुरुआत 12 मार्च 1930 को साबरमती आश्रम से हुई, जहाँ गांधीजी 78 साथियों के साथ 385 किमी की यात्रा कर 6 अप्रैल 1930 को दांडी पहुँचे और नमक बनाकर ब्रिटिश कानून का उल्लंघन किया। नमक सत्याग्रह में सी. राजगोपालाचारी (वेदारण्यम), सरोजिनी नायडू (धरासना), विनोबा भावे और सीमांत गांधी खान अब्दुल गफ्फार खान जैसे नेताओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- **गांधी–इरविन समझौता,** जिसे "दिल्ली समझौता" भी कहा जाता है, 5 मार्च 1931 को महात्मा गांधी और वायसराय लॉर्ड इरविन के बीच हुआ। इसका मुख्य उद्देश्य कांग्रेस को द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए तैयार करना और सविनय अवज्ञा आंदोलन को स्थगित करना था। सरोजिनी नायडू ने गांधीजी और लॉर्ड इरविन को "दो महात्मा" कहा। गोलमेज सम्मेलनों (1930–32) में **डॉ. भीमराव अंबेडकर** ऐसे प्रमुख भारतीय नेता थे जिन्होंने तीनों सम्मेलनों में भाग लिया, जबकि **महात्मा गांधी** केवल द्वितीय गोलमेज सम्मेलन (1931) में शामिल हुए। इस दौरान ब्रिटिश नेता **विंस्टन चर्चिल** ने गांधीजी को "अर्ध-नग्न फकीर (half-naked fakir)" कहकर आलोचना की।

- **साम्प्रदायिक पुरस्कार** 16 अगस्त 1932 को ब्रिटेन के प्रधानमंत्री **रैम्ज़े मैकडोनाल्ड** द्वारा घोषित किया गया, जिसमें दलितों को एक अलग अल्पसंख्यक मानते हुए उनके लिए पृथक निर्वाचक मंडल का प्रावधान किया गया। इसका महात्मा गांधी ने विरोध किया और उन्होंने 20 सितंबर 1932 को यरवदा जेल में आमरण अनशन शुरू किया।
- इसके परिणामस्वरूप 24 सितंबर 1932 को **पूना समझौता (Poona Pact)** हुआ, जो महात्मा गांधी और डॉ. भीमराव अंबेडकर के बीच संपन्न हुआ। इस समझौते में दलितों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल की मांग वापस ले ली गई और उनकी आरक्षित सीटों की संख्या 71 से बढ़ाकर 147 कर दी गई।

**भारत सरकार अधिनियम 1935**

- ब्रिटिश काल का एक महत्वपूर्ण संवैधानिक कानून था, जिसके तहत केंद्र और प्रांतों के बीच शक्तियों का विभाजन तीन सूचियों—संघ सूची (59 विषय), प्रांतीय सूची (54 विषय) और समवर्ती सूची (36 विषय)—में किया गया।
- इस अधिनियम के अंतर्गत प्रांतों को स्वायत्त प्रशासनिक इकाइयों के रूप में कार्य करने की अनुमति दी गई और केंद्र स्तर पर द्वैध शासन (Dyarchy) लागू किया गया।
- बंगाल, बॉम्बे, मद्रास, बिहार, असम और संयुक्त प्रांत सहित छह प्रांतों में द्विसदनीय व्यवस्था (Bicameralism) शुरू की गई।
- इसी अधिनियम के तहत भारतीय रिज़र्व बैंक की स्थापना का प्रावधान किया गया तथा 1937 में संघीय न्यायालय (Federal Court) की स्थापना की गई।

- **अगस्त प्रस्ताव** 8 अगस्त 1940 को वायसराय लॉर्ड लिनलिथगो द्वारा प्रस्तुत किया गया था। इसका मुख्य उद्देश्य द्वितीय विश्व युद्ध में ब्रिटिश सरकार को समर्थन दिलाने के लिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को संतुष्ट करना था।
- **व्यक्तिगत सत्याग्रह** 17 अक्टूबर 1940 को महात्मा गांधी द्वारा शुरू किया गया था, जिसका उद्देश्य अगस्त प्रस्ताव का विरोध करना और भारत को द्वितीय विश्व युद्ध से अलग रखने की मांग करना था। यह आंदोलन महाराष्ट्र के पवनार आश्रम से प्रारंभ हुआ। इसके तहत पहले सत्याग्रही **विनोबा भावे** और दूसरे सत्याग्रही **जवाहरलाल नेहरू** थे। इसे "दिल्ली चलो आंदोलन" भी कहा जाता।
- **क्रिप्स मिशन** 23 मार्च 1942 को भारत आया, जिसका नेतृत्व ब्रिटिश नेता **सर स्टैफर्ड क्रिप्स** कर रहे थे। इसका उद्देश्य द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान भारतीय नेताओं का समर्थन प्राप्त करना था, जिसके बदले युद्ध के बाद भारत को डोमिनियन स्टेटस देने का प्रस्ताव रखा गया। महात्मा गांधी ने इस मिशन को **"पोस्ट-डेटेड चेक"** कहा, क्योंकि इसमें तत्काल कोई वास्तविक सत्ता हस्तांतरण नहीं था।

**भारत छोड़ो आंदोनल**

- भारत छोड़ो आंदोनल 1942 में शुरू हुआ और इसे देश का सबसे बड़ा जनआंदोलन माना जाता है, जिसे **'अगस्त क्रांति'** भी कहा जाता है।
- 7 अगस्त 1942 को बंबई (मुंबई) के ग्वालिया टैंक मैदान में अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की बैठक हुई, जिसकी अध्यक्षता मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने की, और 8 अगस्त 1942 को "भारत छोड़ो" प्रस्ताव पारित किया गया।
- इस दौरान महात्मा गांधी ने "करो या मरो" एवं युसुफ मेहर अली ने "भारत छोड़ो" का नारा दिया।
- 9 अगस्त 1942 की सुबह ही ऑपरेशन ज़ीरो आवर के तहत गांधीजी, नेहरू, पटेल सहित अधिकांश नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया; गांधीजी, सरोजिनी नायडू और कस्तूरबा गांधी को पुणे के आगा खान पैलेस में नजरबंद रखा गया।
- इस दौरान अरुणा आसफ अली ने तिरंगा फहराया, जयप्रकाश नारायण और राम मनोहर लोहिया भूमिगत हो गए, तथा उषा मेहता ने गुप्त "कांग्रेस रेडियो" चलाया।
- कई स्थानों पर समानांतर सरकारें स्थापित हुईं, जैसे बलिया (चित्तू पांडे), सतारा (नाना पाटिल) और तामलुक में।

**सुभाष चंद्र बोस और आज़ाद हिंद फौज**

- नेताजी सुभाष चंद्र बोस का जन्म 1897 में कटक (ओडिशा) में हुआ था और उनके राजनीतिक गुरु चितरंजन दास थे।
- वे 1938 के हरिपुरा तथा 1939 के त्रिपुरी अधिवेशन में कांग्रेस अध्यक्ष रहे और 1939 में उन्होंने फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना की।
- 1941 में वे भारत से निकलकर जर्मनी पहुँचे और बाद में दक्षिण-पूर्व एशिया में स्वतंत्रता संग्राम को आगे बढ़ाया।
- सुभाष चंद्र बोस ने वर्ष 1941 में उत्तरी अफ्रीका से लाए गए भारतीय युद्धबंदियों को भर्ती कर 'द फ्री इंडिया लीजन' नामक सेवा का गठन किया।
- 1 सितंबर 1942 को मोहन सिंह के नेतृत्व में आज़ाद हिंद फौज (INA) का गठन हुआ, जिसका नेतृत्व 1943 में सुभाष चंद्र बोस ने संभाला।
- 21 अक्टूबर 1943 को उन्होंने सिंगापुर में स्वतंत्र भारत की अस्थायी सरकार की स्थापना की, जिसका मुख्यालय रंगून में था।
- बोस ने "दिल्ली चलो", "जय हिंद" और "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा" जैसे प्रेरणादायक नारे दिए।

**लाल किला मुकदमा**

- आईएनए मुकदमा / लाल किला मुकदमा, 1945 भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटना थी।
- द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश सरकार ने आज़ाद हिंद फ़ौज (INA) के लगभग 23,000 सैनिकों को बंदी बना लिया था।
- इनमें से सैनिकों पर मुकदमा चलाने के लिए पहला ऐतिहासिक मुकदमा नवंबर 1945 में दिल्ली के लाल किले में प्रारंभ किया गया, जिसे लाल किला मुकदमा (Red Fort Trial) के नाम से जाना जाता है।
- इस मुकदमे में आज़ाद हिंद फ़ौज के तीन प्रमुख अधिकारियों—शाह नवाज़ ख़ान, गुरबख्श सिंह ढिल्लों तथा प्रेम कुमार सहगल पर एक साथ राजद्रोह और ब्रिटिश शासन के विरुद्ध युद्ध छेड़ने का आरोप लगाया गया।
- इन अधिकारियों की ओर से प्रसिद्ध विधिवेत्ता भूलाभाई देसाई ने बचाव पक्ष का नेतृत्व किया।

**1946 के बाद की प्रमुख घटनाएं**

- **नौसेना विद्रोह** को रॉयल इंडियन नेवी विद्रोह भी कहा जाता है। यह 18 फरवरी, 1946 ई. को बंबई में शुरू हुआ। इसकी शुरुआत एचएमआईएस तलवार नामक नौसैनिक प्रशिक्षण प्रतिष्ठान के भारतीय नाविकों ने की थी। भारतीय नाविकों ने खराब भोजन, नस्लीय भेदभाव, कम वेतन तथा अंग्रेज अधिकारियों के दुर्व्यवहार के विरोध में हड़ताल की। सरदार वल्लभभाई पटेल के समझाने के बाद विद्रोही नौसैनिकों ने 23 फरवरी, 1946 को आत्मसमर्पण कर दिया।
- **कैबिनेट मिशन योजना** 1946 में ब्रिटेन के प्रधानमंत्री क्लीमेंट एटली की सरकार द्वारा भारत में संवैधानिक गतिरोध को सुलझाने के लिए भेजी गई थी। यह मिशन 24 मार्च 1946 को भारत आया और इसका उद्देश्य भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस तथा मुस्लिम लीग के बीच मतभेदों को दूर करना था। इस मिशन में तीन सदस्य शामिल थे—सर स्टैफर्ड क्रिप्स, ए. वी. अलेक्जेंडर और लॉर्ड पैथिक लॉरेंस। मिशन ने भारत के लिए एक संघीय संरचना (Federal Structure) का प्रस्ताव रखा।
- **मुस्लिम लीग** ने 16 अगस्त 1946 को "प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस" घोषित किया और इसके विरोध में देशभर में हड़ताल का आह्वान किया, जिससे कई स्थानों पर सांप्रदायिक दंगे भड़क उठे।

  इसके बाद ब्रिटेन के प्रधानमंत्री क्लीमेंट एटली ने 20 फरवरी, 1947 ई. को घोषणा की कि जून 1948 तक भारत को स्वतंत्र कर दिया जाएगा, और बाद में लॉर्ड माउंटबेटन को भारत का अंतिम वायसराय नियुक्त किया गया।
- **माउंटबेटन घोषणा** को 3 जून, 1947 ई. को भारत के अंतिम वायसराय लॉर्ड माउंटबेटन ने प्रस्तुत किया था। इसे 3 जून योजना या माउंटबेटन योजना भी कहा जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य भारत में ब्रिटिश शासन के अंत तथा सत्ता के हस्तांतरण की योजना प्रस्तुत करना था। इस योजना के अनुसार भारत का विभाजन करके भारत और पाकिस्तान नामक दो स्वतंत्र डोमिनियन बनाए जाने का निर्णय लिया गया।

**अंतरिम सरकार का गठन**

- 2 सितंबर, 1946 ई. को भारत में अंतरिम सरकार का गठन किया गया। इसका गठन कैबिनेट मिशन योजना के तहत हुआ था।
- जवाहरलाल नेहरू को अंतरिम सरकार की कार्यकारी परिषद का उपाध्यक्ष बनाया गया और वे व्यवहारतः सरकार के प्रमुख के रूप में कार्य करते थे।
- प्रारंभ में मुस्लिम लीग ने अंतरिम सरकार में भाग नहीं लिया, लेकिन बाद में 26 अक्टूबर, 1946 को मुस्लिम लीग के सदस्य भी इसमें शामिल हो गए।

| विभाग | मंत्री |
|---|---|
| कार्यकारी परिषद के उपाध्यक्ष एवं विदेश मामले | जवाहरलाल नेहरू |
| रक्षा | सरदार बलदेव सिंह |
| गृह, सूचना एवं प्रसारण, रियासत | सरदार वल्लभभाई पटेल |
| खाद्य एवं कृषि | राजेंद्र प्रसाद |
| श्रम | जगजीवन राम |
| शिक्षा | सी. राजगोपालाचारी |
| रेलवे | अरूणा आसफ अली |
| खान एवं बंदरगाह | सी एच भाभा |
| वाणिज्य | इब्राहिम इस्माइल चुंदरीगर |
| उद्योग एवं आपूर्ति | जॉन मथाई |
| वित्त | लियाकत अली खान |
| स्वास्थ्य | ग़ज़नफ़र अली खान |
| विधि | जोगेंद्र नाथ मंडल |
| डाक एवं संचार | अब्दुल-रब-निश्तार |

**महत्वपूर्ण तथ्य**

- महादेव गोविंद रानाडे गोपाल कृष्ण गोखले के राजनीतिक गुरु थे।
- गोखले जी महात्मा गांधी के राजनीतिक गुरु थे।
- 'देशबंधु' चितरंजन दास सुभाष चंद्र बोस के राजनीतिक गुरु थे।
- दादाभाई नौरोजी को ग्रैंड ओल्ड मैन ऑफ़ इंडिया कहा जाता है।
- गोपाल हरिदेशमुख को 'लोकहितवादी' के नाम से भी जाना जाता है

**भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित प्रमुख संगठन**

| संगठन | संस्थापक | वर्ष |
|---|---|---|
| अखिल भारतीय मुस्लिम लीग | आगा खान | 1906 |
| हिंदू महासभा | मदन मोहन मालवीय | 1915 |
| होमरूल लीग | बाल गंगाधर तिलक, एनी बेसेंट | 1916 |
| वीमेंस इंडिया एसोसिएशन | श्रीमती एनी बेसेंट | 1917 |
| ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस | एन. एम. जोशी | 1920 |
| स्वराज पार्टी | चितरंजन दास, मोतीलाल नेहरू | 1923 |
| बहिष्कृत हितकारिणी सभा | बी आर अंबेडकर | 1924 |
| भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी | एम. एन. रॉय | 1925 |
| राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ | डॉ. हेडगेवार | 1925 |
| खुदाई खिदमतगार | अब्दुल गफ्फार खान | 1929 |
| हरिजन सेवक संघ | महात्मा गांधी | 1932 |
| कांग्रेस समाजवादी पार्टी | जयप्रकाश नारायण, आचार्य नरेंद्र देव | 1934 |
| स्वतंत्र श्रमिक पार्टी | बी आर अंबेडकर | 1936 |
| फॉरवर्ड ब्लॉक | सुभाष चंद्र बोस | 1939 |

**भारत में प्रमुख भारतीय क्रांतिकारी संगठन**

| संगठन | वर्ष | संस्थापक | स्थान |
|---|---|---|---|
| अनुशीलन समिति | 1902 | प्रमथनाथ मित्र | कोलकाता |
| अभिनव भारत | 1904 | विनायक दामोदर सावरकर | महाराष्ट्र (नासिक/पुणे) |
| युगांतर समूह | 1906 | बारिंद्र कुमार घोष, भूपेंद्रनाथ दत्त | कोलकाता |
| हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) | 1924 | राम प्रसाद बिस्मिल, सचिंद्रनाथ सान्याल | कानपुर |
| नौजवान भारत सभा | 1926 | भगत सिंह | लाहौर |
| हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA) | 1928 | चंद्रशेखर आज़ाद, भगत सिंह | दिल्ली/लाहौर |
| इंडियन रिपब्लिकन आर्मी | 1930 | सूर्य सेन | चटगांव |

**विदेशों में भारतीय क्रांतिकारी संगठन**

| संगठन | वर्ष | संस्थापक | स्थान |
|---|---|---|---|
| इंडिया होमरूल सोसाइटी | 1905 | श्यामजी कृष्ण वर्मा | इंग्लैंड |
| पेरिस इंडियन सोसाइटी | 1905 | मैडम भीकाजी कामा | पेरिस |
| गदर पार्टी | 1913 | लाला हरदयाल | सैन फ्रांसिस्को |
| भारतीय स्वतंत्रता लीग | 1942 | रास बिहारी बोस | जापान |
| आज़ाद हिंद फौज (INA) | 1942 | मोहन सिंह | जापान |

**स्वतंत्रता संग्राम की प्रमुख क्रांतिकारी गतिविधियाँ**

| घटना/कांड | वर्ष | स्थान | प्रमुख क्रांतिकारी | संक्षिप्त विवरण |
|---|---|---|---|---|
| मुजफ्फरपुर बम कांड | 1908 | मुजफ्फरपुर (बिहार) | खुदीराम बोस, प्रफुल्ल चाकी | किंग्सफोर्ड को मारने का प्रयास; क्रांतिकारी आंदोलन को बल |
| अलीपुर षड्यंत्र केस | 1908 | कोलकाता | अरविंद घोष, बारीन्द्र घोष | बम निर्माण व ब्रिटिश विरोधी गतिविधियाँ; बड़ा मुकदमा |
| नासिक षड्यंत्र केस | 1909 | नासिक | अनंत कन्हेरे | कलेक्टर जैक्सन की हत्या |
| दिल्ली षड्यंत्र केस | 1912 | दिल्ली | रास बिहारी बोस, बसंत कुमार बिस्वास | वायसराय हार्डिंग पर बम हमला |
| हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन | 1924 | भारत | चंद्रशेखर आजाद, बिस्मिल | सशस्त्र क्रांति का संगठन |
| काकोरी कांड | 1925 | काकोरी (उत्तर प्रदेश) | राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां | सरकारी खजाना लूट; HSRA को मजबूती |
| सांडर्स हत्याकांड | 1928 | लाहौर | भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव | लाला लाजपत राय की मौत का बदला |
| सेंट्रल असेंबली बम कांड | 1929 | दिल्ली | भगत सिंह, बटुकेश्वर दत्त | "बहरों को सुनाने के लिए" बम फेंका |
| मेरठ षड्यंत्र केस | 1929 | मेरठ | ट्रेड यूनियन नेता | कम्युनिस्ट गतिविधियों पर मुकदमा |
| चटगांव शस्त्रागार कांड | 1930 | चटगांव | सूर्य सेन | पुलिस/सेना के हथियार कब्जाने का प्रयास |

**महत्वपूर्ण वायसराय और उनके प्रमुख कार्य**

| नाम | काल | महत्वपूर्ण कार्य |
|---|---|---|
| वॉरेन हेस्टिंग्स | 1772–1785 | • रेगुलेटिंग एक्ट 1773 लागू<br>• द्वैध शासन समाप्त<br>• न्यायिक सुधार<br>• राजस्व व्यवस्था में सुधार<br>• एशियाटिक सोसाइटी (1784) |
| लॉर्ड कॉर्नवालिस | 1786–1793 | • स्थायी बंदोबस्त (1793)<br>• सिविल सेवा सुधार<br>• न्यायिक सुधार<br>• कॉर्नवालिस कोड |
| लॉर्ड वेलेजली | 1798–1805 | • सहायक संधि प्रणाली<br>• फोर्ट विलियम कॉलेज |
| लॉर्ड विलियम बेंटिंक | 1828-1835 | • सती प्रथा का उन्मूलन (1829),<br>• अंग्रेजी शिक्षा की शुरुआत (1835) – मैकॉले की शिक्षा नीति लागू,<br>• ठगी प्रथा का दमन |
| लॉर्ड डलहौजी | 1848–1856 | • लैप्स का सिद्धांत लागू<br>• रेलवे (1853) की शुरुआत<br>• टेलीग्राफ व डाक व्यवस्था विकसित<br>• सार्वजनिक निर्माण कार्य (सड़क, नहर) |
| लॉर्ड कैनिंग | 1856–1862 | • 1857 विद्रोह<br>• भारत का पहला वायसराय<br>• भारत शासन अधिनियम 1858<br>• सेना पुनर्गठन |
| लॉर्ड लिटन | 1876–1880 | • वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट (1878)<br>• आर्म्स एक्ट (1878)<br>• दिल्ली दरबार (1877)<br>• द्वितीय अफगान युद्ध |

| | | |
|---|---|---|
| लॉर्ड रिपन | 1880–1884 | • स्थानीय स्वशासन की शुरुआत<br>• इल्बर्ट बिल (1883)<br>• वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट समाप्त<br>• फैक्ट्री एक्ट (1881) |
| लॉर्ड डफरिन | 1884–1888 | • भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना (1885)<br>• तीसरा बर्मा युद्ध • प्रशासनिक सुधार<br>• ब्रिटिश विस्तार |
| लॉर्ड कर्जन | 1899–1905 | • बंगाल विभाजन (1905)<br>• विश्वविद्यालय अधिनियम 1904<br>• पुलिस व प्रशासनिक सुधार<br>• भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण को सुदृढ़ किया |
| लॉर्ड चेम्सफोर्ड | 1916–1921 | • 1919 अधिनियम<br>• द्वैध शासन<br>• रॉलेट एक्ट<br>• जलियांवाला बाग काल |
| लॉर्ड रीडिंग | 1921–1926 | • असहयोग आंदोलन का अंत<br>• चौरी-चौरा घटना<br>• स्वराज पार्टी |
| लॉर्ड इरविन | 1926–1931 | • गांधी-इरविन समझौता (1931)<br>• सविनय अवज्ञा आंदोलन काल<br>• गोलमेज सम्मेलन की शुरुआत<br>• डोमिनियन स्टेटस की घोषणा (1929) |
| लॉर्ड लिनलिथगो | 1936–1943 | • 1935 अधिनियम लागू<br>• द्वितीय विश्व युद्ध में भारत को शामिल किया<br>• अगस्त प्रस्ताव (1940) • व्यक्तिगत सत्याग्रह काल<br>• कांग्रेस मंत्रिमंडल का इस्तीफा (1939) |
| लॉर्ड माउंटबेटन | 1947–1948 | • भारत विभाजन योजना (3 जून योजना)<br>• भारत की स्वतंत्रता (15 अगस्त 1947)<br>• भारत-पाकिस्तान का गठन<br>• भारत का ब्रिटिश अंतिम वायसराय |

**ब्रिटिशकालीन आयोग/समिति**

| **आयोग का नाम** | **वर्ष** | **वायसराय** | **उद्देश्य** |
|---|---|---|---|
| हंटर आयोग | 1882 | लॉर्ड रिपन | प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा का विकास |
| एचिंसन आयोग | 1886 | लॉर्ड डफरिन | नागरिक सेवा में भारतीयों की संख्या में वृद्धि पर विचार |
| हरशेल आयोग | 1893 | लैंसडाउन | टकसाल संबंधी सुझाव |
| सिंचाई आयोग | 1901 | लॉर्ड कर्ज़न | सिंचाई व्यवस्था का विकास एवं विस्तार |
| विश्वविद्यालय आयोग (रैले आयोग) | 1902 | लॉर्ड कर्ज़न | विश्वविद्यालय शिक्षा में सुधार |
| फ्रेज़र आयोग | 1902 | लॉर्ड कर्ज़न | पुलिस प्रशासन में सुधार |
| ईसलिंग्टन आयोग | 1912 | लॉर्ड हार्डिंग | नागरिक सेवा में भारतीयों की हिस्सेदारी पर विचार |
| सैडलर आयोग | 1917 | लॉर्ड चेम्सफोर्ड | कलकत्ता विश्वविद्यालय एवं उच्च शिक्षा सुधार |
| ली आयोग | 1924 | लॉर्ड रीडिंग | लोक सेवा आयोग के गठन की सिफारिश |
| बटलर समिति | 1927 | लॉर्ड इरविन | भारतीय रियासतों और ब्रिटिश सरकार के संबंध |
| व्हिटले आयोग | 1928 | लॉर्ड इरविन | श्रमिकों की स्थिति पर विचार |
| लिंडसे आयोग | 1929 | लॉर्ड इरविन | भारत में मिशनरी शिक्षा के विकास हेतु |
| सार्जेंट आयोग | 1944 | लॉर्ड वेवेल | शिक्षा प्रणाली का पुनर्गठन |

**भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित प्रमुख पुस्तक, पत्र/पत्रिकाएं**

| लेखक | प्रमुख पुस्तकें एवं पत्र/पत्रिकाएं |
|---|---|
| महात्मा गांधी | हिंद स्वराज; सत्य के मेरे प्रयोग; यंग इंडिया; हरिजन; |
| डॉ. भीमराव अंबेडकर | एनहिलेशन ऑफ कास्ट; बुद्ध एंड हिज धम्म; हू वेयर द शूद्राज?; द अनटचेबल्स; रिडल्स इन हिंदुइज्म |
| जवाहरलाल नेहरू | डिस्कवरी ऑफ इंडिया; ग्लिम्प्सेस ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री; एन ऑटोबायोग्राफी; लेटर्स फ्रॉम ए फादर टू हिज डॉटर |
| श्री अरविंद घोष | द लाइफ डिवाइन; एस्सेज ऑन गीता; द सिंथेसिस ऑफ योगा; बंदे मातरम् (लेख), सावित्री; फाउंडेशन ऑफ़ इंडियन कल्चर |
| सुभाष चंद्र बोस | इंडियन स्ट्रगल |
| बाल गंगाधर तिलक | गीता रहस्य; आर्कटिक होम इन द वेदाज, केसरी, द मराठा |
| लाला लाजपत राय | अनहैप्पी इंडिया; इंग्लैंड्स डेब्ट टू इंडिया; यंग इंडिया; द स्टोरी ऑफ़ माय डिपोर्टेशन |
| दादाभाई नौरोजी | पावर्टी एंड अनब्रिटिश रूल इन इंडिया, रस्त गोफ्तार |
| बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय | आनंद मठ; कृष्ण चरित्र, देवी चौधरानी; दुर्गेश नंदिनी |
| दीनबंधु मित्र | नील दर्पण |
| ज्योतिराव फुले | गुलामगिरी |
| एनी बेसेंट | कॉमनवील, न्यू इंडिया |
| चितरंजन दास | इंडिया फॉर इंडियंस |
| मोतीलाल नेहरू | इंडिपेंडेंट |
| शिशिर कुमार घोष | अमृत बाजार पत्रिका |
| दयानंद सरस्वती | सत्यार्थ प्रकाश |
| राजा राममोहन राय | संवाद कौमुदी; ए गिफ्ट टू मोनोथिस्ट; प्रीसेप्ट्स ऑफ जीसस |
| ईश्वर चंद्र विद्यासागर | सोम प्रकाश |
| शचींद्रनाथ सान्याल | द रिवॉल्यूशनरी, बंदी जीवन |
| भारतेंदु हरिश्चंद्र | भारत दुर्दशा |
| लाला हरदयाल | हिंट्स फॉर सेल्फ कलर |
| मदन मोहन मालवीय | हिंदुस्तान, लीडर, अभ्युदय |
| सुरेंद्रनाथ बनर्जी | बंगाली, ए नेशन इन मेकिंग |
| राजेंद्र प्रसाद | इंडिया डिवाइडेड |
| अबुल कलाम आजाद | इंडिया विंस फ्रीडम, अल हिलाल |
| मैथिलीशरण गुप्त | भारत भारती |
| पट्टाभि सीतारमैया | कांग्रेस का इतिहास |
| राम मनोहर लोहिया | द व्हील ऑफ हिस्ट्री |
| गोपाल बाबा वलंगकर | विटाल विध्वंसक |
| सखाराम गणेश देउस्कर | देशेर कथा |
| रफीक जकारिया | द मैन हू डिवाइडेड इंडिया |
| वैलेंटाइन शिरोल | इंडियन अनरेस्ट |

**भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नारे एवं उनके प्रतिपादक**

| नारा | प्रतिपादक |
|---|---|
| सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है | रामप्रसाद बिस्मिल |
| इंकलाब जिंदाबाद | भगत सिंह |
| सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा | इकबाल |
| हिंदी, हिंदू, हिंदुस्तान | भारतेंदु हरिश्चंद्र |
| दिल्ली चलो, जय हिंद, तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा | सुभाष चंद्र बोस |
| समूचा भारत एक विशाल बंदीगृह है | सी आर दास |

| | |
|---|---|
| करो या मरो, हे राम | महात्मा गांधी |
| हू लिव्स इफ इंडिया डाइज, आराम हराम है, पूर्ण स्वराज | जवाहरलाल नेहरू |
| स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है | बाल गंगाधर तिलक |
| वेदों की ओर लौटो | दयानंद सरस्वती |
| वंदे मातरम् | बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय |
| जय जवान, जय किसान | लाल बहादुर शास्त्री |
| भारत छोड़ो | युसूफ मेहर अली |

**प्रमुख व्यक्तियों की उपाधियाँ**

| प्राप्तकर्ता | उपाधि | उपाधि देने वाला |
|---|---|---|
| रवीन्द्रनाथ टैगोर | गुरुदेव | महात्मा गांधी |
| महात्मा गांधी | राष्ट्रपिता | सुभाष चंद्र बोस |
| सुभाष चंद्र बोस | नेताजी | एडोल्फ हिटलर |
| वल्लभभाई पटेल | सरदार | बारदोली की महिलाएं |
| डॉ. राजेंद्र प्रसाद | देशरत्न/अजातशत्रु | महात्मा गांधी |
| राजा राममोहन राय | राजा | महाराजा खेतड़ी |
| सरोजिनी नायडू | भारत कोकिला | महात्मा गांधी द्वारा |